दो घंटे में कुरआन

डॉ. बिल वार्नर

सीएसपीआई द्वारा प्रकाशित

www.cspipublishing.com

2010

इस्लाम की समझ श्रृंखला

दो घंटे में कुरआन

बिल वार्नर, संपादक

कॉपीराइट © 2010

ISBN13 978.1.936659.02.9

सर्वाधिकार सुरक्षित

वी 12.31.10

सीएसपीआई द्वारा प्रकाशित

WWW.CSPIPUBLISHING.COM

संयुक्त राज्य अमेरिका में मुद्रित

अध्याय 1

कुरआन निश्चित ही विश्व की उन पुस्तकों में होगी, जिसे बहुत कम लोगों ने पढ़ा है और नाममात्र के लोगों ने समझा है। चूंकि कुरआन में अध्याय समय के अनुसार नहीं, अपितु विस्तार के आधार पर दिये गये हैं, इसलिये इसमें कालक्रम नहीं है। कुरआन में सबकुछ मनमर्जी से लिखा गया है और वास्तविकता छिपाने के लिये मूलकथा को लीप-पोत दिया गया है। पुस्तक विक्रय केंद्रों पर उपलब्ध कुरआन में तो ऐसा ही मिलता है।

किसी पेशेवर गेम को देखने में जितना समय लगता है, उससे भी कम समय में अब आप कुरआन की प्रकृति समझ सकते हैं। इसलिये इस पुस्तक का नामः दो घंटे में कुरआन रखा गया है। यह पुस्तक पूरी कुरआन नहीं है, पर इसको पढ़ने के बाद आप पुस्तक केंद्रों से ''वास्तविक'' कुरआन चुनने और इसे समझने योग्य हो जाएंगे।

काफिर

इस्लाम के बारे में जानने का प्रथम चरण इसके शब्दों की सही परिभाषा जानना है। इस्लाम की भाषा द्विअर्थी है। इसमें मानवता का विभाजन मोमिन और काफिर के रूप में है। मानवता उनमें विभाजित है, जो या तो मुहम्मद को अल्लाह का रसूल मानते हैं, या तो वो जो ऐसा नहीं मानते हैं।

काफिर वह शब्द है, जो कुरआन गैर-मुसलमानों के लिये प्रयोग करती है। इसका सामान्यतः अनुवाद विश्वास न करने वाला लगाया जाता है, परंतु यह अनुवाद गलत है। शब्द 'विश्वास न करने वाला' तटस्थ है। जैसा कि आप देखेंगे कि गैर-मुसलमानों के प्रति कुरआन की दृष्टि अत्यंत नकारात्मक है। कुरआन काफिर की परिभाषा निम्न ढंग से करती हैः

काफिर घृणित है-

> 40:35 वे [काफिर] जो अल्लाह के चिह्न [कुरआन की आयतों] को मानने से मना करते हैं बिना किसी ऐसे प्रमाण के, जो उनके पास आया हो। ऐसे लोग अल्लाह के लिये और मुसलमानों के लिये घृणित हैं। इसलिये अल्लाह प्रत्येक अहंकारी के हृदय को बंद कर देता है।

काफिर का सिर काटा जा सकता है-

> 47:4 जब जंग के मैदान में तुम्हारा काफिरों से सामना हो, तो जब तक उनको पूर्णतः पराजित न कर दो, उनकी गरदनें उतारो और इसके बाद उन्हें बंदी बना लो और उन्हें दृढ़ता से बांध दो।

काफिर के विरुद्ध षडयंत्र किया जा सकता है-

> 86:15 वे तुम्हारे [मोहम्मद], विरुद्ध षडयंत्र करते हैं, योजनाएं बनाते हैं, और मैं उनके विरुद्ध षडयंत्र करता हूं, योजनाएं बनाता हूं। इसलिये काफिरों से धैर्यपूर्वक निपटो और उन्हें कुछ समय के लिये अकेला छोड़ दो।

काफिर को आतंकित किया जा सकता है-

8:12 तब तुम्हारे स्वामी ने अपने दूतों से बात की और बोला, ''मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। मोमिनों को बल दो। मैं काफिरों के मन में भय उत्पन्न कर दूंगा, उनके सिर काट दूंगा और उनकी उंगलियां तक छपक दूंगा!''

काफिर से जंग किया जा सकता है और उसे अपमानित किया जा सकता है-

9:29 उनसे जंग करो, जिन्हें ग्रंथ मिले हैं [अर्थात यहूदी और ईसाई], पर वे अल्लाह या प्रलय (कयामत) के दिन में विश्वास नहीं करते। वे उसे हराम (वर्जित) नहीं मानते, जो अल्लाह और उसके रसूल ने हराम किया है। ईसाई और यहूदी सत्य का धर्म नहीं मानते हैं। उनसे तब तक जंग करते रहो, जब तक कि वे पराजय स्वीकार न कर लें, जजिया कर न दें तथा अपमानित न हो जाएं।

मुसलमान किसी काफिर का मित्र नहीं होता है-

3:28 मुसलमानों को चाहिए कि वे मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों को अपना मित्र न बनायें। जो ऐसा करेगा, उसे अल्लाह से किसी प्रकार का कोई संरक्षण नहीं मिलेगा और वही उनके साथ रहेंगे। अल्लाह तुम्हें चेतावनी देता है कि अल्लाह से डरो, क्योंकि सबकुछ अल्लाह के पास ही लौटकर जाना है।

काफिर अभिशप्त होता है-

33:60 वे ख्काफिर, अभिशप्त होंगे, और जहां कहीं भी वे मिलेंगे, उनकी घेराबंदी और हत्या की जाएगी। जो मुसलमानों के सामने आएगा, उसके साथ अल्लाह का यही व्यवहार होगा और तुम अल्लाह के इस व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे।

इस्लाम में ईसाई और यहूदी काफिर होते हैं और उन्हें ''ग्रंथों के लोग'' कहा जाता है, जबकि हिंदुओं को मूर्तिपूजक (मुश्रिक) और बहुदेववादी कहा जाता है। काफिर, ग्रंथ के लोग और बहुदेववादी धार्मिक शब्द हैं। ''काफिर'' शब्द ही दर्शाता है कि ईसाई, यहूदी, हिंदू, बौद्ध, जीववादी, नास्तिक और मानववादी के साथ कैसा राजनीतिक व्यवहार होगा। जो एक मूर्तिपूजक के साथ किया जा सकता है, वही किसी ईसाई, नास्तिक या अन्य काफिरों के साथ भी किया जा सकता है।

इस पुस्तक में ''इस्लाम को न मानने वाले'', ''गैरमुसलमान अथवा ''इस्लाम पर विश्वास न करने वालों'' के स्थान पर काफिर शब्द का प्रयोग किया जाएगा। ''इस्लाम को न मानने वाले अथवा गैरमुसलमान तटस्थ शब्दावली है, किंतु काफिर तटस्थ शब्द नहीं है। अपितु काफिर शब्द मनुष्यता को हीन बनाने की परिभाषा देता है, इसलिये यह शब्द धर्मांध व पक्षपातपूर्ण है।

इस्लाम पर तीन दृष्टिकोण

इस्लाम को देखने के लिये तीन विचार हैं। आपका दृष्टिकोण इस निर्भर करता है कि आप मुहम्मद के बारे में क्या मानते हैं। यदि आप मानते हैं कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल था, तो आप मोमिन हैं। यदि आप मुहम्मद को रसूल नहीं मानते हैं, तो काफिर हैं। तीसरा दृष्टिकोण वह है, जो इस्लाम के समर्थक का होता है।

इस्लाम के समर्थक भले ही यह नहीं मानते कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल था, परंतु वे मुसलमानों को अप्रसन्न करने वाली कोई बात कभी नहीं कहते हैं। वे कभी इस्लाम पर प्रहार नहीं करते हैं और इस्लाम की आलोचना वाले किसी विश्लेषण की निंदा करते हैं।

आइए, इन तीनों दृष्टिकोणों को उदाहरण सहित समझें।

मदीना में मुहम्मद अपनी 12 वर्षीय बीवी के साथ बैठकर पूरे दिन 800 यहूदियों की गरदनें उतरते हुए देखता रहा।[1] इन यहूदियों के सिर इसलिये काट दिये गये थे, क्योंकि इन्होंने कहा था कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल नहीं है। मुसलमान इन हत्याओं का समर्थन करते हुए इसे आवश्यक मानते हैं, क्योंकि मुहम्मद की पैगम्बरी को अस्वीकार करना इस्लाम के विरुद्ध अपराध है। इस अपराध के सिर काट लेने का दंड अल्लाह द्वारा निश्चित किया गया है।

काफिर इस घटना को इस्लाम की जिहादी हिंसा के प्रमाण और बुरे कार्य के रूप में देखते हैं। वे इसे नृजातीय नरसंहार कहते हैं।

इस्लामी समर्थक कहते हैं कि यह एक ऐतिहासिक घटना थी और अतीत में सभी सभ्यताओं में हिंसा थी, इसलिये इस पर कोई एक मत नहीं बनाना चाहिए।

विभिन्न दृष्टिकोणों के अनुसार उन 800 यहूदियों की हत्या या तो बुरा काम था, अथवा पूर्णतः ईश्वरीय कार्य था या मात्र एक ऐतिहासिक घटना थी। इन तीनों दृष्टिकोणों में से जो चाहें मान लीजिये।

यह पुस्तक काफिर के दृष्टिकोण से लिखी गयी है, इसलिये यह काफिर-केंद्रित है। इस पुस्तक में जो दिया गया है, उसका उद्देश्य यह है कि काफिर, गैरमुसलमान का जीवन इस्लाम से कैसे प्रभावित होता है। इसका एक अर्थ यह भी है कि इस धर्म का महत्व बहुत कम है। केवल एक मुसलमान ही इस्लाम धर्म के बारे में सोचता है, किंतु इस्लाम के राजनीतिक विचारों का प्रभाव सभी काफिरों पर पड़ता है।

यह ध्यान दीजिए कि यहां कुछ सही या गलत नहीं है, ये बस ऐसे विभिन्न मत हैं, जिनमें सामंजस्य नहीं हो सकता है। काफिर और मुसलमान के बीच कोई मेल-मिलाप संभव नहीं है। इस्लाम के समर्थक इन दोनों के बीच समझौते का सेतु बनाने का प्रयास करते हैं, किंतु तार्किक ढंग से यह संभव नहीं है।

कुरआन क्या है?

इस्लाम के अनुसार, कुरआन में ब्रह्मांड के एकमात्र ईश्वर अल्लाह द्वारा कहे गये अक्षरश: शब्द हैं। यह पूर्ण, समग्र, शाश्वत और सार्वभौमिक है। यह अस्पष्ट भी है। मुहम्मद की मृत्यु के लगभग 20 वर्ष पश्चात खलीफा उस्मान ने वर्तमान कुरआन का निर्माण किया और इसके बाद उसने सारे कुरआन वापस ले लिये और सबको जला दिया। उस्मान ने जिस कुरआन का निर्माण किया था, वह मुहम्मद का ऐतिहासिक कुरआन नहीं था। ऐतिहासिक कुरआन में जैसे-जैसे मुहम्मद के जीवन की घटनाएं आयीं, उसी क्रम में प्रत्येक अध्याय थे। ऐतिहासिक कुरआन समझने में सरल थी। यदि कुरआन अपने मूल ऐतिहासिक रूप में पुनर्निमित की जाती, तो उसे कोई भी समझ सकता था।

[1] द लाइफ ऑफ मुहम्मद, ए. गिलौम, ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, 1982, पृष्ठ-464

कुरआन को समझने में कठिनाई

1. इसमें सबसे लंबा अध्याय सबसे पहले और सबसे छोटा सबसे बाद में है। इससे कुरआन की कहानी नष्ट हो गयी।
2. प्रत्येक अध्याय में विषयों की व्यूह रचना अविश्वसनीय है।
3. इसमें दोहराव बहुत है। मूसा की कहानी 39 बार है।
4. बहुत सी आयतों का कोई प्रसंग नहीं है। इससे बहुत अस्पष्टता आती है।
5. इसमें विरोधाभास है।

कुलमिलाकर बात यह है कि यह कुरआन भ्रम उत्पन्न करने वाला, विरोधाभासी, अर्थहीन है और विचित्र, हिंसक, धमकाने वाला व अप्रिय है। इसे समझना और पढ़ना कठिन है।

सारांश

कुरआन को निम्न उपाय करके समझने योग्य बनाया जा सकता हैः

कालक्रम- आयतों को मूल ऐतिहासिक क्रम में रखकर।

- श्रेणीबद्धता- समान विषयों पर आयतों के समूह को एकत्र करने की पद्धति।
- संदर्भः मुहम्मद के जीवन को आयतों की परिस्थितियां व परिवेश का वर्णन करने के लिये उपयोग करना।

मुहम्मद का जीवन इब्न इस्हाक द्वारा लिखित **''सीरत रसूल अल्लाह''** आधिकारिक जीवनवृत्त से ज्ञात है। सीरत को सीरा कहा जाता है। सीरा कुरआन की आयतों से जोड़ा गया है। इससे मुहम्मद के दिनों के मूल ऐतिहासिक कुरआन पुनः प्राप्त हो जाता है। इस कुरआन को पढ़ने के बाद आप ''वास्तविक'' कुरआन को चुन पायेंगे और यह कुरआन समझना सरल होगा।

संदर्भ संख्याएं

इस पुस्तक में दी गयी सूचनाएं अग्रलिखित स्रोत की संदर्भ संख्या में पायी जा सकती हैः 1234 इब्न इस्हाक के सीरत रसूल अल्लाह का संदर्भ है। इब्न इस्हाक की इस पुस्तक का अनुवाद द लाइफ ऑफ मुहम्मद नाम से ए. गिलौमे द्वारा किया गया है। यह उपांत (हाशिया) नोट 234 का संदर्भ है। 12:45 कुरआन का अध्याय (सूरा) 12, आयत 45 है।

अध्याय 2

4:13 *अल्लाह द्वारा ये सीमाएं निश्चित की गयीं। जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं, वे सीधे सदा जन्नत के उन बागों में रहने के लिये भेजे जाएंगे, जो प्रवाहमयी नदियों द्वारा सिंचित होते हैं। यह परम पुरस्कार है!*

टिप्पणी

जब कुरआन में मुहम्मद का जीवन जोड़ा जाता है, तो यह उसकी आयतों को संदर्भ व अर्थ देता है। कुरआन 91 बार मुसलमानों से कहती है कि मुहम्मद के जैसा बनें। यही कारण है कि कुरआन का प्रत्येक अध्याय आरंभ में संसार को यह स्मरण करता है कि मुहम्मद के बिना कुरआन का कोई अर्थ नहीं है।

रसूल

I152: चालीस वर्ष की अवस्था में मुहम्मद सपने देखने लगा और विचित्र आवाजें सुनने लगा। उसने कहा कि फरिश्ता जिबराइल उसके पास बेल-बूटादार कपड़ा लेकर आया, जिस पर कुछ लिखा था और उसे वह पढ़ने का आदेश दिया। फरिश्ते ने कहाः

96:1 *पढ़ः अपने स्वामी के नाम में, जिसने रक्त के थक्के से मनुष्य बनाया।*

96:3 *पढ़ः तेरा स्वामी अत्यंत उदार है, जिसने लेखनी का प्रयोग सिखाया और मनुष्य को वह सिखाया, जो वह नहीं जानता था।*

मुहम्मद नींद से जागा। वह विक्षिप्तों से घृणा करता था, पर उसे लगता था कि वह स्वयं पागल है। उसने एक टीले से कूदकर प्राण दे देना चाहा। टीले पर आधी दूरी चढ़ा था कि उसने सुना, ''मुहम्मद, तू अल्लाह का रसूल है और मैं जिबराइल हूं।'' तब मुहम्मद वह प्राप्त करने लगा, जिसे वह अल्लाह का संदेश कहता था, जैसे किः

97:1 *निश्चित ही, हमने इसे [कुरआन] 'लैलतुल कद्र' (उस पवित्र रात) को उतारा और तुम्हें कौन बतायेगा कि लैलतुल कद्र क्या है? यह रात 1 हजार मासों से श्रेष्ठ है। अपने अल्लाह की अनुमति से उस रात फरिश्ते और वह आत्मा (जिबराइल) उतरे, प्रत्येक कर्तव्य को पूरा करने और वह रात भोर होने तक शांति की रात है।*

55:1 *दयावान अल्लाह ने कुरआन बतायी, मानव की रचना की और उसे बोलना सिखाया। सूर्य और चंद्रमा अपने निश्चित चाल का पालन करते हैं, और तारे और वृक्ष उसकी स्तुति में झुकते हैं। उसने आकाश को ऊपर उठाया और न्याय का संतुलन स्थापित किया, जिससे कि तुम अपनी सीमाएं न लाघों। उचित ढंग से तोलो, और न्याय के तोलन पर कम या अधिक न तौलो।*

55:10 *उसने अपनी रचनाओं के लिये धरती बनायी। इस पर फल, मेवे और खजूर हैं और भूसे वाले अन्न व सुगंधित पुष्प हैं। तुम अपने अल्लाह के किस-किस उपकार को झुठलाओगे?*

55:14 *उसने एक कुम्हार की भांति मिट्टी से मनुष्य बनाये, और उसने धुआंरहित आग से जिन्न[2] की रचना की। तुम अपने अल्लाह के किस-किस उपकार को झुठलाओगे?*

55:17 *वह पूर्व का स्वामी है। वह पश्चिम का स्वामी है। तुम अपने अल्लाह के किस-किस उपकार को झुठलाओगे?*

पहला धर्मांतरित

I156: मुहम्मद की बीवी खदीजा पहली मुसलमान बनी। आरंभ से ही उसने उसे प्रोत्साहित किया, उस पर विश्वास किया। उसने यह नहीं सोचा कि उसे छला गया है अथवा मुहम्मद विक्षिप्त है। शीघ्र ही मुहम्मद को विचित्र आवाजें मिलनी और दृश्य दिखने बंद हो गये। तब वह अवसाद में चला गया और परित्यक्त अनुभव करने लगा। इसके बाद उसे पुनः विचित्र दृश्य दिखने लगे और स्वर सुनायी दिया:

93:1 *शपथ है इस चढ़े दिन की और शपथ है इस घुप्प अंधियारी रात की, तेरा अल्लाह तुझे भूला नहीं है, और न ही वह तुझसे दूर हुआ है।*

93:4 *निश्चित रूप से भविष्य अतीत से श्रेष्ठ होगा और अंत में तेरा अल्लाह तेरे प्रति उदार होगा, और तू संतुष्ट होगा। क्या उसने तुझे अनाथ पाकर घर नहीं दिया? क्या उसने तुझे निर्धन पाकर धनी नहीं कर दिया?*

मुहम्मद ने अपने निकट के लोगों से अपने स्वप्न की बातों को बताना प्रारंभ किया।

1:1 करुणावान, दयावान अल्लाह के नाम में।

1:2 *अल्लाह की महिमा अपरंपार, संसार का स्वामी। करुणावान, दयावान और प्रलय के दिन का सुल्तान।*

1:5 *सब तू ही करता है, हम तेरी इबादत करते हैं, और तू ही खड़ा होता है जब हम सहायता मांगते हैं। हमें सीधे व सुपथ के मार्ग पर रख। वह सुपथ, जो तुझे प्रिय है; उनका [यहूदी पथ] नहीं जो तुझे क्रोधित करता है और न ही उनका [ईसाई] पथ जो पथभ्रष्ट करता है ।*

107:1 *तुम उनके बारे में क्या सोचते हो, जो हमारे धर्म को झूठ मानते हैं, जो यह मानते हैं कि दूसरे लोग अनाथ का लालन-पालन करेंगे और जो दूसरे लोगों को निर्धनों का पेट भरने को प्रोत्साहित नहीं करते हैं? उन्हें बुरा समझो, जो प्रार्थना तो करते हैं, किंतु उनकी प्रार्थना झूठी होती है और जो समर्पण तो दिखाते हैं, पर अभावग्रस्त की सहायता करने से मना करते हैं।*

70:22 *और जो नियमित नमाज पढ़ते हैं और जिसके धन का एक भाग अभावग्रस्तों व वंचितों के लिये होता है, और जो प्रलय (कयामत) के दिन में विश्वास करते हैं, और जो अल्लाह के दंड से डरते हैं- क्योंकि अल्लाह के दंड से कोई नहीं बच सकता है- और वो जो अपनी यौनेच्छा को नियंत्रित करते हैं (अपनी बीवियों और सेक्स-स्लेव को छोड़कर, क्योंकि इनके साथ यौनसंबंध बनाना अनुचित नहीं है; किंतु जो भी इसके अतिरिक्त वासना में लिप्त होता है, वह अवज्ञाकारी है), और जो अपनी*

[2] इस्लाम के पास जिन्न नामक रूहों (आत्माओं) का समूचा संसार है। वे मानवों पर अच्छा या बुरा प्रभाव डाल सकते हैं।

बातों व वचन को पूरा करते हैं, और जो सत्य बोलते हैं, और जो अपनी नमाज पर ध्यान देते हैं। ऐसे लोग जन्नत के बागों में सम्मान के साथ रहेंगे।

92:5 *वह जिसने जकात दिया और अल्लाह से डरता है, तथा भलाई स्वीकार करता है, उसके लिये हम आनंद के पथ पर जाना सरल बना देंगे। किंतु जो लालची है और जिसे नहीं लगता कि उसे अल्लाह की सहायता की आवश्यकता है और भलाई को झूठ बताता है, उसके मार्ग को हम कठिन बना देंगे। और जब वह मरेगा, तो उसका धन भला किस काम आएगा?*

92:12 *निश्चित ही यह हमारे ऊपर है कि हम मनुष्य को मार्ग दिखायें और निश्चित ही अतीत और भविष्य हमारा है। इसलिये मैं तुम्हें जन्नत की भड़कती आग से आगाह करता हूं। जिसने सत्य (इस्लाम) को झूठ बताया और मुंह फेर लिया, वही सर्वाधिक अभागे ही इसमें झोंके जाएंगे।*

92:17 *जो अल्लाह से डरते हैं, वो इससे बच जाएंगे और ऐसे ही जो अपना धन देते हैं, जिससे कि वे शुद्ध हो जाएं; और जो मुक्त हस्त से बिना किसी पुरस्कार की आशा में देता है, केवल सबसे महान अपने अल्लाह का आनंद प्राप्त करने के लिये, वह अंत में संतुष्ट होगा।*

मक्का के कुरआन में लिये जाने वाले अनेक शपथ दिये गये हैं।

95:1 *मैं कसम खाता हूं इंजीर और जैतून की, तूरे सीनीन (पहाड़ी सीनै) की, और इस अक्षत भूमि (मक्का) की! हमने प्रतिष्ठित छवि के रूप में मनुष्य की रचना की और फिर उसे सबसे नीचे गिरा दिया, केवल उन्हें छोड़कर जो विश्वास लाये और सही काम किये, क्योंकि उनको मिलने वाला प्रतिफल कभी समाप्त नहीं होगा।*

95:7 *तब (तुम मानव जाति) प्रलय (कयामत) के दिन को क्यों झुठलाते हो? क्या अल्लाह सब निर्णयकर्ताओं में सर्वोत्तम नहीं है?*

86:1 *शपथ है आकाश और प्रातः काल निकलने वाले सूरज की! तुम्हें कौन बताएगा कि प्रातः निकलने वाला तारा क्या है? और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है? प्रत्येक रूह (आत्मा) पर एक रक्षक है।*

86:11 *शपथ है आकाश की, जो अपना चक्र पूरा करता है और धरती की, जो नये सृजन के लिये फटती है, कि यह [कुरआन] अंतिम संदेश है और यह कोई मनोरंजन नहीं है।*

इबादत

मुहम्मद, उसकी बीवी और भतीजा अली ने काबा में अपनी नयी मजहबी क्रियाकलाप के साथ इबादत की और नमाज पढ़ी। एक आगंतुक ने इस नये मजहबी क्रियाकलाप के बारे में पूछा, तो उसे बताया गया कि यह एक नया मजहब है।

73:1 *तुम (मुहम्मद) अपने लबादे में ढंके, आधी रात में जगे, कम या अधिक, इबादत करने और कुरआन पढ़ने के लिये, क्योंकि हमने एक बड़ा संदेश भेजा है। निश्चित ही रात का आना वह समय है, जब साये गहरा जाते हैं और स्वर निश्चित हो जाते हैं। निश्चित रूप से दिन का समय कुछ निश्चित काम करने के लिये होता है।*

73:8 *अपने अल्लाह का नाम स्मरण करो, और उसके प्रति स्वयं को समर्पित करो। पूर्व का स्वामी, पश्चिम का स्वामी, अल्लाह के अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है। उसे अपना संरक्षक बनाओ।*

मक्का

मुहम्मद मक्का में रहता था। मक्का पीढ़ियों से एक धार्मिक केंद्र था। यहां एक पत्थर का भवन था, जिसका आकार चौकोर था और इसे काबा कहा जाता था। मक्का के इस काबा में अन्य देवताओं में से एक देवता अल्लाह भी था। वहां के मूल धर्म में इन बहुत से देवताओं का कोई औपचारिक आकार नहीं था, किंतु अल्लाह बड़ा देवता था। अल्लाह मूलतः मुहम्मद की कुरैश जनजाति का देवता था। मुहम्मद ने यहूदियों की परंपरा अपनाते हुए स्वयं को रसूल घोषित कर दिया। कुरआन में आरंभिक यहूदी पैगम्बरों की कुछ कहानियों को यथावत पुनः बताया गया, यद्यपि इन कहानियों में थोड़ी हेरफेर या भिन्नता कर दी गयी।

अब्राहम

51:24-29 *क्या तूने अब्राहम के प्रतिष्ठित अतिथियों की कहानियां सुनी हैं? वे उसके घर गये और बोले, ''सलाम!'', तो उसने उत्तर दिया, ''सलाम, अपरिचितों।'' वह उनके पास एक मोटा-ताजा गाय का बछड़ा ले आया। उसने उस बछड़े को उनके सामने रखा और बोला, ''क्या आप लोग खाएंगे?'' उन्होंने नहीं खाया, तो वह (अब्राहम) उन लोगों से भयभीत हो गया। उन लोगों ने उससे कहा, ''भयभीत मत हो'' और बताया कि वह एक बुद्धिमान बेटे का पिता बनने जा रहा है। अब्राहम की पत्नी चीखते हुए, अपना माथा पीटते हुए सामने आयी और बोली, ''किंतु मैं तो बांझ बुढ़िया हूं!''*

51:30 *उन्होंने कहा, ''तेरे स्वामी ने कहा है यह सत्य है, और वह गुणी एवं सबकुछ जानने वाला है।''*

51:31 *अब्राहम बोला, ''हे संदेशवाहकों, आप लोगों का अभियान क्या है?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''हम दुष्ट लोगों की ओर भेजे गये हैं, जिससे कि उन पर पत्थर की कंकरी बरसा सकें। हम उनकी अति समाप्त करने के लिये तुम्हारे स्वामी द्वारा भेजे गये हैं।''*

51:35 *हम नगर में मोमिनों को सुरक्षित निकालने के लिये गये, किंतु हमने केवल एक मुसलमान परिवार पाया, और हमने उन लोगों के लिये चेतावनी का चिह्न वहां छोड़ दिया, जो पीड़ादायी दंड से डरते हैं। मूसा एक और चिह्न था। हमने प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ उसको फिरऔन के पास भेजा। पर फिरऔन को अपनी ताकत का अंहकार था, तो उसने मुंह फेर लिया और बोला, ''तुम या तो जादूगर हो, अथवा विक्षिप्त।'' इसलिये हमने उसे और उसकी सेना को पकड़ लिया तथा सागर में फेंक दिया, तथा इसके लिये वह स्वयं उत्तरदायी था।*

मूसा

79:15 *क्या तूने मूसा की कहानी सुनी है? कैसे उसके स्वामी ने उसे पवित्र तुवा की पवित्र घाटी में पुकारा, ''फिरऔन के पास जाओ। वह विद्रोही हो गया है। उससे कहो, 'क्या तुम शुद्ध होना चाहोगे? तो मैं तुम्हें तुम्हारे स्वामी तक जाने का मार्ग दिखाऊं, जिससे कि तू उससे डर।''*

79:20 *और मूसा ने फिरऔन को बड़ा चमत्कार दिखाया। पर फिरऔन ने झुठला दिया और बात न मानी। इसके अतिरिक्त, उसने मुंह फेर लिया और अल्लाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उसने अपनी सेना एकत्र की और यह कहते हुए घोषणा की, 'मैं तुम्हारा स्वामी हूं, सबसे बड़ा।'' इसलिये अल्लाह ने उसे इस संसार में और इस संसार के बाद भी दंड दिया और उसके जीवन से एक सीख दिया। निश्चित ही, जो अल्लाह से डरते हैं, उनके लिये यह एक सीख है।*

कुरआन ने ईसाइयों के प्रलय (कयामत) के दिन को अपने में समाहित करती है।

88:1 *क्या तुझे छा जाने वाली घटना (कयामत) का समाचार मिला?*

88:2 *उस दिन कितने मुख सहमे होंगे, कष्ट और थकान से भरे होंगे, दहकती आग में जलेंगे, बलपूर्वक खौलते हुए सोते का जल पिलाये जाएंगे, उनके लिये कटीली झाड़ के अतिरिक्त कोई भोजन सामग्री नहीं होगी, जो न पोशण करेगी और न ही भूख शांत करेगी।*

88.8 *उस कितने सारे मुख आनंद से भरे होंगे, और ऊंचे जन्नत में होंगे, अपने अतीत के कार्यों से प्रसन्न होंगे। वहां कोई व्यर्थ की बात नहीं होगी। बहता सोता (दरिया) होगा। ऊंचे-ऊंचे सिंहासन होंगे, और उनके निकट प्याले रखे होंगे, और गलीचे लगे होंगे, मखमली कालीनें बिछी होंगी।*

88:17 *क्या वे ऊंटों को नहीं देखते कि वे कैसे उत्पन्न किये गये हैं? अथवा यह नहीं देखते कि किस प्रकार आकाश को ऊंचा किया गया है, और कैसे पहाड़ गाड़े गये हैं, और कैसे धरती पसारी गयी है?*

88:21 *उन्हें आगाह कर, क्योंकि तू [मुहम्मद] केवल आगाह करने वाला है। तेरा उन पर कोई वश नहीं है, पर जो भी इस्लाम से मुंह फेरेगा और विश्वास नहीं लायेगा, उसे अल्लाह भयानक दंड देगा।*

88:25 *निश्चित ही उन्हें हमारे ही पास वापस आना है। तब हमारे पास ही वह समय होगा कि उनका लेखा-जोखा लें।*

कुरआन की सर्वाधिक चित्रात्मक भाषा स्वर्ग (जन्नत) और नर्क (जहन्नुम) में मिलती है।

56:10 *धरती पर जो अग्रगामी थे [अर्थात जिन्होंने पहले मुहम्मद का अनुसरण किया], वो इस संसार के बाद भी अग्रगामी ही रहेंगे। जो आगे रहे, वे वाले लोग हैं जो अल्लाह के समीप होंगे, आनंद के जन्नत में। उनमें से कुछ जो बाद में रहे [इस्लाम के ठीक से स्थापित हो जाने के बाद], वे अलंकृत सिंहासनों पर होंगे, उन पर एक-दूसरे के सामने मसनद लगाकर आनंद में विश्राम करते हुए। उनकी सेवा के लिये युवा लड़के होंगे, जो सदा बालक ही बने रहेंगे। ये लड़के ऐसी शुद्ध शराब की सुराहियां व प्याले लेकर फिरते रहेंगे, जिसे पीने से न तो सिर में पीड़ा होगी और न ही सिर चकरायेगा, और जो फल वो चाहेंगे, जिस पक्षी का मांस वो चाहेंगे, तुरंत मिलेगा। अतीत के अच्छे कार्यों के लिये, उन्हें हूरें [मौज-मस्ती के लिये जन्नत की सुंदरियां] मिलेंगी, जिनकी ऐसी बड़ी-बड़ी आंखें होंगी, मानों छिपाकर रखी गयी मोतियां। वे कोई व्यर्थ या पाप की बात नहीं सुनेंगे, केवल आवाज आयेगी, ''सलाम! सलाम!''*

56:27 *दायें वाले लोग- अहा! दाये वाले लोग कितने प्रसन्न होंगे, वे बिना कांटे वाले बेर के बागों और केले के बाग के बीच ऊंचे सिंहासन पर आराम कर रहे होंगे, जो फलों से लदे होंगे, और उनकी छाया में निरंतर बहती नदियां और प्रचुर फल होंगे, जो कभी न रोके जाएंगे, और न ही उनकी पहुंच से बाहर होंगे। और हमने दाहिने हाथ के उन लोगों के लिये विशेष रूप से*

हूरें बनायी हैं, वो हूरें जो सहचरी होंगी, जो पवित्र और विशुद्ध कुंवारी होंगी, माशूका होंगी, उनके साथ सम आयु की उनकी सखियां होंगी, इन दाहिने हाथ के लोगों में बहुत से पुरानी पीढ़ी के लोग होंगे और बहुत से बाद की पीढ़ियों के लोग।

56:41 *और बायें हाथ के लोग- आह, बायें हाथ के ये लोग कितने अभागे हैं, जो झुलसाने वाली हवाओं और गर्म पानी में पड़े होंगे, और ऐसे काले धुएं के साये में पड़े होंगे, न शीतल और न ही ताजी। वास्तव में उन्हें इससे पूर्व इस संसार में सांसारिक आनंद दिया गया था, पर वे भयानक पाप करते रहे और कहा करते थे, ''जब हम मर जाएंगे, तो अस्थियां और धूल रह जाएंगे, किसने देखा है कि हम पुनः जीवित होंगे? हमारे पूर्वजों, पुराने लोगों का क्या?''*

56:49 *उनसे कहः हां, अगले और पिछले। उस निर्धारित समय पर सब एकत्रित किये जाएंगे।*

56:51 *तब जिन्होंने इससे अस्वीकार किया था [कि मुहम्मद रसूल था] और निश्चित ही जक़्क़ूम के पेड़ (जहन्नुम का पेड़) से खाने की भूल की थी, और वे इसी से अपना पेट भरेंगे। इसके बाद वे खौलता पानी पियेंगे और एक प्यासे ऊंट के भांति पियेंगे। प्रलय (कयामत) के दिन उनका यही भोजन होगा!*

18:29 *उनसे कहः यही सत्य है तेरे स्वामी की ओर से। जो विश्वास (ईमान) लाना चाहें, उन्हें लाने दे (अर्थात इस्लाम में विश्वास करने दे)। जो काफिर बनना चाहें, उन्हें काफिर बनने दे। हमने काफिरों के लिये ऐसी आग तैयार की है, जो एक टेंट की दीवार और छत की भांति है। वे इसमें घिर जाएंगे। यदि वे बचाने की गुहार करेंगे, तो उन्हें तेल की तलछट के जैसे पानी दिया जाएगा, जो उनके मुख को भून देगा। कितना भयानक पेय और कितना भयानक विश्राम स्थल!*

40:70 *कुरआन और इसका संदेश जो हमने अपने पैगम्बरों के साथ भेजा है, उसे जो अस्वीकार करते हैं वे शीघ्र ही सत्य जान जाएंगे। जब उनके गले सीकड़ और जुओं से जकड़ा जाएगा, वे खौलते पानी में डाले जाएंगे, और इसके बाद आग में झोंके जाएंगे, जलाये जाएंगे। तब उनसे यह कहा जाएगा, ''कहां हैं वो, जिन्हें अल्लाह के बराबर माना था?''*

I161 जो भी मुहम्मद के संदेशों को अस्वीकार करता है, वह अनंत काल तक नर्क में दंडित किया जाएगा। मक्का में धार्मिक सहिष्णुता की संस्कृति अब एक नया मजहब बन चुका था, जिसमें सहिष्णुता के अंत का उपदेश दिया गया और इसमें केवल इस्लाम स्वीकार्य था।

I166 चूंकि संदेश आ चुका था, तो मुहम्मद ने सार्वजनिक रूप से अपने नये सिद्धांत को बताना प्रारंभ किया। सार्वजनिक रूप से कहने से पूर्व तीन वर्ष तक वह अपने सिद्धांत निजी स्थानों पर कहता था। अरब के लोग सदैव जिन्नों में विश्वास करते थे। वे मानते थे कि जिन्न वह अदृश्य ताकत है, जो आग से बना है। अब जिन्न कुरआन में भी आ गये।

114:1 *उनसे कहः मैं मनुष्यों के उस स्वामी अल्लाह से संरक्षण चाहता हूं, जो मनुष्यों का सुल्तान, मनुष्यों का निर्णयकर्ता है, और मैं सुरक्षा चाहता हूं भ्रम डालने वाले उस दुष्ट से, जो मनुष्यों के मन में जिन्न और मनुष्यों के विरुद्ध कहानियां भरता है।*

51:56 *मैंने जिन्न और मनुष्य बनाये, केवल अपनी इबादत के लिये। मुझे उनसे कोई जीविका नहीं चाहिए, और न चाहता हूं कि वे मुझे खिलायें। वास्तव में, अल्लाह ही जीविकादाता, ताकत रखने वाला और बलवान् है!*

मक्का में अन्य देवताओं पर प्रहार किया गया।

53:19 *क्या तुम लोगों ने देख लिया अल-लात और अल-उज़्ज़ा, तथा तीसरी मूर्ति मनात [अरब की देवियां] को? क्या? क्या तुम लोग चाहते हों कि तुम्हारे बेटे हों और अल्लाह की बेटियां [अरब के लोग इन तीनों को अल्लाह की बेटियां कहते थे] हों? यह तो अनुचित विभाजन है!*

53:23 *ये केवल नाम हैं। तुम और तुम्हारे पूर्वजों ने ये नाम दिये। अल्लाह ने कोई संस्तुति नहीं दी। भले ही, तुम्हारे स्वामी ने पहले ही उन्हें मार्ग दिखा दिया, किंतु वे केवल अपने अनुमान और मनमानी पर चल रहे हैं।*

मक्का में मुहम्मद का बीड़ा कठिन था।

52:29 *इसलिये, मनुष्यों को आगाह करते रहो। अपने अल्लाह की कृपा से, तुम न तो विक्षिप्त हो और न ही भविष्यवक्ता।*

52:30 *लोग क्या कहेंगे, ''वह एक कवि है! प्रतीक्षा करो, उसका भी दिन आएगा?'' उनसे कहाः ''प्रतीक्षा करो'', क्योंकि मैं भी तुम्हारे साथ ही उस दिन की प्रतीक्षा करूंगा।*

52:32 *क्या उनकी समझ उन्हें ये बातें सिखाती है? अथवा ऐसा इसलिये है, क्योंकि वे विकृत लोग हैं? क्या वे कहते हैं, ''उसने (मुहम्मद) इसे (कुरआन) स्वयं लिख लिया है?'' नहीं! वास्तव में वे विश्वास (ईमान) नहीं लाना चाहते हैं (अर्थात अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास नहीं लाना चाहते हैं)। यदि उनका कहना सत्य है, तो इसके जैसे कोई पुस्तक लिख लें न।*

मक्कावासियों ने कहा कि कोई कयामत का दिन नहीं होता। कुरआनः

83:1 *क्या! क्या उन्हें लगता है कि उस कयामत के दिन पुनर्जीवित नहीं किये जाएंगे, जब संसार के स्वामी अल्लाह के सामने सभी मनुष्य खड़े किये जाएंगे? हां! दुष्टों की पंजीयन पुस्तिका [कर्मों का लेखा-जोखा] सिज़्ज़ीन [जहन्नुम में एक स्थान, जहां गुनाहगारों का लेखा-जोखा रखा जाता है] में है। और तुम्हें कौन समझायेगा कि सिज़्ज़ीन क्या है? यह एक सम्पूर्ण लेखा-जोखा है।*

83:10 *उस दिन उनका विनाश होगा, जो हमारे चिह्नों को झुठलाते हैं, जो कयामत के दिन को झूठ बताते हैं! गुनाहगारों और अवज्ञाकारियों के अतिरिक्त कोई उसे नहीं झुठलाता है, जब उनके सामने हमारी आयतों को पढ़ा जाता है, तो कहते हैं, ''पूर्वजों की कपोलकल्पित कहानियां।'' सुनो! बुरे कर्मों के कारण उनका हृदय धूल के जैसे मैला हो गया है। हां, वे उस दिन अपने अल्लाह का दर्शन करने से रोक दिये जाएंगे। इसके बाद वे जहन्नुम में जलाये जाएंगे। इसके बाद उनसे कहा जाएगा, ''यही है न, जिसे तुम झूठ कह रहे थे।''*

83:18 सच यह है कि अच्छा कर्म करने वालों का लेखा-जोखा ''इल्लय्यीन'' [जन्नत में एक स्थान, जहां अच्छा कर्म करने वालों का लेखा-जोखा रखा जाता है]। और तुम्हें कौन बतायेगा कि इल्लय्यीन क्या है? यह ऐसा सम्पूर्ण लेखा-जोखा है, जिसे अल्लाह के समीप रहने वाले फरिश्तों द्वारा प्रमाणित किया गया है।

88:22 *निश्चित ही, विश्वास लाने वाले आनंद में होंगे! ऊंचे अलंकृत सिंहासनों पर बैठकर वे सबकुछ देख रहे होंगे। तुम उनके मुख पर आनंद देखोगे। उन्हें मस्क (कस्तूरी) से सुगंधित अच्छी शराब पीने को दी जाएगी। वे जिनकी इच्छाएं हैं, तसनीम के पानी में मिली हुई शराब की इच्छा करें, वह तसनीम जो ऐसा स्रोत है, जिससे अल्लाह के निकट के लोग पियेंगे।*

88:29 *पापी लोग मोमिनों पर हंसते थे और जब उन्हें आते-जाते देखते थे, तो कहते थे, ''ये ही भटके हुए लोग हैं।'' और तब भी उन्हें उन लोगों का अभिभावक बनने के लिये नहीं भेजा गया था।*

83:34 *उस दिन विश्वास (ईमान) वाले काफिरों पर हंसेंगे, जब विश्वास वाले सुंदर सिंहासन पर बैठे होंगे और उन्हें देखेंगे। क्या काफिरों को उनकी करनी का फल नहीं मिलना चाहिए?*

I167 उस नगर में खुली शत्रुता थी। कलह बढ़ गयी थी, वाद-विवाद उग्र हो गया था। उस नगर में पूर्णतः वैमनस्य फैल गया था। वह जनजाति हाल ही नये धर्मांतरित हुए मुसलमानों को अपशब्द कहने लगी।

I171 धनी और ताकतवर लोगों में से अनेकों, जिन्होंने मुहम्मद का प्रतिरोध किया, को कुरआन में स्थान मिला।

96:9 *तुम उस व्यक्ति [अबू जहल] के विषय में क्या सोचते हो, जो जब अल्लाह का सेवक [मुहम्मद] नमाज पढ़ता है, तो वह उसे रोकता है? तुम्हें क्या लगता है कि वह सही पथ पर है, अथवा वह करुणा का व्यवहार करता है? क्या तुम्हें लगता है कि वह सत्य [आयतों] को झुठलाता है और अपना मुंह फेर लेता है? क्या उसे नहीं पता कि अल्लाह सबकुछ देख रहा है?*

96:15 *सुनो! निश्चित ही यदि वह नहीं रुकेगा, तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे [अरब संस्कृति में माथे के बाल अर्थात जुल्फी को काटना या पकड़ना अपमानजनक माना जाता था], झूठे, पापी माथे के बाल! बुलाने दो उसे अपने साथियों [अन्य मक्कावासियों] को। हम जहन्नुम के फरिश्तों को बुलायेंगे। सुनो, उनकी बात न मानों, इसकी अपेक्षा अल्लाह का गुणगान करो और अल्लाह के निकट आओ।*

111:1 *मरने दो अबू लहब [मुहम्मद के चाचा और मुहम्मद का विरोध करने वाले] के सहयोगियों को और मरने दो उसे (अबू लहब)! उसकी धन-संपदा और जो उसने कमाया है, उसके काम नहीं आयेंगे। वह जहन्नुम में जलाया जाएगा, और उसकी पत्नी के भी भी गले में मूंज की रस्सी बंधी होगी और वह दहकती आग लिये फिरेगी।*

I178 मुहम्मद के लिये अच्छा संयोग यह रहा कि मदीना के अरबी मुहम्मद के संदेश के प्रति आकर्षित हुए। चूंकि मदीना नगर के आधे लोग यहूदी थे, तो मदीना के अरबी केवल एक ईश्वर की बात किया करते थे।

अध्याय 3

3:32 *उनसे कहोः अल्लाह और उसके रसूल को मानें, किंतु यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो जान लो, अल्लाह को वे लोग प्रिय नहीं हैं, जो इस्लाम को अस्वीकार करते हैं।*

वाद-विवाद चलता रहा। जिन लोगों ने मुहम्मद से तर्क-वितर्क किया, उनकी निंदा कुरआन में भरी पड़ी है।

25:32 *जो अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास नहीं करते, कहते हैं, ''क्यों पूरी कुरआन एकसाथ नहीं उतार दी गयी? यह एक-एक भाग करके इसलिये उतारी गयी, जिससे कि हम तेरे मन को दृढ़ता प्रदान कर सकें और इसलिये हमने तेरे मन में धीरे-धीरे बिठाया, क्रमशः और सु-व्यवस्थित चरणों में।*

25:33 *वे तेरे पास ऐसा कोई कठिन प्रश्न भी नहीं ला पायेंगे, जिसका सच्चा और सर्वोत्तम उत्तर हमने न दिया हो। वे जो जहन्नुम में एक-दूसरे के सामने खड़े किये जाएंगे, उन्हें सबसे बुरा स्थान मिलेगा और वे सही मार्ग से बहुत दूर होंगे।*

18:56 *हम अच्छी सूचना देने वाले आगाह करने वालों के अतिरिक्त किसी और को रसूल बनाकर नहीं भेजते हैं। पर ये काफिर असत्य वाद-विवाद करते हैं, जिससे कि वे सत्य का खंडन कर सकें। वे जिस प्रकार हमारी चेतावनियों का उपहास करते हैं, उसी प्रकार हमारी आयतों का भी उपहास करते हैं। उससे अधिक अत्याचारी कौन है, जो अल्लाह की आयतों का स्मरण कराये जाने पर उनसे मुंह फेर ले और भूल जाए कि उसे क्या किया है? वास्तव में हमने उनके मन-मस्तिष्क पर पर्दा डाल दिया है, जिससे कि वे न समझें और उनके कानों को बंद कर दिया है। भले ही तू उन्हें सही मार्ग दिखा, पर वे उस नहीं चलेंगे।*

मक्का के लोग मुहम्मद को विक्षिप्त अर्थात पागल कहते थे और उसका उपहास करते थे।

37:12 *वास्तव में जब वे उपहास करते हैं, तो तू [मुहम्मद] चकित होता है। जब उन्हें [मक्कावासियों] को चेतावनी दी गयी, तो उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया। जब वे कोई [प्रमाण आयत] देखते हैं, तो उपहास करने लगते हैं और कहते हैं, ''यह निश्चित ही कोई जादू-टोना है। क्या? जब हम और कुछ नहीं, बस अस्थि और धूल में परिवर्तित हो जाएंगे, तो फिर कौन जी उठेगा? और हमारे पूर्वजों का क्या?*

37:34 *वास्तव में, ऐसे ही हम गुनाहगारों से निपटते हैं, क्योंकि जब उन्हें बताया गया कि अल्लाह के अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है, तो वे गर्व से चौड़ा होते हुए बोले, ''क्या एक विक्षिप्त कवि के कहने पर हम अपने ईश्वरों को छोड़ दें?''*

37:37 *सुनो! वह [मुहम्मद] सच में आया है और उसने पहले के पैगम्बरों की पुष्टि की है। अल्लाह के समर्पित सेवकों अतिरिक्त तुम सब निश्चित ही यातनापूर्ण दंड के भागी बनोगे, और जो तुमने किया है उसके लिये दंडित किये जाओगे! अल्लाह के सेवकों को एक निश्चित सुंदर प्रतिफल मिलेगा; और वे आनंद के जन्नत में सिंहासन पर एक-दूसरे के सामने बैठे हुए सम्मानित किये जाएंगे। मदहोश करने वाली ऐसी शराब के प्याले उनमें बांटे जाएंगे, जो बिलकुल पारदर्शी, स्वच्छ और पीने में स्वादिष्ट होगी। इसे पीने से न तो पीड़ा होगी और न ही मन बहकेगा। और उनके साथ बड़ी-बड़ी आंखों और अति*

सुंदर दिखने वाली सहचरियां [हूरें] होंगी, जो ऐसी गोरी दिखती हैं, जैसे कि सेये जा रहे धवल अंडे का रंग। वे एक और प्रश्न पूछेंगे। उनमें एक कोई कहेगा, ''मेरा एक निकट मित्र था, जिसने कहा था, 'क्या तुम उनमें से एक हो जिसने सत्य (इस्लाम, कयामत) स्वीकार किया? क्या? जब हम मर चुके हैं, और अस्थि और धूल बन गये हैं, तो क्या वास्तव में हमारा निर्णय किया जाएगा?''

37:54 *वह अपने आसपास के लोगों से कहेगा, ''क्या तुम यह देखोगे?'' फिर नीचे झांककर देखते ही उसे जहन्नुम की गहराइयों में अपना मित्र दिख जाएगा। और वह उससे कहेगा, ''अल्लाह की कसम, तुमने तो हमें लगभग मिटा ही दिया था। यदि मेरे अल्लाह की कृपा न होती, तो मैं तो उन्हीं के बीच होता, जो जहन्नुम में यातना भोग रहे हैं।''*

I183 मुहम्मद अल्लाह का गुणगान करता रहा और कुरैशों के धर्म को बुरा कहता रहा। उसने उनसे कहा कि उनकी जीवन शैली गलत है, उनके पूर्वज जहन्नुम की आग में जलेंगे, उसने उनके देवी-देवताओं को बुरा-भला कहा, उसने उनके धर्म की निंदा की और एक जनजाति को दूसरी जनजाति के विरोध में लाकर उनके समुदाय में विखंडन उत्पन्न कर दिया। कुरैशों ने सोचा कि यह उसके अतीत के कुकर्म हैं और वे उसके प्रति सहिष्णु बने रहे।

21:107 *हमने तुझे सभी लोगों पर दया बनाकर भेजा है। उनसे कहोः यह मुझे संदेश भेजा गया है कि अल्लाह ही एकमात्र ईश्वर है। क्या तुम उसके प्रति समर्पित होगे? यदि वे मुंह फेरें, तो उनसे कह दो, ''मैंने सच्चे मन से तुम्हें समान रूप से चेताया है। मैं नहीं जानता कि कयामत का दिन निकट है या दूर। अल्लाह जानता है वह जो खुलकर कहा गया और वह जो तुम छिपा रहे हो। मैं बस यही जानता हूं कि तुम कटघरे में खड़ा किये जाओगे और यह कि तुम थोड़े समय ही आनंद में रहोगे।'' उनसे कहोः मेरा स्वामी सत्य के साथ निर्णय करता है। मेरा स्वामी वह कृपाशील अल्लाह है, जिससे उस बात पर सहायता मांगी जाए, जो तुम उसे झूठा बता रहे हो।*

वह अल्लाह और कुरआन के बारे में निरंतर बोलता रहा। कुरआन में ही कुरआन का कई बार उल्लेख है और कुरआन स्वयं ही अपने सच्चे होने का गवाह बनने का प्रयास करता है।

67:16 *क्या तुम निश्चिंत हो गये कि आकाश में बैठा अल्लाह धरती को नहीं फाड़ेगा और भूकंप में तुमको नहीं लीलेगा? क्या तुम निश्चिंत हो कि आकाश में बैठा अल्लाह तुम पर चक्रवात नहीं भेजेगा? तब तुम मेरी चेतावनी समझोगे! यह सच है कि तुम्हारे पूर्वजों ने अपने रसूलों को झुठलाया था। क्या तब मेरा (अल्लाह) कोप भयानक नहीं था?*

67:19 *क्या उन्होंने नहीं देखा ऊपर पंक्षियों को अपने पंख सिकोड़ते और फैलाते हुए? केवल दयावान अल्लाह ही उन्हें आकाश में ऊंचाई पर बनाये रख सकता है। वह सबकुछ देख रहा है।*

67:20 *अल्लाह के अतिरिक्त कौन है, जो एक फौज के जैसे तुम्हारी सहायता करेगा? काफिर पूर्णतः आत्ममुग्ध हो चुके हैं। यदि अल्लाह अपनी रसद-पानी रोक ले, तो कौन है जो तुम्हें वह दे सकेगा? अभी भी, वे अभिमान में जी रहे हैं और उसे झुठला रहे हैं। तो क्या जो औंधा होकर मुंह के बल चल रहा हो, वह श्रेष्ठ है, या वो जो सीधे मार्ग पर चल रहा है?*

67:1 *शुभ है वह अल्लाह, जिसके हाथ सल्तनत है और वह जो चाहे कर सकता है; जिसने यह निर्धारित करने के लिये जीवन और मृत्यु रचा है कि कौन अच्छा कर रहा है, तुममें से इसकी परीक्षा ले सके; और वह प्रभुत्वशाली, क्षमाशील है! उसने सात आकाश बनाये और उन्हें एक के ऊपर एक उठाया। तुम अल्लाह की रचना में एक भी कमी नहीं निकाल सकते। क्या तुम्हें आकाश में कोई दरार दिखी? बार-बार देखो। देखते-देखते तुम्हारी दृष्टि धुंधली हो जाएगी, परंतु तुम एक भी कमी नहीं पा सकोगे।*

यहां कुरआन में कुरआन के विषय में एक और संदर्भ है:

ध्यान दें: कुरआन के अधिकांश अध्यायों की पहली आयत में दो शब्द कुछ ऐसे हैं -एचए। एमआईएम। किसी को भी इन शब्दों का अर्थ या उद्देश्य नहीं पता।

44:1 *एचए। एमआईएम। इस पुस्तक के हवाले से, जो सबकुछ स्पष्ट करती है!*

44:3 *हमने एक शुभ रात को इसे उतारा- क्योंकि हम सदा से ही मनुष्य को चेताते रहे हैं- उस शुभ रात जब हमारे आदेश से प्रत्येक आदेश स्पष्ट कर दिया गया। हम सदा से ही तुम्हारे स्वामी की ओर से दया के रूप में अपने रसूल भेजते रहे हैं। वह सबकुछ सुनता और जानता है।*

कुरआन बार-बार कहती है कि अरबी अल्लाह की शुद्ध भाषा है।

20:112 *किंतु वो जो विश्वास लाये हैं और सही कर्म किये हैं, उन्हें गलत होने या हानि होने का भय नहीं होगा। यही कारण है कि हमने तुम्हारे पास अरबी कुरआन भेजी है और विस्तार से अपनी चेतावनियों का वर्णन किया है, जिससे कि तुम अल्लाह से डरो और उन पर ध्यान दो। सबसे ऊपर अल्लाह है, वह अल्लाह जो सुल्तान है, सत्य है! इसको पढ़ने में उतावले न बनो, जब तक कि इसे पूरे संदेश तुम्हारे पास न आ जाएं। इसकी अपेक्षा कहा, 'हे अल्लाह, मेरा ज्ञान बढ़ाओ।'*

26:192 *यह पुस्तक संसार के स्वामी की ओर से भेजी गयी है। तेरे [मुहम्मद] हृदय पर इसे रुहुल अमीन [जिबराइल], लेकर उतरा, जिससे कि तू स्पष्ट अरबी भाषा में दूसरों को चेता सके। सच तो यह है कि यह पहले के ग्रंथों में पहले ही बताया जा चुका है। क्या यह प्रमाण नहीं है कि इजराइल के विद्वान लोगों ने इसे पहचाना? यदि हमने इसे किसी गैर-अरब के पास उतारा होता और उसने लोगों के सामने इसे पढ़ा होता, तो वे लोग इसमें विश्वास नहीं करते।*

कुरआन यह स्पष्ट करने में निरंतर लगा रहा कि अल्लाह से जो संदेश वह लाया है, उस पर विश्वास न करने पर अनंत काल तक हिंसक और पीड़ादायी दंड का भागी बनना पड़ेगा।

76:4 *हमने काफिरों के लिये सीकड़, बेड़ियां और दहकती आग तैयार की है।*

76:5 *वैसे सही मार्ग पर रहने वाले अर्थात इस्लाम मानने वाले कपूर के सोते से निकले पेयपदार्थ भरा प्याला पियेंगे- वह सोता, जिससे अल्लाह के सेवक पीते हैं- क्योंकि यह उन्हें पुरस्कृत करते हुए यहां से वहां बहता रहता है, जो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं, जब बुराई चारों ओर फैली होगी। जब उन्हें भूख लगी थी, तो उन्होंने अपना भोजन निर्धन, अनाथ और बंदी को दिया था। ''हम अल्लाह के लिये तुम्हें खिलाते हैं। हम तुमसे किसी पुरस्कार या प्रशंसा की आशा भी नहीं करते हैं। हम अल्लाह के कोप और दंड से डरते हैं।''*

76:11 *किंतु अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचाया और उन्हें प्रसन्नता व आनंद प्रदान किया। उसने उनके धैर्य को जन्नत और सिल्क के वस्त्र देकर पुरस्कृत किया। आनंददायी सिंहासन पर विश्राम करते हुए उन लोगों में से किसी को न तो गर्मी कष्ट देगी और न ठंड लगेगी। उन पर वृक्षों की छाया होगी, और फल उनके आसपास लटके होंगे। चांदी के प्याले और स्फटिक के पात्र उनके पास फिराये जाएंगेः चांदी के प्याले, शीशे के जैसे पारदर्शी होंगे और उनका आकार उस व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करेगा। उन्हें सलबसील नामक सोते से सोंठ-मिश्रित शराब दी जाएगी। कम आयु के लड़कों द्वारा उनकी अनंतकाल तक सेवा की जाएगी। जब तुम उन लड़कों को देखोगे, तो लगेगा कि वे बिखरे हुए मुक्तक (मोती) हैं। जब तुम वहां देखोगे, तो आनंद का विशाल साम्राज्य पाओगे। उनके ऊपर हरे रेशमी वस्त्र होंगे और उनकी हाथों पर चांदी के कंगन होंगे, और वे अपनी प्यास अपने अल्लाह द्वारा दिये गये शुद्ध पेय से बुझायेंगे। यह तुम्हारा पुरस्कार होगा। तुम्हारा प्रयास व्यर्थ नहीं जाएगा।*

76:23 *हमने कुरआन तुझ पर थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। धीरज के साथ अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा कर, और दुष्ट व काफिर की बात न मान। सुबह-शाम और रात अपने अल्लाह का नाम ले। रातभर उसका गुणगान और इबादत कर।*

76:27 *किंतु मनुष्य वर्तमान के मोह में फंसा रहता है और आगे आने वाले भयानक दिन की उपेक्षा करता है। हमने उनको रचा है, और हमने उनको मजबूत बनाया है। जब हम चाहें, उनके स्थान पर दूसरों को बना देंगे। यह प्रत्यक्ष रूप से चेतावनी है। जो चाहे, अपने स्वामी की ओर सीधा मार्ग पकड़ ले। परंतु चूंकि अल्लाह सबकुछ जानता है और बुद्धिमान है, तो जब तक वह नहीं चाहेगा, तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। यदि वह चाहेगा, तो ही तुम्हें उसकी कृपा मिलेगी, किंतु उसने दुष्ट के लिये भयानक यातना बनायी है।*

मक्का एक छोटा सा नगर था और इस बात को लेकर बैठकें हुईं कि मुहम्मद का क्या किया जाए।

43:79 *क्या वे तेरे विरुद्ध षडयंत्र रच रहे हैं? हम भी षडयंत्र रच रहे हैं। वे क्या सोचते हैं कि हम उनकी गुप्त बातों और निजी बातचीत को नहीं जानते? हम सब जानते हैं, और वह सब रिकार्ड करने के लिये हमारे फरिश्ते वहां हैं।*

38:1 *एसएडी। मुझे कसम है कुरआन की, चेतावनी से भरी हुई! सच में, काफिर तेरा विरोध करने के लिये अहंकार से भरे हुए हैं। पहले की कितनी पीढ़ियों का मैंने नाश कर दिया? अंत में, वे दया की गुहार लगाने लगे, पर तब उनके पास बचने का समय कहां था!*

38:4 *वे संदेह करते थे कि उनके लोगों में से कोई रसूल बनकर कैसे आ सकता है, और काफिर कहते हैं, ''यह व्यक्ति जादू-टोना करने वाला और झूठा है! क्या उसने सभी ईश्वरों को एक अल्लाह में जोड़ दिया है? ये तो बड़े आश्चर्य का विषय है!'' और उनके मुखिया लोग ख्मक्का में मुहम्मद के प्रतिपक्षी नेता, लोग यह कहते हुए चल दिये, ''चलो। अपने ईश्वरों पर निष्ठा बनाये रखो। यह एक षडयंत्र है। हमने पहले के धर्म में ऐसी कोई बात नहीं सुनी है। यह कुछ और नहीं, बस मनगढ़ंत कहानी है!''*

38:8 *वे कहते हैं, ''क्यों, हम सभी लोगों में उसी [मुहम्मद] पर यह संदेश क्यों उतारा गया?'' हां! वे मेरी चेतावनियों पर विश्वास नहीं करते हैं, क्योंकि उन्होंने अभी मेरे प्रतिशोध का स्वाद नहीं चखा है। क्या उनके पास प्रभुत्वशाली अल्लाह की*

कृपा है, उसकी दया है? क्या धरती और आकाशों की सल्तनत तथा इनके बीच का सबकुछ उनके पास है? यदि ऐसा है, तो यदि वे चढ़ सकें तो चढ़ जाएं उस आकाश पर! यहां [मुहम्मद] के विरोधियों के, जो भी सहयोगी हैं, वे पराजित होंगे।

मक्कावासियों के साथ और तर्क-वितर्क

I188, 189 एक कुरैश ने कहा, ''अच्छा, तो यदि तुम सच्चे ईश्वर के लिये बोलते हैं और उसी का प्रतिनिधित्व करते हो, तो उसका अल्लाह कदाचित ही उसके लिये कुछ कर पाये।''

''यह भूमि सूखी है। उसके अल्लाह को मक्का के आगे कोई नदी भेजने दो।''

''वे पहाड़ियों के पास होने के कारण सिकुड़ गये हैं। देखते हैं कि कैसे उसका अल्लाह पहाड़ियों को पीछे धकेल कर स्थान बना देगा।''

''हमारे सर्वश्रेष्ठ लोग मर चुके हैं। देखें तो सही कि तेरा अल्लाह उन्हें पुनर्जीवित कैसे करेगा और विशेष रूप से हमारी जनजाति के सर्वश्रेष्ठ नेता क़ुसैय्य को वापस कैसे भेजता है। हम क़ुसैय्य से पूछेंगे कि तुम सच बोल रहे हो या नहीं।''

I189 मुहम्मद ने कहा कि उसे ये सब काम करने के लिये नहीं, अपितु एक रसूल के रूप में भेजा गया है। वे उसका संदेश मानें या न मानें और अपनी हानि कराने को तैयार रहें। तब उनमें से एक ने कहा, ''यदि तुम हमारी सहायता के लिये अपने अल्लाह का उपयोग नहीं करोगे, तो तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी ही सहायता कर दे न। अपने अल्लाह से बोलो न कि वह पुष्टि के लिये कोई फरिश्ता भेज दे और हमें गलत सिद्ध कर दे। जब तक फरिश्ता उपस्थित था, तब तक तो उसे मुहम्मद को धनी बनाने दो, तब न हम जानेंगे कि तुम अल्लाह का प्रतिनिधित्व करते हो और हम गलत हैं।'' कुरैश प्रमाण के रूप में चमत्कार देखना चाहते थे।

15:4 *जिस नगर का अंत न आया हो, उसे हम कभी नष्ट नहीं करते हैं। कोई जाति अपनी नियति न टाल सकती है और न ही परिवर्तित कर सकती है। वे कहते हैं: ''क्या तुम [मुहम्मद] पर संदेश अर्थात कुरआन उतारा गया, तुम निश्चित ही विक्षिप्त हो। यदि तुम सत्य बोल रहे हो, तो तुम हमारे सामने कोई फरिश्ता क्यों न ला सके?''*

15:8 *हम बिना ठोस कारण के फरिश्ते नहीं भेजते हों। यदि हमने ऐसा किया, तो काफिर नहीं समझेंगे। निश्चित ही, हमने कुरआन उतारी है, और निश्चित ही हम उन आयतों की रक्षा करेंगे। तेरे समय से पहले भी, हमने प्राचीन लोगों के पंथों के पास रसूल भेजे, किंतु उन्होंने प्रत्येक रसूल का उपहास किया। इसी प्रकार हम पापियों के मन में संदेह डाल देते हैं। वे इन आयतों पर विश्वास नहीं करते हैं, भले ही उनके पीछे प्राचीन उदाहरण हों। यदि हमने उनके लिये आकाश में जन्नत का द्वार भी खोल दिया होता, और वे उसमें चढ़ते जाते, तो भी कहते, ''हमारी आंखें धोखा खा रही हैं। लगता है, हम पर जादू-टोना कर दिया गया है।''*

I189 मुहम्मद ने कोई चमत्कार नहीं दिखाया, क्योंकि अल्लाह ने उसे इस काम के लिये नहीं लगाया था।

I189 तब उन्होंने कहा, ''क्या तुम्हारा अल्लाह नहीं जानता था कि हम तुमसे ये प्रश्न पूछेंगे? यदि वह जानता होता, तो तुम्हें इन प्रप्रश्नों के उचित उत्तर के साथ तैयार करता। और तुम्हारे अल्लाह ने तुमसे बताया होता कि जब हम लोग विश्वास नहीं करेंगे, तो तुम्हें क्या कहना है। हमने सुना है कि तुम्हें यह कुरआन एक दूसरे नगर के किसी अल-रहमान नामक व्यक्ति से मिला है। हम अल-रहमान में विश्वास नहीं करते। हमारा मन साफ है। या तो हम तुम्हें नष्ट कर देंगे या तुम हमें नष्ट कर दोगे। बुलाओ अपने फरिश्तों को, तब हम उन पर विश्वास करेंगे।''

26:204 *क्या वे हमारे दंड के लिये उतावले हो रहे हैं? तुम्हें क्या लगता है? यदि उन्हें वर्षों तक भरपेट लाभ देने के बाद अंततः उनको दंड मिले, तो यह लाभ उनके किस काम आएगा? हमने एक भी ऐसे नगर को नष्ट नहीं किया है, जिसे पहले से चेतावनी न दी हो। हम उनके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करते हैं।*

26:210 *शैतान इस कुरआन को लेकर नहीं उतरे हैं। शैतानों को कुरआन नहीं जंचता है, और न ही उनके पास इसे लाने की ताकत है, क्योंकि इसका तो सुनना भी उनके लिये प्रतिबंधित कर दिया गया है। अतः अल्लाह के अतिरिक्त किसी और ईश्वर को न पुकारो, नहीं तो तुम भी दंड के भागी बनोगे। अपितु, अपने आसपास संबंधियों को चेताओ।*

26:215 *और जो तेरी बात मानते हों, उन मोमिनों के प्रति दयालु रह। यदि वे तेरा कहा न मानें, तो उनसे कह, ''तुम्हारे कर्मों के लिये मैं उत्तरदायी नहीं हूं।'' अपना विश्वास उसमें रख, जो प्रभुत्वशाली और दयावान है, जो जब तू नमाज के लिये खड़ा होता है, तो वह तुझे भी देखता है और नमाजियों के बीच में उपस्थित तेरी बुराई करने वाले को भी देखता है, क्योंकि वह सबकुछ सुनता है और जानता है।*

I189 मुहम्मद काबा आता और मक्कावासियों को बताता कि अल्लाह ने उन लोगों को कितनी भयानक यातना दी थी, जिन्होंने उसके रसूलों पर विश्वास नहीं किया था। यह अब उसके सतत् विषय में से एक था। अल्लाह ने तुम्हारे जैसे उन सभी को नष्ट कर दिया, जिन्होंने मेरे जैसे व्यक्तियों की बात नहीं सुनी थी।

36:1 *या। सीन। मैं कसम खाता हूं सुदृढ़ कुरआन की कि तू निश्चित सुपथ पर चलने वाले रसूलों में से एक है, ये (कुरआन) प्रभुत्वशाली, दयावान द्वारा भेजा गया है, जिससे कि उन लोगों को आगाह किया जा सके, जिनके पूर्वज आगाह नहीं थे, और परिणामस्वरूप वे अचेत रहते हैं।*

36:7 *उन पर हमारी यातना इसलिये है, क्योंकि वे (इस्लाम पर) विश्वास नहीं करते। हमने उनके गलों को सीकड़ से जकड़ दिया है और यह सीकड़ उनकी ठुड्डी तक है, जिससे वे उनके सिर ऊपर की ओर लटके हुए हैं। हमने उनके सामने, पीछे और उनके ऊपर आड़ लगा दी है, जिससे वे देख नहीं सकते हैं। तू उन्हें आगाह कर या नहीं, इससे कोई लाभ नहीं, क्योंकि वे विश्वास नहीं करेंगे। तू केवल उन्हें आगाह कर सकता है, जो संदेश को मानते हों और अकेले में भी दयावान अल्लाह से डरते हों। उन्हें क्षमा और उत्तम पुरस्कार की शुभ सूचना दे। यह सच है कि हम मरे हुओं को जीवित करेंगे और यह भी सच है कि वे जो भी कर कर रहे हैं और जो कुछ किया है, उसका लेखा-जोखा हम रख रहे हैं। हमने अपने सम्पूर्ण लेजर में सबकुछ अंकित कर दिया है।*

कुरआन के अनुसार अरब के प्राचीन नगर इसलिये नष्ट कर दिये गये थे, क्योंकि वहां के निवासी अपने रसूलों पर विश्वास नहीं करते थे।

26:141 *समूद के लोगों [मदीना के निकट नष्ट हो गये नबातीन नगर के लोग] ने भी रसूलों को झुठला दिया था। उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, ''क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते? मैं विश्वसनीय रसूल हूं। अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इसके बदले तुमसे कुछ नहीं मांग रहा। मेरा पुरस्कार सभी संसारों के स्वामी से आता है। तुम इतने अवज्ञाकारी व धृष्ट हो, तो तुम्हें क्या लगता है कि तुमने पहाड़ियों के पत्थरों को काटकर जो घर बनाया है, तुमने बाग-बागीचा, सोते, खजूर के पेड़ और अनाजों के खेत तुमने अर्जित किये हैं, उनका भोग करने के लिये तुम्हें छोड़ दिया जाएगा? अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो। जो धरती पर दुष्टता करते हैं और सुधार नहीं करते, वैसे निरंकुशों की आज्ञा मत मानो।''*

27:45 *बहुत पहले हमने समूद के लोगों के पास उनके बंधु सालेह को भेजा था, जो कह रहा था, ''अल्लाह की इबादत करो।'' पर वे दो झगड़ने वाले धड़ों में बंट गये। उसने कहा, ''मेरे लोगों, तुम अच्छाई की अपेक्षा बुराई को अपना रहे हो? तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं मांगते, जिससे कि तुम उसकी दया प्राप्त कर सको?''*

27:47 *उन्होंने कहा, ''हम भविष्यवाणी करते हैं कि तुम और तुम्हारे अनुयायी अपशकुन ही लायेंगे।'' उसने कहा, ''अपशकुन तो तुम पर आएगा और यह अल्लाह की ओर से आएगा। तुम सब की परीक्षा ली जा रही है।''*

27:48 *एक नगर में एक परिवार के नौ सदस्य थे, जिन्होंने वहां दुष्टता की और सुधार नहीं किया। उन्होंने कहा, ''आपस में ईश्वर की सौगंध खाओ कि हम रात में सालेह और उसके परिवार पर धावा बोलेंगे, और हम सालेह के प्रतिशोधी उत्तराधिकारियों से कहेंगे कि उसके परिवार की हत्या के समय हम वहां उपस्थित नहीं थे, और हम निश्चित ही सत्यवादी हैं।'' उन्होंने षडयंत्र किया और योजना बनायी, किंतु हमने भी योजना बनायी, जबकि वे इस बात जान तक न सके। देखो कैसे उनकी योजना खुल गयी। हमने उन्हें और उनके सभी लोगों को नष्ट कर दिया। तुम आज भी उनके उन नष्ट घरों को देख सकते हो, जो इसलिये नष्ट कर दिये गये थे, क्योंकि वे दुष्ट थे। निश्चित ही यह उनके लिये साक्ष्य है, जो समझते हैं। हमने उन्हें बचा लिया, जिन्होंने विश्वास किया (इस्लाम पर) और सही कर्म किये।*

मक्का के कुरआन ने मुहम्मद के लाभ के लिये तनिक फेरबदल करके यहूदी कथाओं को पुन: दिया। यहां यहूदियों के राजा डेविड (दाऊद) के बारे में कुछ कथाएं हैं:

38:17 *वो जो कहें, उसे धीरज रखकर सहन करता रह, और हमारे सेवक डेविड का स्मरण कर, जो कि एक प्रभुत्वसम्पन्न व्यक्ति था और जो सदा अल्लाह के ध्यान में मग्न रहता था। हमने सुबह-षाम उसके साथ अल्लाह का गुणगान करने के लिये पर्वतों को स्वर दे दिया, और यह गुणगान सुनने के लिये पक्षी एक-साथ आ जाते थे; ये सभी मिलकर अल्लाह का गुणगान करते थे। हमने उसके राज्य को सुदृढ़ बनाया और उसे बुद्धिमत्ता एवं उत्तम निर्णय करने की क्षमता दी।*

38:21 *क्या तूने झगड़ रहे उन दो व्यक्तियों के बारे में सुना है, जो डेविड के निजी कक्ष की दीवार पर चढ़े थे? जब वे डेविड के कक्ष में घुसे, तो वह डर गया। उन्होंने कहा, ''भयभीत मत हो। हम दोनों का विवाद है, और हम दोनों में से किसी एक ने तो दूसरे के साथ गलत किया है। निर्णय करो कि हममें से सही कौन है, और अन्याय न करना, बस हमें सही पथ*

दिखाना। मेरे भाई के पास निन्यानबे मादा भेड़ हैं और मेरे पास केवल एक है। उसने मुझ पर दबाव डालते हुए बोला, ''मुझे वह भेड़ रखने दो।'''

38:24 *डेविड ने उत्तर दिया, ''उसने निश्चित ही तुम से हठ करके तुम्हारी भेड़ लेकर गलती की है। यह सच है कि बहुत से साझेदार आपस में अन्याय करते हैं। केवल वे ही अन्याय नहीं करते, जो विश्वास लाते हैं अर्थात इस्लाम मानते हैं और सही ढंग से व्यवहार करते हैं। ऐसे लोग बहुत कम हैं।'' डेविड को समझ में आ गया कि हमने उसकी परीक्षा ली है। उसने अपने स्वामी से क्षमा की गुहार की, सज्दा में झुक गया और पश्चाताप किया।*

38:25 *तो हमने उसके पापों को क्षमा कर दिया; वास्तव में वह सम्मानित हुआ, हमारे और समीप आया और जन्नत में अच्छा स्थान पाया। उससे कहा गया, ''डेविड, हमने वास्तव में तुम्हें धरती पर राज्याधिकारी बनाया है। जब लोगों का निर्णय करो, तो सत्य और न्याय का प्रयोग करो और अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को न चलाओ, क्योंकि इससे तुम अल्लाह के पथ से भटक सकते हो। जो अल्लाह के पथ से भटकते हैं, उन्हें भयानक दंड मिलेगा, क्योंकि वे कयामत के दिन को भूल गये हैं।''*

नूह को इस्लाम में रसूल माना जाता है।

71:1 *हमने उन लोगों के पास नूह को भेजा और उससे कहा, ''इससे पहले कि भयानक दंड उन पर आ पड़े, अपने लोगों को आगाह कर दो।'' उसने कहा, ''मेरे लोगों, मैं तुम्हारे पास सीधी-सीधी भाषा में आगाह करने वाले के रूप में आया हूं। अल्लाह की सेवा करो और उससे डरो और मेरी बात मानो। वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और जब तक वह नियत समय अर्थात मृत्यु का समय नहीं आ जाता, तुम्हें अवसर देगा। क्योंकि जब अल्लाह द्वारा निर्धारित समय आ जाएगा, तो इसे टाला नहीं जा सकेगा। काश, तुम यह जान पाते!''*

71:5 *उसने कहा, 'स्वामी, मैंने दिन-रात अपने लोगों को चीख-चीखकर बताया; और मैं जितना चीखता था, वे उतना ही दूर भागते थे। जब भी मैंने उनके सामने पुकार लगायी कि तुम उन्हें क्षमा कर दो, तब-तब उन्होंने अपने कानों को ढंक लिया, अपने को वस्त्रों से ढंक लिया और अपनी गलती दोहराने पर अड़े रहे। तब मैंने उन्हें चीखकर पुकारा। इसके बाद मैंने उन्हें खुलकर कहा और अकेले में बुलाकर भी कहा। मैंने कहा, ''अपने स्वामी से क्षमा की भीख मांग लो, क्योंकि वह क्षमा करने के लिये तैयार बैठा है। वह अपने आकाश खोल देगा और प्रचुर वर्षा भेजेगा। वह तुम्हारी धन-संपत्ति और संतान बढ़ा देगा और तुम्हें बाग और नदियां देगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की कृपा मांगने से अस्वीकार कर रहे हो, जबकि वही है जिसने तुम्हें विविध स्तरों में बनाया?'''*

71:15 *क्या तुमने नहीं देखा कि कैसे अल्लाह ने सातों आकाश बनायें और उन्हें एक के ऊपर एक रखा? उसने वहां चंद्रमा रखा और एक प्रकाश बनाया। उसने सूरज का दीया बनाया और वहां रखा। अल्लाह ने तुम्हें धरती से एक पौधे के जैसे उगाया। बाद में वह तुम्हें उसी धरती में वापस भेज देगा और तुम्हें पुनः बाहर लायेगा। अल्लाह ने तुम्हारे लिये धरती को कालीन के जैसे बिछाया कि तुम खुले मार्ग पर चल सको।'' नूह ने कहा, ''अल्लाह, वे मेरे विरुद्ध हो गये हैं और उनका अनुसरण करते हैं, जिनके धन और संतान उनके कष्ट को ही बढ़ायेंगे।''*

71:22 *और उन्होंने एक बड़ा षडयंत्र रचा। उन्होंने कहा, ''अपने देवताओं को न छोड़ो। वद्द अथवा सुवाअ अथवा यगूस को न छोड़ो और न ही यऊक और नस्र [सेमिटिक ईश्वरों के नाम] को छोड़ो।'' उन्होंने बहुतों को सही पथ से भटका दिया है और*

दुष्टों के पथों में और बुराइयां जोड़ दी हैं। अपने पापों के कारण वे डुबा दिये गये और आग में झोंके गये। तब कहीं जाकर उन्हें समझ में आया कि केवल अल्लाह का ही आश्रय है।

71:26 और नूह ने कहा, ''अल्लाह, धरती पर काफिरों के एक भी परिवार को जीवित न छोड़ना। क्योंकि यदि तुम उन्हें छोड़ दोगे, तो वे तुम्हारे सेवकों को अपने जाल में फंसा लेंगे और पापियों व काफिरों को और अधिक जन्म देंगे। अल्लाह, मुझे, मेरे माता-पिता और मेरे घर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक मोमिन, प्रत्येक मोमिन पुरुष व महिला को क्षमा करो। काफिरों को केवल विनाश दो।

यहां एक और यहूदी संदर्भ हैः

38:41 *क्या तुम्हें हमारा सेवक जॉब (अय्यूब) स्मरण है। जब उसने अपने स्वामी को पुकारा था, ''शैतान ने मुझे विपत्ति और यातना में डाल दिया है।'' हमने उससे कहा, ''अपना पांव धरती पर मार। यहां एक जलस्रोत है, पीने और स्नान करने के लिये शीतल जल वाला।'' और हमने उसे उसका परिवार लौटा दिया। अपनी दया के उदाहरण के रूप में तथा मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये हमने उसके परिवार की संख्या दोगुनी कर दी। हमने उससे कहा, ''अपने हाथ में एक डाल ले और उससे उसे मार। अपनी शपथ[3] न भंग कर।'' वास्तव में, हमने उसे धैर्य और लगन से भरा पाया। वह अति उत्तम सेवक था, क्योंकि वह सदैव ध्यानमग्न होकर हमारी ओर उन्मुख रहता था।*

38:45 *और स्मरण करो हमारे सेवक अब्राहम (इब्राहीम), इसाक (इस्हाक) और जैकब (याकूब) को, ये सभी ताकत और ज्ञानचक्षु वाले थे। निश्चित ही हमने उन्हें विशेष उद्देश्य के लिये शुद्ध किया और चुना, जीवन के बाद के संदेश की घोषणा करते हुए। हमारी दृष्टि में वे सच में चुने हुए लोगों में से थे और अच्छे थे।*

38:48 *और इस्माईल, एलिशा (यसअ) और ज़ुल-किफ्ल [इज़ीकील]: ये सभी चुने हुए लोग थे।*

38:49 *यह चेतावनी है, और, निश्चित ही ईमान वाले इस जीवन के बाद सुंदर घर पायेंगे, उनके लिये सदा जन्नत के द्वार खुले रहेंगे। वे वहां आनंद से रहेंगे और जब चाहेंगे उनके लिये प्रचुर फल और मदिरा उपलब्ध होगी। उनके पास उनकी आयु की कुंवारी लड़कियां होंगी, जो दिखने में अति आकर्षक होंगी। यही है जो कयामत के दिन तुमको देने का वादा किया गया है। यह तुमको हमारा उपहार है। यह तुमको मिलेगा ही।*

अब्राहम (इब्राहीम)

37:83 *वास्तव में, अब्राहम अपने स्वामी के प्रति शुद्ध मन से समर्पित हुआ, तो उसने अपना मजहब साझा किया। उसने अपने पिता और अपने लोगों से कहा, ''तुम किसकी पूजा कर रहे हो? झूठ है! क्या अल्लाह के अतिरिक्त ईश्वरों को मानते हो? तो सभी संसारों के स्वामी अल्लाह के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?''*

---

[3] जॉब (अय्यूब) ने अपनी बीवी को सौ मुक्का मारने की सौगंध खायी थी। बाद में वह नरम पडा और अपनी सौगंध पूरी करने के लिये उसने अपने हाथ में सौ छोटी टहनियां लीं और उससे एक बार मारा।

37:88 *तब उसने ऊपर दृष्टि करके तारों को देखते हुए बोला, ''वास्तव में, मैं रोगी हूं।'' [अब्राहम के लोगों की पूजा में तारों की पूजा की जाती थी।] और उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और छोड़ कर चले गये। वह उनके ईश्वरों के चित्र की ओर मुड़कर बोला, ''तुम लोग क्यों नहीं खाते हो? तुम लोगों को क्या हुआ है? तुम लोग कुछ बोलते क्यों नहीं? वह उन पर प्रहार करने लगा, दाहिने हाथ से उन्हें मारने लगा।*

37:94 *जैसे ही उसकी जाति के लोग उसके पास आये, तो वह बोला, ''जिसे तुमने पत्थरों से गढ़ा है, उसकी पूजा करते हो, जबकि तुमने जो बनाया है और तुम्हें स्वयं अल्लाह ने बनाया है?'' उन्होंने कहा, ''उसके लिये चिता बनाओ और उसे जलती आग में झोंक दो।'' उन्होंने उसके विरुद्ध षडयंत्र करने का प्रयास किया, पर हमने उनका षडयंत्र विफल कर दिया। हे, अल्लाह, मुझे मजहबी निष्ठा वाला पुत्र दो।'' हमने उसे एक अच्छे बेटे के आने का अच्छा समाचार दिया।*

37:102 *जब वह बेटा [इस्माईल] काम करने योग्य बड़ा हो गया, तो उसके पिता ने उससे कहा, ''बेटे, मैंने सपने में देखा कि मैं तुम्हारी कुर्बानी (कत्ल) दे रहा हूं। तुम्हारा क्या विचार है?'' उसने कहा, ''अब्बा, आपको जो आदेश मिला है, उसे पूरा करिये। यदि अल्लाह चाहेगा, तो आप मुझे सहनशील ही पायेंगे।*

37:103 *जब उन दोनों ने अपने को अल्लाह की इच्छा के आगे समर्पित कर दिया, तो उसने अपने बेटे [इस्माईल] को माथे के बल गिरा दिया। तब हमने उसे पुकार लगायी, ''इब्राहीम! तूने अपना सपना सच कर दिया।'' अब देखो, हम कैसे इस ईमान वाले को पुरस्कार देंगे। यह निश्चित रूप से प्रत्यक्ष परीक्षा थी। और हमने उसके बेटे के स्थान पर एक आकर्षक शिकार [मेढ़ा] प्रकट कर दिया और हमने उस मेढ़े को उसके लिये वहीं छोड़ दिया, जिससे कि वह अपनी आने वाली पीढ़ियों में सम्मानित होता रहे।*

37:109 *''अब्राहम पर शांति हो!'' हम ऐसे ही अच्छाई को पुरस्कार देते हैं, क्योंकि वह हमारे ईमान वाले सेवकों में एक था।*

37:112 *और हमने उसे इस्हाक के जन्म की शुभ सूचना दी, जो ईमान वाला होगा। हमने उस पर और इस्हाक पर अपनी कृपा प्रदान की। उसके वंशजों [यहूदियों] में कुछ ऐसे हैं, जो अच्छा कर रहे हैं, जबकि दूसरे लोग अपनी रूह (आत्मा) पर अत्याचार कर रहे हैं।*

मूसा की कहानी

20:9 *क्या तुमने मूसा की कहानी सुनी है? उसने आग देखी और अपने परिवार से बोला, ''यहां प्रतीक्षा करो। मुझे आग दिख रही है। हो सकता है कि मैं तुम्हारे लिये उसका कुछ अंगार लाऊं, या फिर हो सकता है कि वहां मुझे कोई मार्गदर्शन मिले।''*

20:11 *फिर जब वह वहां पहुंचा, तो आवाज आई, ''मूसा! मैं तेरा स्वामी हूं। अपने जूते उतार। तू पवित्र तुवा घाटी में है। सुन, जो मैं कह रहा हूं। मैं अल्लाह हूं। मेरे अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। मेरी इबादत कर और मेरी कृपा के लिये नमाज पढ़। वह घड़ी [कयामत] निश्चित आ रही है। मैं इसे गुप्त रखना चाहता हूं, जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल पा सकें। इसलिये, जो ईमान नहीं लाते हैं (अर्थात अल्लाह, उसके संदेश, उसके रसूल को नहीं मानते और अल्लाह व उसके*

रसूल द्वारा वर्जित काम करते हैं) और जो अपनी इच्छा पर चलते हैं, उन्हें इसकी छूट न दे कि वे तुझे सत्य (इस्लाम) से दूर कर दें, अन्यथा तेरा नाश हो जाएगा।

20:17 *मूसा, ये तेरे दाहिने हाथ में क्या है?'' उसने कहा, ''मेरी लाठी है। मैं इसका आश्रय लेता हूं और इससे अपने भेड़ों के लिये पेड़ों की पत्तियां तोड़ता हूं। इस लाठी से मेरी अन्य आवश्यकताएं भी पूरी होती हैं। अल्लाह ने कहा, ''मूसा, इसे नीचे फेंक दे!'' उसने लाठी नीचे फेंक दी, तभी वह लाठी रेंगते हुए सांप में परिवर्तित हो गयी। अल्लाह बोला, ''भयभीत न हो, इसे पकड़। मैं इसे पुरानी अवस्था में ला दूंगा। अब अपना हाथ कांखों के नीचे रख। वहां से तेरे हाथ सफेद [सफेद दाग कोढ़] जैसे निकलेंगे, यद्यपि तुझे कोई क्षति नहीं होगी, कोई रोग नहीं होगा। यह एक और चमत्कार है, जिससे कि हम तुझे अपना बड़ा प्रमाण दिखा सकें। फिरऔन के पास जा, क्योंकि उसने सभी सीमाएं लांघ दी हैं।''*

20:25 *मूसा ने कहा, ''मेरे स्वामी, मेरा मन शांत कर और मेरा कार्य सरल कर। मेरी जिह्वा को खोल दे, जिससे जो मैं बोलूं, उसे वो समझ सकें। परिवार में से मेरे भाई आरून (हारून) को मेरा सहायक बना दे, जिससे मुझे ताकत मिले। हारून को मेरे काम में साझीदार बना दे। हम बिना रुके तेरा गुणगान करेंगे, क्योंकि तू सदैव हमें देख रहा है।'' उसने कहा, ''मूसा, तूने जो मांगा, हमने उसकी स्वीकृति दे दी। हमने तुझ पर पहले भी कृपा की है। हमने तेरी माता के हृदय में यह संदेश उतारा थाः 'तू उसे एक डलिया में रख और नदी में फेंक दे; नदी उसे किनारे पर लाकर छोड़ेगी, जहां से उसे मेरा और उसका एक शत्रु उठा लायेगा।' पर मैंने तुझ पर अपना विशेष प्रेम डाल दिया है, जिससे कि तू मेरी आंखों के सामने पले-बढ़े।''*

20:46 *उसने कहा, ''भयभीत मत हो, क्योंकि मैं तुम दोनों के साथ हूं। मैं तुम दोनों को सुनता और देखता रहूंगा। उसके पास जा और बता, ''निश्चित ही हम अपने स्वामी द्वारा भेजे गये हैं। इजराइल के बच्चों को हमारे साथ आने दे और उन्हें न सता। हम तेरे स्वामी की ओर से एक चिह्न भेजेंगे और जो उस स्वामी के मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, उस पर शांति होगी। हमें संदेश मिला है कि जो उसे (अल्लाह को) अस्वीकार करते हैं, उससे मुंह फेरते हैं, दंडित किये जाएंगे।''*

20:49 *और फिरऔन बोला, ''मूसा, कौन है तेरा स्वामी?''*

20:50 *मूसा ने कहा, ''हमारा स्वामी वो है, जिसने सबकुछ बनाया है और फिर इनकी रचना का उद्देश्य दिया अर्थात मार्गदर्शन दिया।''*

20:77 *हमने मूसा को संदेश दिया, ''मेरे सेवकों को लेकर रातों-रात निकल पड़। उनके लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले। वश में कर लिये जाने को लेकर भयभीत न हो, और मन में किसी प्रकार का भय न पाल।'' फिरऔन और उसकी सेना ने पीछा किया, पर सागर उन पर छा गया, क्योंकि उसने अपने लोगों का मार्गदर्शन न करके उन्हें भटकाया था।*

20:80 *इजराइल के बच्चो! हमने तुम्हें शत्रुओं से बचाया और हमने पवित्र तूर की पहाड़ियों के किनारे तुमसे समझौता किया, तुम्हारे लिये मन्न और सल्वा भेजा। हमने कहा, ''हमने जो तुम्हें दिया है, वही अच्छे पदार्थ खाओ, पर अति न करो, नहीं तो तुम लोगों पर मेरा कोप होगा और जिस पर भी मेरा कोप होगा, वह निश्चित ही यातना भोगेगा। मैं निश्चित रूप से उस व्यक्ति को क्षमा कर दूंगा, जो अल्लाह की ओर आएगा, ईमान लायेगा, दीन के अच्छे कर्म करेगा और मागदर्शन (कुरआन) को सुनेगा।''*

I192 चूंकि मुहम्मद और कुरआन ने यहूदी आधार का दावा किया, तो कुरैशों ने मदीना में यहूदियों के पास अपना एक कथाकार भेजकर उनसे सहायता मांगी। वहां के यहूदी रब्बियों ने कहा, ''उनसे ये तीन प्रश्न पूछो। यदि वह इनका उत्तर दे देता है, तो वह एक रसूल है। यदि उसके पास इन प्रप्रश्नों के उत्तर नहीं है, तो वह नकली है।''

''उस युवक का क्या हुआ, जो प्राचीन दिनों में लुप्त हो गया था।''

''उससे उस महान यात्री के बारे में पूछो, जो धरती के पूर्वी और पश्चिमी छोर तक पहुंचा था।''

''उससे पूछो, आत्मा क्या है?''

I192 कुरआन ने इन सभी प्रश्नों और कुरैशों के कथन का उत्तर दिया। इस प्रश्न के संबंध में कि प्राचीन काल के उस युवा व्यक्ति का क्या हुआः

18:9 *क्या तुम मानते हो कि गुफा और शिलालेख [एक अज्ञात संदर्भ] हमारे चिह्नों (प्रमाणों) में से नहीं थे? जब उन युवाओं [आलसी युवकों] ने खोह में शरण ली, तो उन्होंने कहा, ''स्वामी, हम पर दया कर और हमें सही कर्म के पथ पर ला।'' हमने उन पर पर्दा डाल कर उन्हें वर्षों तक सुला दिया। फिर हमने उन्हें जगा दिया, जिससे कि हम जान सकें कि किसने उनके उस खोह में ठहरे रहने की अवधि को अधिक समय तक स्मरण में रखा है?*

18:25 *वे तीन सौ वर्षों तक खोह में रहे, यद्यपि कुछ लोग यह समय तीन सौ नौ वर्ष बताते हैं। उनसे कहोः अल्लाह ही ठीक से जानता है कि कितने समय वे वहां ठहरे। वह आकाशों और धरती के रहस्यों को जानता है। उसके अतिरिक्त मानव को कोई संरक्षक नहीं है। वह किसी को भी अपनी ताकत का साझेदार बनने की अनुमति नहीं देता है।*

उस महान यात्री (अलेक्जेंडर (सिकंदर) महान, जिसे कुरआन रसूल मानता है) के संबंध में:

18:83 *वे तुझसे ज़ुलक़रनैन [अलेक्जेंडर महान] के बारे में पूछेंगे। उनसे कहः मैं तेरे समक्ष उसका विवरण सुनाऊंगा। हमने उसे धरती पर प्रभुत्व दिया और उसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये साधन दिये। तो वह एक पथ पर चला। यहां तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक पहुंचा, तो उसने पाया कि एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है और वहां एक जाति को पाया। हमने कहा, ''ज़ुलक़रनैन! तेरे पास अधिकार है कि उन्हें दंड दे अथवा उन्हें सुधार कर उन पर दया कर।''*

18:87 *उसने कहा, ''जो कोई भी गलत करेगा, हम निश्चित ही उसे दंडित करेंगे। फिर वह अपने स्वामी के पास लौट जाएगा, जहां स्वामी उसे भयानक दंड देगा। किंतु जो भी ईमान (अर्थात अल्लाह व उसके रसूल पर विश्वास) लायेगा और अच्छे काम करेगा, उसे सुंदर पुरस्कार दिया जाएगा। हम उन्हें पालन के लिये सरल आदेश देंगे।*

वह प्रश्न कि आत्मा क्या है?

17:85 *वे लोग तुझसे रूह [संभवतः फरिश्ता जिबराइल] के बारे में पूछेंगे। उनसे कह देः वह रूह हमारे अल्लाह द्वारा आदेशित होती है और तुझे इसके बारे में बहुत थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है। यदि हम चाहें, तो अपने संदेश को तुम लोगों से*

छीन लें। तब तुम लोग समझोगे कि तुम्हारी ओर से मध्यस्थता करने वाला कोई न है, यदि कुछ है तो वह बस अल्लाह की ओर से दया है। निश्चित रूप से उसकी तुम पर उसकी दयालुता महान है।

कुरैशों के पास मुहम्मद के संदेशों के प्रमाण को लेकर प्रश्न थे। यहां मुहम्मद की वैधता को सिद्ध करने के लिये फरिश्तों के आने, नदियों के निर्माण, धन सृजन और दूसरे चमत्कारों पर उन प्रश्नों पर कुरआन का पुनर्कथन है। कुरआन कहती हैः

17:88 *यदि मनुष्य और जिन्न एक-दूसरे के साथ आ जाएं और सोचें कि इस कुरआन के जैसा कुछ रच देंगे, तो ऐसा नहीं होगा। वे इसके समान को पुस्तक नहीं रच सकेंगे, भले ही वे इस काम में एक-दूसरे की सहायता करें। और निश्चित ही इस कुरआन में हमने मानव को प्रत्येक प्रकार के तर्कों का वर्णन दिया है, और तब भी अधिकांश मनुष्य इसको झुठलाकर कुफ्र करते हैं। वे [मक्का के लोग] कहते हैं, ''हम तुम पर तब तक विश्वास नहीं करेंगे, जब तक कि तुम धरती से झरना न निकाल दो; अथवा जब तक कि तुम्हारे पास अंगूर और खजूर के ऐसे बाग न हों, जिनके बीच से नदियों की धारा न निकल पड़े; अथवा जब तक कि तुम आकाश के टुकड़े-टुकड़े न कर दो, जैसा कि तुम दावा करते हो कि यह होगा; अथवा जब तक तुम हमारे सामने अल्लाह और फरिश्तों को साक्षात लाकर न खड़ा कर दो; अथवा जब तक तुम्हारे भवन सोने के न हो जाएं; अथवा जब तक तुम जन्नत में चढ़ते न दिखो' और हम इतने पर भी तुम पर विश्वास न करेंगे कि आकाश में चढ़ गये, जब तक कि तुम वहां से प्रत्यक्ष कोई पुस्तक न लाओ, जिसे हम पढ़ सकें।'' उनसे कह देः मेरे अल्लाह का गुणगान करो! मैं कुछ नहीं, बस एक मनुष्य, रसूल हूं।*

17:94 *जब मार्गदर्शन आ गया, तो फिर उन्हें विश्वास लाने से क्या रोकता है, पर नहीं, वे तो अब भी कहते हैं, ''क्या अल्लाह ने हमारे जैसे किसी व्यक्ति को रसूल बनने के लिये भेजा है? उनसे कह देः यदि फरिश्ते धरती पर चल-फिरते होते, तो हमने आकाश से किसी फरिश्ते को ही अपने रसूल के रूप में भेज होता। उनसे कह देः तुम लोगों और मेरे बीच अल्लाह का साक्ष्य बहुत है। वह अपने सेवकों (बंदों) को पूर्णतः जानता है और सबकुछ देख रहा है।*

17:97 *जिसको भी अल्लाह पथ दिखाता है, वह सही मार्ग का अनुसरण करने वाला होता और जिन्हें कुपथ कर देता है, उन्हें उसके अतिरिक्त किसी और की सहायता नहीं मिलेगी। हम कयामत के दिन उनको एक-साथ लायेंगे, माथे के बल घसीटते हुए, अंधे, गूंगे और बहरे बनाकर। उन लोगों का स्थान जहन्नुम होगा। उस जहन्नुम में जब आग बुझने लगेगी, तो हम उसमें और ईंधन डालकर भड़का देंगे। यही उनका प्रतिफल है, क्योंकि उन्होंने हमारे चिह्नों (आयतों) में विश्वास नहीं किया और कह रहे थे, ''जब हम अस्थि और धूल रह जाएंगे, तो क्या सच में नयी उत्पत्ति में पुनर्जीवित कर दिये जाएंगे?*

यह उस काफिर को कुरआन का उत्तर है, जिसने कहा कि कुरआन पुरानी कहानियों पर आधारित झूठ का पुलिंदा हैः

25:3 *अभी भी वे अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे ईश्वरों को पूज रहे हैं। वे ईश्वर जिन्होंने कुछ नहीं बनाया, अपितु उन काफिरों ने ही उन ईश्वरों को गढ़ा है। वे उन काफिरों का अच्छा या बुरा करने में असमर्थ हैं, और न ही जीवन, मृत्यु या पुनर्जीवन पर उनका वश है। पर काफिर कहते हैं, ''यह [कुरआन] कुछ और नहीं, बस झूठ का पुलिंदा है, जिसे उस [मुहम्मद] ने झूठी निंदा करने वाले और अन्याय करने वाले दूसरे लोगों की सहायता से लिखा है।''*

25:5 *वे कहते हैं, ''जो उसने लिखा है, वो पुरानी मनगढ़ंत कहानियां हैं। उसके सामने ये कहानियां प्रातः और रात में पढ़कर सुनायी जाती हैं।''*

I204 जब मुहम्मद ने मक्कावासियों को इस्लाम की अधीनता स्वीकार करने को कहा, तो उन्होंने कहा, ''हमारी बुद्धि जपाट है; हम समझ नहीं पा रहे कि तुम क्या कह रहे हो? हमारे कानों में कुछ है कि हम तुम्हें सुन नहीं पा रहे हैं।''

कुरआन की प्रतिक्रियाः

17:45 *जब तू कुरआन पढ़कर सुनाता है, तो हम तेरे और काफिरों के बीच एक अदृश्य अवरोध लगा देते हैं। हम उनकी बुद्धि पर पर्दा डाल देते हैं और उनके कानों को बहरा कर देते हैं, जिससे कि वे इसे न समझ पायें। जब तू कुरआन में केवल अपने स्वामी अल्लाह का उल्लेख करता है, तो वे मुंह फेर लेते हैं और सच से दूर भागते हैं। हमें सब पता है कि वे क्या और कब कान लगाकर सुनते हैं और फिर वे दुष्ट कानाफूसी करते हुए कहते हैं, ''तुम लोग एक विक्षिप्त व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो!'' देख, वे तेरी तुलना किससे कर रहे हैं। वास्तव में वे भटक गये हैं और मार्ग नहीं पा सकते।*

मुहम्मद के प्रतिद्वंद्वियों का बहुधा उद्धरण एवं उल्लेख दिया जाता हैः

43:29 *मैंने इन व्यक्तियों और उनके पूर्वजों को जीवन का आनंद भोगने की अनुमति तब तक के लिये दी है, जब तक कि उनके पास सत्य (कुरआन) न आ जाए और कोई रसूल (नबी) उस सत्य की बातों को स्पष्ट न कर दे।*

43:30 पर जब सत्य आ गया, तो वे कहने लगे, ''यह तो कपटजाल है। हम इसे अस्वीकार करते हैं।'' और वे कहते हैं, ''क्यों यह कुरआन दोनों नगरों [मक्का और ताइफ़] के किसी महान व्यक्ति के पास नहीं उतारी गयी?''

21:1 *मनुष्यों के अंतिम लेखा-जोखा का समय उसके निकट है, और तब भी वह निरंतर मुंह फेरे हुए है। अल्लाह से उसे जो भी चेतावनी मिलती है, उसका उपहास किया जाता है। ये दुष्ट चुपके-चुपके बात करते हैं और कहते हैं, ''वह तुम लोगों जैसा ही मनुष्य है, या कुछ और है? क्या तुम लोग खुली आंखों से देखकर भी इस जादू, छल के चक्कर में पड़ोगे?*

21:4 *उनसे कह दे: मेरा अल्लाह सब जानता है कि आकाश पर और धरती पर क्या कहा जा रहा है। वह सब सुन रहा है और सबकुछ जानने वाला है।*

21:5 वे कहते हैं, ''सुनो, ये कुछ और नहीं, बस बिखरे सपने हैं। उसने अपने मन से इसे गढ़ लिया है। वह एक विक्षिप्त कवि भर है! ऐसा नहीं है तो, जैसे पहले के नबी चिह्नों के साथ भेजे गये थे, वो भी वैसा कुछ साक्ष्य लाये! जिन नगरों का हमने विनाश कर दिया, उनके समय तक हमारी चेतावनियों के बाद भी उनमें से एक भी नगर के लोग ईमान (अर्थात अल्लाह एवं उसके संदेश व उसके रसूल को मानना) नहीं लाये। तो क्या ये लोग ईमान लायेंगे?

अब कुरआन की आयतें इस्लाम की विधि (कानूनी) प्रणाली (शरिया) के आधार गढ़ने लगी थीं।

17:31 *अपने बच्चों को इसलिये नहीं मारो कि तुम्हें निर्धनता से भय लगता है। हम जैसे तुम्हारी व्यवस्था करेंगे, वैसे ही उनके लिये भी व्यवस्था करेंगे। निश्चित ही, उन्हें मार डालना भयानक पाप है।*

17:32 *दूसरे लोगों से शारीरिक संबंध न बनाओ। यह घृणित काम है और ऐसी बुराई है, जो दूसरी बुराइयों की ओर ले जाती है।*

17:33 *जिसे भी अल्लाह ने मारना वर्जित किया है, उसकी (मुसलमान की) हत्या न करो, जब तक कि ऐसा करना न्याय के उद्देश्यों [इस्लाम छोड़ने का दंड, हत्या का दंड] न हो। जिस किसी की भी हत्या हो जाती है, उसके परिजनों को हमने अधिकार दिया है कि या तो वे हत्यारे को क्षमा कर दें अथवा दंड की मांग करें, परंतु हम उसे हत्या करने में सीमाओं को लांघने की अनुमति नहीं देते हैं, क्योंकि कानून द्वारा उसकी सहायता की जाएगी।*

अध्याय 4

8:20 मोमिनो! अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञाकारी रहो और अब जब तुम पर सत्य आ गया है तो अपना मुंह मत फेरो। उनके जैसे मत बनो, जो कहते हैं, ''हम सुन रहे हैं,'' पर आज्ञा का पालन नहीं करते हैं।

I217 कुरैशों की प्रत्येक जाति अब उन मुसलमानों का उत्पीड़न करने लगी, जिनके पास तनिक भी ताकत आ गयी थी। मक्का के लोग मुहम्मद पर विश्वास नहीं करते थे।

34:43 *जब हमारी आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं, तो वे कहते हैं, ''यह तो केवल एक व्यक्ति है, जो तुम्हें अपने पूर्वजों के धर्म से दूर कर देना चाहता है।'' वे कहते हैं, ''यह (कुरआन) केवल झूठ है।'' और जब सत्य सुनते हैं, तो काफिर कहते हैं, ''यह कुछ नहीं, बस साफ-साफ जादू-टोना है।'' वैसे हमने इन्हें (मक्कावासियों) को इससे पहले कोई पुस्तक नहीं दी है कि वे गहनता से पढ़ें, और न ही हमने उनके पास आगाह करने के लिये कोई रसूल भेजा है। उनसे पहले जिन्होंने सत्य (इस्लाम) को झुठलाया, पर वे उसका दसवां अंश भी हमें नहीं दे सके, जो हमने उन्हें दिया था। जब उन्होंने हमारे रसूलों को अस्वीकार किया, तो उन पर मेरा प्रतिशोध भयानक था।*

34:46 *मैं तुम लोगों को एक बात का परामर्श दे रहा हूं: कि तुम अल्लाह के सामने खड़े हो जाओ और विचार करो। तुम्हारे सह नगरवासी (मुहम्मद) में कोई विक्षिप्तता नहीं है। वह केवल तुम्हें आगाह करने आया है, जिससे कि तुम कठोर दंड से बच सको।*

यह आयत मुसलमान को अपने मजहब को लेकर उत्पीड़न से बचने की अनुमति देती है। कोई मुसलमान किसी काफिर पर इस्लाम के विषय में सच्ची मान्यताएं थोप सकता है।

3:28 *उनसे कह दे: भले ही तुम अपने मन की बात को छिपा लो अथवा उजागर कर दो, पर अल्लाह सब जानता है। वह आकाशों और धरती पर सब बातों को जानता है। सभी वस्तुओं पर अल्लाह का ही प्रभुत्व है।*

I235 एक कहानीकार ने कहा कि वह और अच्छी पुरानी कहानियां सुना सकता है। मुहम्मद इस प्रतियोगिता में मेरे सामने नहीं ठहर पायेगा। वह कहानीकार काफिर था। कुरआन ने सभी काफिरों सहित उस कहानीकार की निंदा की।

31:6 *ऐसे भी लोग हैं, जो बिना जाने-समझे व्यर्थ की कहानियों में लगे रहते हैं और लोगों को अल्लाह के पथ से भटकाकर तिरस्कार की ओर ले जाते हैं। [मक्का में एक फारसी कहानीकार ने कहा था कि उसकी कहानियां मुहम्मद की कहानियों से अच्छी हैं] । उनके लिये अपमानजनक दंड होगा। जब उस पर हमारी आयतें उतारी गयीं, तो अहंकार में उसने मुंह फेर लिया, जैसे कि उसने सुना ही न हो, मानों उसके कानों में बहरापन हो। उसे सूचित कर दो कि इसका भयानक दंड मिलेगा। जो*

विश्वास लायेंगे और अच्छे काम करेंगे, वे जन्नत में आनंद करेंगे, जहां वे सदा के लिये रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वचन है और वही प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है।

31:10 *उसने बिना खंभों के आकाश बना दिये, जिसे कोई भी देख सकता है और धरती पर पहाड़ गाड़ दिया, जिससे कि धरती हिले नहीं। उसने धरती पर विभिन्न प्रकार के पशुओं को बिखेर दिये। उसने आकाशों से वर्षा उतारी और प्रत्येक प्रकार के पौधों को उगाया। यह अल्लाह की रचना है। अब मुझे दिखाओ, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और ने क्या बनाया है। कुपथ पर रहने वाले प्रत्यक्षतः गलती कर रहे हैं।*

कुरआन अल्लाह के गुण का वर्णन करता है।

40:61 *अल्लाह ने रात बनायी कि तुम आराम कर सको और प्रकाश देने के लिये दिन बनाये कि तुम देख सको। अल्लाह मानवों के बड़ा उपकारी है, किंतु अधिकांश मनुष्य उसके प्रति कृतज्ञता नहीं प्रकट करते। ऐसा है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा स्वामी, सबकुछ रचने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त और कुछ श्रेष्ठ नहीं है। तब तुम लोग क्यों सत्य से मुंह मोड़ रहे हो? जो अल्लाह की आयतों को अस्वीकार करते हैं, वे बहका दिये जाते हैं।*

40:64 *अल्लाह ने तुम्हारे आराम करने के लिये धरती बनायी और इसके ऊपर आकाश बनाये। उसने तुम्हें बनाया और तुम्हारा रूप सुंदर बनाया और अच्छी-अच्छी वस्तुएं प्रदान कर तुम्हारी व्यवस्थाएं कीं। यह है तुम्हारा अल्लाह। अल्लाह कृपा, संसारों का स्वामी। वह जीवित है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। सम्पूर्ण समर्पण के साथ उसे पुकारो। अल्लाह की महिमा गाओ, वह सभी संसारों का स्वामी है।*

40:66 *उनसे कह दे: जब मेरे अल्लाह की ओर से मेरे पास स्पष्ट आयतें आ गयीं, तो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत करना मेरे लिये वर्जित है और मुझे सभी संसारों के स्वामी अल्लाह के सिर झुकाने का आदेश मिला है।*

शैतानी आयतें

मुहम्मद सदा यही सोचता रहता था कि कैसे वह मक्कावासियों को अपने पाले में ले आये। उसे समझ में आ रहा था कि कुरैशों के तीन देवता उसके अल्लाह के बीच में आ सकते हैं। मुहम्मद ने कहा, ''ये उन्नत ऊंचा उड़ने वाले सारस हैं, जिनका बीच में आना स्वीकृत है।'' मक्का के लोग प्रसन्न और आनंदित हो गये। शैतान ने मुहम्मद को मूर्ख बना दिया।

22:52 *तुझसे पहले हमने कभी ऐसा कोई नबी या रसूल नहीं भेजा, जिसको शैतान ने बुराई की ओर भटकाने का प्रयास न किया हो, परंतु अल्लाह शैतान को प्रयास को विफल कर देगा। अल्लाह अपनी आयतों को सुदृढ़ कर देगा, क्योंकि वही जानता है, वही तत्वज्ञ है। अल्लाह शैतान की बातों को उनके लिये भटकाव का चारा बना देता है, जिनके मन में मैल है, जिनके हृदय कठोर हैं। वास्तव में, यही कारण है कि काफिर इतना विरोध करते हैं। यह परीक्षा है उनकी जिन्हें ज्ञान दिया गया है, जिससे कि वे ही जान जाएं कि कुरआन उसके अल्लाह से आया है और वे इस पर विश्वास ला सकें और अल्लाह के आगे सिर झुकाकर समर्पण कर सकें। अल्लाह निश्चित ही मोमिनों को सही पथ की ओर ले जाएगा।*

22:55 *पर काफिर कभी संदेह करना नहीं छोड़ेंगे, भले ही अचानक उन पर कयामत आ आये या दंड के रूप में उन पर विपत्ति टूट पड़े। उस दिन अल्लाह का शासन पूर्ण होगा। वह उनका निर्णय करेगा। और जिन्होंने विश्वास किया, अच्छे काम*

किये, वे आनंद के जन्नत की ओर ले जाए जाएंगे। जहां काफिरों की बात है, जिन्होंने हमारी आयतों को झूठ बताया, वे अपमानजनक दंड पायेंगे।

कुरआन निरंतर चेतावनी देती है कि मुसलमान किसे अपना मित्र बनाये और किसे नहीं। इसमें 12 आयतें हैं, जो कहती हैं कि मुसलमान किसी काफिर को अपना मित्र न बनाये।

9:23 *हे मोमिनो, यदि तुम्हारे पिता और भाई भी इस्लाम की अपेक्षा कुफ्र (अन्य धर्म) को प्रिय मानते हैं, तो उन्हें भी अपना सहयोगी या मित्र न बनाओ। उन्हें जो भी अपना मित्र बना रहा है, वह गुनाह कर रहा है। उनसे कहोः यदि तुम्हें अपने पिता, बेटे, भाई, बीबियां और परिजन, नातेदार और जो तुमने धन कमाया है वह, जो भवन जिसमें तुम आनंद भोग रहे हो वह, अल्लाह, उसके रसूल और अल्लाह के पथ पर जाने के प्रयास से अधिक प्रिय है, तो अल्लाह का निर्णय होने की प्रतीक्षा करो। अल्लाह ऐसे लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।*

3:28 *मोमिनों को एक मुसलमान की अपेक्षा काफिर को अपना मित्र या सहयोगी नहीं बनाना चाहिए। जो मोमिन ऐसा करेंगे, उन्हें अल्लाह से कोई संरक्षण नहीं मिलेगा। हां, यदि तुम्हें काफिरों से भय लगता हो, तो उन्हें अपना मित्र या सहयोगी बनाने का दिखावा तो करो, पर भीतर से उन्हें कभी मित्र या सहयोगी न मानो। अल्लाह तुम्हें चेतावनी देता है कि अल्लाह से डरो, क्योंकि सब उसी के पास लौटकर जाएगा।*

3:118 *मोमिनो! अपने लोगों (मुसलमानों) के अतिरिक्त किसी को मित्र या सहयोगी न बनाओ। काफिर तब तक नहीं रुकेंगे, जब तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से दूर न कर दें। वे और कुछ नहीं, बस तुम्हारा नाश चाहते हैं। उनकी बातों से तुम्हारे प्रति उनकी घृणा स्पष्ट होती है, वैसे तुम्हारे प्रति उससे भी अधिक घृणा उनके मन में छिपी है। हमने अपनी आयतें तुम्हारे पास स्पष्ट ला दी हैं। इसलिये, आयतों को समझने के लिये सर्वोत्तम प्रयास करो।*

5:57 *हे मोमिनो, तुम उन लोगों को मित्र या सहायक न बनाओ, जिन्हें तुमसे पहले ग्रंथ [यहूदी और ईसाई] दिये गये थे। उनको न अपनाओ, जिन्होंने तुम्हारे मजहब का उपहास किया था, खेल बनाया था। तुम उन्हें भी अपना मित्र या सहायक न बनाओ, जो काफिर हैं। यदि तुम सच्चे मोमिन हो तो अल्लाह से डरो। जब तुम अजान देते हो, तो वे इसका उपहास करते हैं, व्यंग्य करते हैं। ऐसा इसलिये है, क्योंकि वे वही लोग हैं, जिनके पास समझ नहीं है।*

I235 हाट (बाजार) में एक ईसाई दास था, जो एक बूथ चलाता था। मुहम्मद उसके पास जाता और लंबी बात करता था। इससे कुरैश कहने लगे कि मुहम्मद ने कुरआन में जो लिखा है, वो उसी ईसाई से सुना है।

इस पर कुरआन की प्रतिक्रियाः

32:1 *अलिफ। लाम। मीम। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह पुस्तक सभी संसारों के स्वामी अल्लाह द्वारा उतारी गयी है। वे क्या कह रहे हैं कि, ''उस (मुहम्मद) ने यह पुस्तक अपने मन से गढ़ डाली है?'' नहीं। यह सत्य (कुरआन) तुम्हारे अल्लाह द्वारा भेजी गयी है, जिससे कि तुम उन लोगों को आगाह कर सको, जिन्हें अभी तक आगाह नहीं किया गया है, जिससे कि उनका पथप्रदर्शन हो।*

रात की यात्रा

17:1 *पवित्र है वह अल्लाह, जिसने एक रात अपने सेवक को मक्का के पवित्र मस्जिद मस्जिदे-हराम से सबसे दूर स्थित मस्जिदे अक्सा (येरूशलम) की यात्रा करायी। उस (येरूशलम) के आसपास हमने (अल्लाह) कृपा बरसायी कि वह हमारे चिह्न देख सके: वही और केवल वही सबकुछ सुनता है और देखता है।*

I264 जिबराइल मुहम्मद को येरूशलम के उस मंदिर स्थल तक ले गया। वहां उस मंदिर में ईसा, अब्राहम, मूसा और अन्य पैगम्बर थे। मुहम्मद ने उन सबको नमाज पढ़ाई। इसके बाद जिबराइल मुहम्मद को सातवें जन्नत तक ले गया।

I271 जब मुहम्मद सातवें जन्नत में पहुंचा, तो अल्लाह ने उसे दिन में 50 बार नमाज पढ़ने का कर्त्तव्य दिया। जब वह लौटा तो मूसा ने पूछा अल्लाह ने उसे कितनी बार नमाज पढ़ने को कहा। जब मूसा ने सुना कि 50 बार, तो बोला, ''नमाज भारी काम होता है, जबकि तुम्हारे लोग कमजोर हैं। वापस जाओ और अल्लाह से अपने और अपने समुदाय के लिये नमाज की संख्या कम करने को कहो। इस प्रकार वह बार-बार जाता और अल्लाह नमाज की संख्या कुछ कम कर देता। अंततः अल्लाह ने नमाज की संख्या पांच कर दी। उसी रात की यात्रा में हमने मुहम्मद को यहूदी पैगम्बरों के उत्तराधिकारी के रूप में देखा।

यहां हम देखते हैं कि मुहम्मद की आवश्यकतानुसार नूह और मूसा की कहानी ले ली गयी।

10:71 *उन्हें नूह की कहानी बता कि कैसे जब उसने अपने लोगों से कहा, ''हे, मेरे लोगो, यदि मेरा तुम लोगों के बीच रहना और अल्लाह के चिह्नों का स्मरण कराना तुम्हें अखरता है तो भी मैं अब भी अल्लाह पर ही विश्वास करता हूं। तुम लोग मेरे विरुद्ध जो करना चाहो करो, चाहो तो अपने नकली ईश्वरों को भी बुला लो। तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छिपी न रह जाए। इसके बाद मेरे बारे में जो कुछ करना है कर जाओ, इस काम में विलंब न करो। इसके बाद यदि तुम लोगों ने मुझसे मुंह फेरा, तो जान लो मैं तुमसे कुछ मांग नहीं रहा हूं। मुझे जो मिलना है, वह अल्लाह देगा। मैं अल्लाह की इच्छा के आगे सिर झुकाने का आदेश मिला है।'' परंतु उन लोगों ने उसे झूठा समझकर व्यवहार किया। हमने उसे और उसके साथ नाव में जो सवार थे, उन्हें बचा लिया तथा हमने उन्हें धरती का उत्तराधिकारी बना दिया। जबकि उन लोगों को समुद्र में डुबा दिया, जिन्होंने हमारी आयतों को झठलाया था। देखा नहीं तुमने, जिनको चेतावनी दी गयी थी, उनका अंत कैसा हुआ?*

10:74 *इसके बाद हमने उसके (नूह) पश्चात बहुत से रसूलों को उनकी जाति के पास भेजा। वे उनके पास अल्लाह के प्रत्यक्ष चिह्न लेकर आये, परंतु जिसे उन्होंने पहले झुठला दिया था उन पर वे विश्वास नहीं करते। इसलिये हमने उन अवज्ञाकारियों के मन-मस्तिष्क को बंद कर दिया। फिर हमने अपने चिह्नों के साथ मूसा और ऐरन (हारून) को फिरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा, पर वे अहंकारी और दोशी लोग थे। जब उनके पास हमारा भेजा हुआ सत्य आ गया, तो भी वे बोले, ''यह तो खुला जादू-टोना है।''*

10:77 *मूसा ने कहा, ''जब तुम्हारे पास सत्य आया तो तुम सबने क्या कहा था कि 'ये जादू-टोना है?'' पर जादूगर कभी सफल नहीं होते हैं।''*

10:78 *उन्होंने कहा, ''क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हमें हमारे पूर्वजों के धर्म से दूर कर दो, जिससे कि तुम और तुम्हारा भाई इस स्थान पर प्रभुत्व जमा लें? हम तुम पर विश्वास नहीं करने वाले हैं।''*

10:79 *फिरऔन ने कहा, ''जितने भी कुशल जादूगर हैं, उन्हें मेरे पास लाओ।'' जब जादूगर पहुंचे, तो मूसा ने उनसे कहा, ''तुम लोगों को जो भी जादू आता है, दिखाओ।''*

10:81 *और जब उन्होंने जादू दिखाया तो मूसा बोला, ''जो भी जादू तुम किये हो, अल्लाह उन सबको व्यर्थ कर देगा। अल्लाह दुष्टता करने वालों के कर्मों को नहीं सुधारता। अल्लाह अपनी बातों की सच्चाई की प्रमाणित करेगा, यद्यपि गुनाहगार इसके भी विरोध में होंगे।'' और फिरऔन के लोगों में से कुछ बच्चों के अतिरिक्त किसी ने मूसा की बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि वे डर रहे थे कि फिरऔन और दरबारी उनका उत्पीड़न करेंगे। फिरऔन वहां का अत्याचारी था और उसने अति की थी।*

10:84 *और मूसा ने कहा, ''हे मेरे लोगो, काश! तुम अल्लाह पर विश्वास लाये हो, तो उसी में विश्वास करो, उसी के आगे समर्पण करो, आज्ञाकारी रहो।''*

10:85 *उन लोगों ने कहा, ''हमने अल्लाह में ही विश्वास किया है। हे मेरे स्वामी, हमें अन्यायी लोगों के उत्पीड़न का शिकार न बनने दे और अपनी दया से हमें काफिरों से बचा ले।''*

इस्लाम यहूदियों को परिभाषित करता है।

45:16 *बहुत पहले हमने इजराइल के बच्चों को तौरात, राज्य और पैगम्बरी दी और हमने उनके लिये अच्छी वस्तुओं की व्यवस्था की। हमने उन्हें सभी जातियों से ऊपर वरीयता दी। हमने उन्हें स्पष्ट आदेश दिया, परंतु ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी वे अपने विद्वेष के कारण उससे दूर होने लगे। जिन बातों पर वे दूर हो गये, उन पर कयामत के दिन तुम्हारा स्वामी ही निर्णय करेगा।*

7:163 *उनसे उस नगर के बारे में पूछो, समुद्र (लाल सागर) के किनारे खड़ा था, जब उसके निवासी सब्त (शनिवार) के दिन के विषय में जो आज्ञा है, उसका उल्लंघन कर रहे थे। मछलियां सब्त के उस दिन पानी के ऊपर तैरकर उनके पास आ जाती थीं और सब्त का दिन न होकर कोई अन्य दिन हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उनकी अवज्ञा के कारण हम उनकी परीक्षा ले रहे थे। (यहूदियों के लिये आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे।) और जब उनमें से कुछ ने कहा, ''तुम उनको क्यों समझा रहे हो, जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला, कठोर दंड देने वाला है? उन्होंने कहा, 'हम अपने अल्लाह के लिये अपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं, जिससे वे बुराइयों से दूर हो जाएं अर्थात आज्ञाकारी हो जाएं।''*

7:165 *उन्हें जो चेतावनियां [सब्त के दिन शिकार न करने की] दी गयी थीं, उन्होंने जब उनकी उपेक्षा की, तो हमने उन्हें तो बचा लिया, जिन्होंने आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया था, किंतु जिन्होंने अवज्ञा की थी, उन्हें दंडित किया। पर जब वे आगे भी वही करते रहे, जिसे करने से मना किया गया था, तो हमने उनसे कहा, ''लंगूर बन जा, तिरस्कृत और घृणित हो। [तब यहूदी मानव से लंगूर बन गये]*

7:167 *इसके बाद अल्लाह ने घोषणा की कि जब तक कयामत का दिन नहीं आ जाता, वह दूसरों से यहूदियों को यातना दिलवायेगा, क्योंकि अल्लाह शीघ्र दंड देने वाला भी है और निश्चित रूप से वह क्षमाशील व दयावान भी है। और हमने उन्हें धरती पर कई जातियों में विभक्त कर दिया। उनमें कुछ सदाचारी थे और कुछ नहीं थे। हमने सम्पन्नता और विपन्नता दोनों देकर उनकी परीक्षा ली, जिससे कि वे हमारे पास लौट आयें।*

I272 मुहम्मद इस्लाम का प्रचार करता रहा और प्राचीन अरबी धर्म की निंदा करता रहा। कुरैशों में ऐसे लोग भी थे, जो अपनी संस्कृति और धर्म का बचाव करते थे और उसके साथ तर्क करते थे। मुहम्मद उनको उपहास करने वाला कहता था और उनको यह कहकर कोसता रहता था, ''हे अल्लाह, इन्हें अंधा बना दे और इनके बेटों को मार दे।'' कुरआन मक्कावासियों के प्रतिरोध को षडयंत्र और योजना कहकर उल्लेख करता है।

6:123, 124 और इसी प्रकार हमने प्रत्येक नगर में बड़े दुष्टों को लगा दिया, जिससे कि वे षडयंत्र रचें, पर वे नहीं जानते कि वे अपने ही विरुद्ध षडयंत्र रच रहे हैं। जब उनके पास कोई चिह्न आता है, तो वे कहते हैं, ''जो अल्लाह के रसूलों प्रदान किया गया है, उसी के समान चिह्न जब तक हमारे पास नहीं आएगा, हम कदापि विश्वास न करेंगे।'' अल्लाह ही सर्वोत्तम जानता है कि अपना संदेश पहुंचाने का काम किससे ले। वे काफिर तब अपमानित होंगे, जब उनको अपने षडयंत्रों के लिये दंड मिलेगा।

6:125 *जिसको अल्लाह पथ दिखाना चाहता है, उसके मन को इस्लाम लाने के लिये खोल देगा। पर जिनको वह भटकाना चाहता है, उनके मन-मस्तिष्क को संकीर्ण कर देगा। मानों कि वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा हो। अल्लाह काफिरों को इसी प्रकार दंडित करता है। और यही आपके स्वामी का सीधा पथ है। जो सुनना और देखना चाहते हैं, उनके लिये हमने अपनी आयतें विस्तार से भेजी हैं। अपने स्वामी के साथ उनका ठिकाना शांति का घर होगा। उनके कर्मों के कारण अल्लाह उनकी रक्षा करने वाला मित्र होगा।*

और यदि मुहम्मद वास्तव में रसूल था, तो उन लोगों शब्दों के अतिरिक्त कुछ और क्यों नहीं दिखा पाया। वह कोई चमत्कार क्यों नहीं दिखा पाया?

13:27 *काफिर कहते हैं: इस पर इसके स्वामी ने कोई चिह्न क्यों नहीं उतारा? तो उनसे कह दो: अल्लाह जिसे चाहेगा, उसे वास्तव में भटका देगा और जो उसकी ओर आएगा, उसे मार्ग दिखा दिखायेगा। वे ईमान लाते हैं और उनका मन अल्लाह का स्मरण करने से शांति पाता है। जो ईमान लाते हैं और हलाल काम करते हैं, उन पर कृपा होगी और अंत में उन्हें आनंद की प्राप्ति होगी।*

13:30 *इसलिये, हमने तुझे एक ऐसी जाति में रसूल बनाकर भेजा है, जिसके पहले बहुत सी जातियां आ चुकी हैं। जिससे कि तू उन्हें हमारी आयतें सुना। भले ही वे दयावान अल्लाह को अस्वीकार करते हैं, तो भी उनसे कह: वह मेरा स्वामी है; उसके अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है। मैं उसी में विश्वास करता हूं और उसी के पास मैं लौटकर जाऊंगा।*

13:31 *यदि कोई ऐसा कुरआन होता, जो पर्वत खिसका देता या धरती खण्ड-खण्ड कर देता अथवा मृत व्यक्तियों को बुलवा देता, तो भी वे विश्वास नहीं करते! बात यह है कि सब अधिकार अल्लाह को ही हैं! तो क्या जो विश्वास (ईमान) लाये हैं, वो निराश नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधे पथ पर ला देता? जब तक अल्लाह की इच्छा पूरी नहीं होगी, काफिरों के कर्मों के कारण उन पर सदा आपदा आती रहेगी या फिर उनके घरों में विपत्ति आती रहेगी। अल्लाह अपना वचन पूरा करने में विफल नहीं होगा।*

13:32 *तुझसे पहले बहुत से पैगम्बर आये, जिनका उपहास किया गया। लंबे समय तक हमने काफिरों को बिना दंडित किये छोड़ रखा था, परंतु अंततः हमने उन्हें दंडित किया। देख, इसके बाद हमारा दंड कितना भयानक था!*

मक्कावासियों ने मुहम्मद से कहा कि यदि कोई कयामत का दिन आने वाला है, तो कहो अपने अल्लाह से कि इसे आज ही ला दे और सिद्ध कर दे कि मुहम्मद सच में रसूल है।

29:44 *अल्लाह ने सत्य के साथ आकाश और धरती बनाये। वास्तव में, विश्वास लाने वालों के लिये इसमें बड़ा प्रमाण है।*

29:47 *इसी प्रकार हमने तेरे [मुहम्मद] के पास यह पुस्तक [कुरआन] उतारी है। उन्हें [यहूदियों को] हमने विश्वास लाने के लिये ग्रंथ दिये थे कि वे उस पर विश्वास लायें, और अरब के दूसरे लोग उस पर विश्वास लाये भी हैं, परंतु काफिर हमारी आयतों को झुठलाते हैं।*

29:48 *तू [मुहम्मद] उन ग्रंथों को न पढ़ सकता था और न ही तू वैसा कोई ग्रंथ अपने हाथों से लिख सकता था। यदि ऐसा होता, तो आलोचक लोग इसे व्यर्थ मानकर लेते और इस पर संदेह करते। किंतु जिनके पास ज्ञान पहुंचा है, उनके हृदय में ये आयतें स्पष्ट हैं। कोई और नहीं, अन्यायी ही हमारी आयतों को झुठलाते हैं। वे कहते हैं, ''तेरे अल्लाह ने तुझ पर प्रमाण क्यों नहीं उतारे?'' उनसे कह दे: प्रमाण अल्लाह के ही अधिकार में हैं। मैं तो बस तुम लोगों को आगाह करने वाला हूं। क्या उनके लिये इतना पर्याप्त नहीं है कि हमने उनको सुनाने के लिये यह पुस्तक उतारी है? जो विश्वास लाये हैं, उनके लिये यह दया है और आगाह करने वाला है। उनसे कह दे: तुम्हारे और मेरे बीच अल्लाह का साक्ष्य ही पर्याप्त है। वह सबकुछ जानता है, जो आकाशों में है वह भी और जो धरती पर है वह भी। जो झूठ में विश्वास करते हैं और अल्लाह को अस्वीकार करते हैं, वे वही हैं जिनका विनाश होगा।*

29:53 *वे तुझे चुनौती देंगे कि शीघ्र दंड ले आओ, तो जानें। यदि इसके लिये समय निर्धारित न होता, तो अब तक उन पर दंड अर्थात विपत्ति आ चुकी होती। विपत्ति उन पर अचानक आयेगी, जब वे इसके बारे में सोच भी न रहे होंगे। वे तुमसे कहेंगे कि शीघ्र दंड लाकर दिखाओ, पर काफिरों को जहन्नुम घेर लेगा। एक दिन उनके चारों ओर से यातना उन्हें घेर लेगा, ऊपर से भी और नीचे से भी, तब अल्लाह कहेगा, ''अब अपने कर्मों का फल चखो।''*

29:56 *हे विश्वास (ईमान) लाने वाले मेरे सेवको, मेरी धरती विशाल है; इसलिये मेरी सेवा करो। प्रत्येक मनुष्य को मृत्यु का स्वाद चखना है। इसके बाद तुम हमारे पास ही वापस आओगे। जो विश्वास लाये हैं और सही काम किये हैं, उन्हें हम महलों वाले ऐसे जन्नत में रखेंगे, जहां नीचे नदियां बहती हैं। वे वहां सदा के लिये रहेंगे। जो धैर्यपूर्वक सहते हैं और अल्लाह में अपना विश्वास रखते हैं, उनके कर्मों का कितना सुंदर प्रतिफल मिलेगा।*

मुहम्मद निरंतर कहता रहा कि प्राचीन अरबी संस्कृतियों के लोगों ने अपने रसूलों को सुनने से अस्वीकार किया था। ऐसे प्रत्येक प्रकरण में अल्लाह ने भयानक यातना वाला दंड दिया।

41:13 *किंतु यदि वे मुंह फेर रहे हैं, तो उनसे कह दे, ''मैंने तुम्हें वैसी ही विपत्ति की चेतावनी दे दी है, जैसे कि आद [मक्का के उत्तर में आद ले पर स्थित व्यापार का अति प्राचीन मार्ग] और समूद [मदीना के समीप नाबूत नामक नष्ट नगर] को यातना भरा दंड मिला था।''*

41:14 *जब चारों ओर से उनके पैगम्बर यह कहते हुए आये कि 'केवल अल्लाह की इबादत करो', तो वे कहते थे, ''जो हमारा ईश्वर है, यदि उसकी इच्छा होती, तो उसने सीधे हमारे पास देवदूत भेजे होते, इसलिये जो संदेश तुम लाये हो, उसे हम नहीं मानेंगे।''*

41:15 *जहां तक आद के लोगों की बात है, तो वे लोग धरती पर अनुचित रूप से अहंकारी हो गये थे और कहते थे, ''भला हमसे अधिक बलशाली कौन है?'' क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने उनको बनाया, वो उनसे अधिक बलशाली है? आज भी वे हमारी आयतों को मानने से अस्वीकार कर रहे हैं! इसलिये हमने विपत्ति के दिनों में उन पर भयानक अंधड़ भेजा, जिससे कि हम उन्हें इस जीवन में अपमान के दंड का स्वाद चखा सकें। मरने के बाद उनको मिलने वाला दंड तो और भी अपमानजनक होगा। उन्हें कोई सहायता नहीं दी जाएगी।*

41:17 *हमने समूद [मदीना के समीप नाबूत नामक नष्ट नगर] के लोगों को सही मार्ग दिखाया था, परंतु उन लोगों ने सत्य के मार्ग पर चलने की अपेक्षा अंधे बने रहना चुना। इसलिये अपमान की यातना उन पर आयी, क्योंकि उनके कर्म ही ऐसे थे। फिर भी, जो ईमान लाये और सही दीन पर चले, उन्हें हमने बचा लिया। उस दिन जब अल्लाह के शत्रुओं को आग में झोंकने के लिये एकत्र किया जाएगा, तो समूहों में उनकी पहचान-परेड करायी जाएगी। जब वे आग के पास पहुंच जाएंगे, तो जो उन्होंने किया है, उसके विरोध में उनके ही कान, आंखें और चमड़ी साक्ष्य देंगी।*

41:21 *वे लोग अपनी चमड़ियों से कहेंगे, ''तुम हमारे ही विरुद्ध गवाही क्यों दे रहे हो?'' और तब उनकी चमड़ियां बोलेंगी, ''जिस अल्लाह ने सभी प्राणियों को बोलने की सामर्थ्य दी है, उसी ने हमें भी बोलने की सामर्थ्य दी है। प्रथम बार उसी ने तुम्हें जन्म दिया और तुम लोग उसी के पास लौटकर जाओगे। तुम लोगों ने अपने को छिपाने का प्रयास नहीं किया, जिससे कि तुम्हारे कान, आंखें और चमड़ियां तुम्हारे विरुद्ध गवाही दें। किंतु तुम लोगों का यह बुरा विचार ख्कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य ईश्वर हैं, तुम्हारा विनाश लाया है और अब तुम नष्ट हो चुके लोगों में हो।''*

41:24 *और अब वे भले ही यह बुरा विचार छोड़ भी दें, तो भी जहन्नुम की आग ही उनका ठिकाना होगा। यदि वे क्षमा मांगें, तो भी उन्हें क्षमा नहीं किया जाएगा। हमने इस संसार में उन्हें ऐसे साथी दे दिये, जिन्होंने उनके वर्तमान और अतीत के अच्छा होने का भ्रम फैलाया। उनकी भी वैसी ही दुर्गति भरी नियति है, जैसी कि जिन्नों और मनुष्यों की पिछली पीढ़ियों की थी। निश्चित ही वे लोग गंवाने वाले हैं।*

मुहम्मद के संरक्षक और बीवी दोनों की मृत्यु

I278 अबू तालिब की मृत्यु के बाद मुहम्मद पर दबाव बढ़ गया। यह इस स्तर तक पहुंच गया कि एक कुरैश ने मुहम्मद पर धूल फेंक दिया। यह मुहम्मद के साथ अब तक का सबसे बुरा व्यवहार था।

उसकी बीवी ख़दीजा की मृत्यु से उस पर कोई राजनीतिक प्रभाव तो नहीं हुआ, किंतु यह उसके लिये आघात था। उसकी बीवी उसके राज जानने वाली मुख्य व्यक्ति थी और वह उसे सांत्वना देती थी।

मुहम्मद की नई शादियां

ख़दीजा की मृत्यु के तीन माह बाद ही मुहम्मद ने सऊदा से शादी की। सऊदा एक विधवा थी और मुसलमान बन गयी थी। अबू बक्र की एक बेटी थी आयशा, जो छह वर्ष की थी। सऊदा से शादी करने के कुछ ही समय बाद मुहम्मद ने आयशा से शादी कर ली, जो उसकी सबसे प्रिय बीवी बनने जा रही थी। जब तक वह 9 वर्ष की नहीं हो गयी, मुहम्मद उससे शारीरिक संबंध नहीं बना सका।

अध्याय 5

24:52 और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे, अल्लाह से डरेंगे और दीन पर चलेंगे, वही (अंत में) विजेता होंगे।

I279 अपने संरक्षक की मृत्यु हो जाने से मुहम्मद को राजनीतिक सहयोगियों की आवश्यकता पड़ी। मुहम्मद मक्का से लगभग पचास मील दूर स्थित ताइफ़ नगर गया। वहां जो तीन भाई राजनीतिक रूप से प्रभावशाली थे, उनसे मिला। मुहम्मद ने उनको इस्लाम की दावत दी और उनसे मक्कावासियों से संघर्ष करने में सहायता मांगी।

I280 चूंकि उन तीन भाइयों ने मुहम्मद की कोई बात नहीं मानी, तो वह उनसे गिड़गिड़ाया कि किसी को उसके यहां आने का पता न चले। पर ताइफ़ एक छोटा सा नगर था, तो कुछ ही दिनों में सबको पता चल गया कि मुहम्मद वहां है। मुहम्मद उन भाइयों और नगरवासियों को बुरा-भला कहने लगा, तो एक दिन एक भीड़ एकत्र हुई और उसे पत्थर मार-मार कर नगर से बाहर भगा दिया।

I281 वहां से निकलकर जब वह मक्का की आधी दूरी पर पहुंचा, तो रात वहीं रुक गया। जब रात में वह नमाज पढ़ने उठा, तो कुरआन कहती है कि उसकी नमाज सुनने जिन्न आये।

> 46:29 *हमने जिन्नों का एक दल भेजा, जिससे कि वे कुरआन सुन सकें। जब पढ़कर सुना दिया गया, तो वे आगाह करने वाले बनकर अपने लोगों के पास आये। उन्होंने कहा, ''हे लोगो! हमने ऐसी पुस्तक सुनी है, जो मूसा के बाद उतारी गयी है और जो अपने पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि करती है और सत्य व सीधे मार्ग की ओर ले जाने का प्रकाश दिखाती है। हे लोगो! अल्लाह के रसूल को सुनो और अल्लाह में ईमान लाओ। वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें यातनाभरे दंड से बचा लेगा।''*
>
> 46:32 *जो अल्लाह के रसूल की बात नहीं मानते हैं, वे धरती पर अल्लाह की योजना को विफल नहीं कर सकते हैं और अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई संरक्षक भी नहीं होगा। ऐसे लोग कुपथ पर हैं। क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को बनाया और उनको बनाने से नहीं थका, वह मृत को भी जीवित कर सकता है? हां, वह जो चाहे कर सकता है।*
>
> 46:34 *उस दिन (कयामत के दिन) काफिरों को आग के सामने लाया जाएगा और पूछा जाएगा, ''क्या ये सच नहीं है?'' वे कहेंगे, ''हां, यह सच है। हमारे स्वामी की शपथ!'' तब अल्लाह कहेगा, ''तुम ईमान नहीं लाये थे अर्थात कुफ्र कर रहे थे, तो अब दंड का स्वाद चखो।'' तो रसूल, जैसे कि पहले के रसूलों में धीरज और दृढ़ता थी, वैसे ही धीरज रख और उनके दंड के लिये शीघ्रता न कर। जब वे (काफिर) देखेंगे कि उनके लिये क्या रखा है, तो ऐसा होगा मानों उनका सांसारिक जीवन जो कुछ था, वह एक क्षण से अधिक नहीं था। क्या जो अवज्ञाकारी हैं (अर्थात जो अल्लाह, उसके रसूल और कुरआन को नहीं मानते और अल्लाह व उसके रसूल द्वारा वर्जित कार्य करने से भी नहीं रुकते हैं), उन्हीं का विनाश होगा?*

मक्का में पुनः मजहब का प्रचार

I282 जैसा कि सदियों से अरब के तीर्थयात्री मक्का आते थे, तो जब अरब के तीर्थयात्री मक्का आये, तो मुहम्मद उन तीर्थयात्रियों की एक भीड़ के पास गया और बोला कि वह अल्लाह का रसूल है और उनके लिये कुरआन ले आया है।

11:111 *और निश्चित ही अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा, क्योंकि वह जो भी कर रहे हैं, अल्लाह भली-भांति जानता है।*

11:112 *रसूल, जैसा कि तुझे और तेरे साथ अल्लाह की ओर आने वालों को आदेश दिया गया है, सही पथ पर चलता रह और गलत न कर। वह जानता है कि तुम सब क्या कर रहे हो। इस बात से डर कि जहन्नुम में आग तुम सबको घेर लेगा और बुरे लोगों पर आश्रित न रह। अल्लाह के अतिरिक्त तेरा कोई सहायक नहीं है और अल्लाह का विरोध करने पर तुझे कोई सहायता नहीं मिलेगी। भोर में नमाज पढ़, रात गहराने से पहले नमाज पढ़, क्योंकि ऐसे अच्छे कार्य बुरे कार्यों से दूर करते हैं। सोचने-समझने वाले सभी व्यक्तियों के लिये यह चेतावनी है। धीरज रख, क्योंकि अल्लाह दीन के पथ पर चलने वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं होने देगा।*

11:116 *तो जिन थोड़े से लोगों को हमने हानि होने से बचा लिया था, उनके अतिरिक्त तुझसे पहले की पीढ़ियों में इस धरती पर ऐसे सदाचारी क्यों न हुए, जो भ्रष्ट होने से बच सकते? बुरे लोग सांसारिक जीवन के स्वार्थी आनंद में लगे थे और पापी बन गये। तेरा अल्लाह ऐसा नहीं है कि यदि लोग सही पथ पर चलें, तो भी अत्याचार करते हुए उनके नगरों को नष्ट कर दे।*

11:118 *यदि अल्लाह चाहता, तो उसने समस्त मनुष्य जाति को एक ही समुदाय बना दिया होता, किंतु जिन पर तेरे अल्लाह ने दया की है, केवल वे ही उसका विरोध करना बंद करेंगे। इसी के लिये अल्लाह ने उन्हें बनाया है और अल्लाह का वचन पूरा होगाः ''मैं जहन्नुम को एकसाथ जिन्नों और मनुष्यों से भर दूंगा।''*

मुहम्मद मक्का के लोगों और तीर्थयात्रियों से अल्लाह की महानता का बखान करता रहा।

42:*1 ह़ा मीम। ऐन सीन क़ाफ़। अल्लाह ने तुम्हें वैसी ही प्रेरणा भेजी है, जैसा कि उसने तुमसे पहले के रसूलों को भेजा था। वह प्रभुत्वसम्पन्न व तत्वज्ञ है। जो कुछ भी आकाशों में है और जो कुछ भी धरती पर है, वह सब उसी का है। वह बड़ा उच्च और महान है।*

42:5 *जब फरिश्ते अपने अल्लाह का गुणगान करते हैं और जो धरती हैं उनके लिये क्षमा मांगते हैं, तो आकाश लगभग फट ही जाता है। अल्लाह क्षमाशील और दयावान है। किंतु जो उसको छोड़कर किसी और को अपना संरक्षक बनाते हैं, उन पर वह दृष्टि रखता है, पर तुम (रसूल) इसके लिये उत्तरदायी नहीं हो।*

42:7 *तो हमने तुझ पर एक अरबी कुरआन उतारी है, जिससे कि तू अपने पुरखों की भूमि [मक्का] और इसके चारों ओर लोगों को आगाह कर सके और उन्हें एकत्र होने के दिन (कयामत के दिन) के बारे में सावधान कर सके, जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है, जब कुछ जन्नत में जाएंगे और शेष लोग जहन्नुम की आग में झोंके जाएंगे।*

42:8 *यदि अल्लाह चाहता, तो उसने हम सबको एक ही समुदाय और एक ही जाति का बना दिया होता, किंतु वह जिस पर दया करना चाहता है उसी पर करता है। जहां तक बात बुरा करने वालों की है, तो उनका कोई मित्र या सहायक नहीं होगा। क्या उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे संरक्षक बना लिये हैं? अल्लाह ही संरक्षण करने वाला मित्र है। वह मृत को जीवित कर देता है और वह जो चाहे कर सकता है।*

42:10 *तुम्हारी मत-भिन्नताएं चाहे जो हों, निर्णय तो अल्लाह को ही करना है। यह अल्लाह है, मेरा स्वामी। मैं उसमें विश्वास करता है और उसकी ओर जाता हूं। वह आकाशों [संसारों] और धरती को बनाने वाला है और उसने तुममें से ही तुम्हारा जोड़ा (अर्थात नर को मादा और मादा को नर) दिया और पशुओं को भी जोड़ा दिया। इसी प्रकार वह तुम्हारी संख्या बढ़ाता है। अल्लाह के जैसा कुछ भी नहीं है। वह सबकुछ सुनने वाला और जानने वाला है। उसी के पास जन्नत और धरती दोनों की कुंजी है। वह जिसे चाहता है उसे मुक्त-हृदय से देता है अथवा जिसे चाहता है उसे वंचित कर देता है। वह सबकुछ जानता है।*

मदीना में प्रभुत्व और जिहाद का प्रारंभ

यद्यपि मदीना मक्का से लगभग दस दिन की यात्रा की दूरी पर था, पर प्राचीन काल से मदीना के लोग मक्का के मेले में आते थे। मदीना में आधे निवासी यहूदी और आधे अरबी थे। इन दोनों समूहों के बीच तनाव चलता रहता था। यहूदी पढ़े-लिखे थे और कृषक व शिल्पकार का काम करते थे। वे समृद्ध वर्ग में आते थे, किंतु धीरे-धीरे उनका प्रभुत्व घट रहा था। अतीत में अरबियों ने हमला किया था और यहूदियों का धन चुरा लिया था। यहूदियों ने यह कहते हुए हमले व लूटपाट का प्रतिकार किया कि एक दिन पैगम्बर आएगा और अरबों पर विजय प्राप्त करने में उनका नेतृत्व करेगा। ऐसी तनावपूर्ण स्थिति के बाद भी अरबी खज़रज जनजाति यहूदियों की सहयोगी थी।

I286 तो जब खज़रज जनजाति के कुछ सदस्य मुहम्मद से मिले, तो उन्होंने अपने लोगों से कहा, ''यही वह पैगम्बर है, जिसके बारे में यहूदी बात करते हैं। इससे पहले कि उसके साथ यहूदी चले जाएं, आओ हम उससे हाथ मिला लें।'' ये खज़रज सदस्य मुसलमान बन गये, जिससे उनकी जनजाति में विद्रोह और बिखराव हो गया। इन खज़रज सदस्यों को आशा थी कि इस्लाम उन्हें एक-साथ ले लायेगा और शीघ्र ही मदीना के प्रत्येक घर इस्लाम के बारे में सुना।

I289 अगले वर्ष जब मदीना के मुसलमान मक्का वापस आये, तो उन्होंने मुहम्मद के समक्ष शपथ ली। वे मदीना लौट गये और शीघ्र ही मदीना में बहुत से लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

I 294 अगले वर्ष मक्का के मेले में मदीना से नये धर्मांतरित मुसलमान आये। उन्होंने मुहम्मद के समक्ष शपथ ली। शपथ के बाद उनमें से एक ने मदीना के यहूदियों के साथ अब कटु हो चले संबंध के बारे में पूछा। यदि वे हथियारों से मुहम्मद की सहायता करें और वे सफल हो जाएं, तो क्या वह (मुहम्मद) मक्का वापस चला जाएगा? मुहम्मद मुस्कुराया और बोला, ''नहीं, रक्त (खून) रक्त होता है, और रक्त के बदले रक्त रक्त के बदले रक्त ही होता है।'' खूनी प्रतिशोध और इसकी बाध्यता उनमें (मुसलमानों में) सामान्य बात थी। ''जो तुमसे जंग करेंगे, मैं उनसे जंग करूंगा और जो तुम्हारे साथ शांति से रहेंगे, उनके साथ शांति से रहूंगा।''

जंग के आरंभ की बात

I294 कुरैश जनजाति में इस नये मजहब के बारे में जो तनाव था, उसे अब बातचीत के माध्यम से हल कर लिया गया था। एक-दूसरे का अपमान किया गया, एक-दूसरे को कोसा गया। मुहम्मद लगभग नित्य मक्कावासियों की निंदा करता, उन्हें बुरा-भला कहता। कुरैश मुहम्मद का उपहास करते और निम्न जाति के धर्मांतरित मुसलमानों को अपशब्द कहते। रक्त किसी का नहीं गिरा, बस कहासुनी तक बात रह गयी। धूल फेंके गये, पर हिंसा जैसा कुछ नहीं हुआ। कोई नहीं मरा।

प्रवास

I314 मदीना के मुसलमानों ने जंग में मुहम्मद के समर्थन और मक्का के मुसलमानों की सहायता की प्रतिज्ञा ली। मक्का के मुसलमान वहां से निकलकर मदीना चले गये। मक्का और मदीना दोनों स्थानों के मुसलमानों की परीक्षा होनी थी।

> 29:1 *अलिफ़। लाम। मीम। क्या लोग सोचते हैं कि यदि वे कहेंगे, ''हम विश्वास (ईमान) लाये हैं'', तो वे छोड़ दिये जाएंगे और उनकी परीक्षा नहीं ली जाएगी? उनसे पहले जो आये, हमने उनकी भी परीक्षा ली, और अल्लाह निश्चित ही जानता है कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। क्या जो बुरा करते हैं, उनको लगता है कि वे हमसे बचकर निकल जाएंगे? उनकी नियति बुरी होगी।*
>
> 29:5 *जो भी अल्लाह से मिलने की आशा करता है, तो इसके लिये अल्लाह द्वारा निर्धारित समय अवश्य आएगा। वह सब सुनता है और सब जानता है। जो दीन के लिये प्रयास करता है, वह वास्तव में अपनी भलाई के लिये ही प्रयास करता है। अल्लाह अपनी रचनाओं से निस्पृह है। जहां तक उनकी बात है, जो विश्वास लाये हैं और सदाचार किये, हम उनमें से सारी बुराई निकाल देंगे और हम उन्हें उनके कर्मों के अनुसार अच्छा प्रतिफल देंगे।*

अध्याय 6

9:63 क्या उन्हें नहीं पता कि जो भी अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, उसका ठिकाना जहन्नुम की आग है, जहां वह अनंत काल तक जलता रहेगा? यह तो सबसे बड़ा अपराध है।

जब मुहम्मद मदीना आया, तो वहां के आधे से अधिक लोग यहूदी थे। वहां यहूदियों की तीन जनजातियां और अरबों की दो जनजातियां रहती थीं। यहूदी लोग कृषक और व्यापारी थे तथा अपना गढ़ बनाकर रहते थे। कुल मिलाकर यहूदी अरबों से अधिक शिक्षित और समृद्ध थे।

मुहम्मद के मदीना पहुंचने से पूर्व वहां की जनजातियों में आपसी मारकाट व हत्याएं होती रहती थी। पिछली जंग दो अरब जनजातियों में हुई थी, किंतु प्रत्येक यहूदी जनजाति उस अरबी जनजाति के साथ जंग में सम्मिलित थी, जो उसका सहयोगी रहा हो।

I315 रब्बियों (यहूदी पुरोहित) ने मुहम्मद से कठिन प्रश्न पूछना प्रारंभ कर दिया। किंतु अल्लाह पर तो संदेह करना अपराध है। मक्का में मुहम्मद ने अरबी जनजातियों को विभाजित करवा दिया। अरबियों का एक समुदाय ऐसा बन गया, जो मुसलमान बन गया था और दूसरा समुदाय वह था, जो प्राचीन अरबी धर्म को मानता था। जब मुहम्मद मक्का में था, तो उसने अपनी पैगम्बरी को सिद्ध करने के लिये यहूदियों की शास्त्रीय कथाओं को ग्रहण कर लिया था और यहूदियों के बारे में अच्छा बोलता था। किंतु मक्का में यहूदी न के बराबर थे और इसलिये वहां उसकी बातों की सच्चाई परखने वाला कोई न था।

मदीना की आधी जनसंख्या यहूदियों की थी, तो वहां मुहम्मद की बातों की पोल खुलने लगी और यहूदियों ने उसे बता दिया कि वे उसकी बातों से सहमत नहीं हैं। इसलिये मदीना में मुहम्मद यहूदियों और काफिर अरबों से वाद-विवाद किया। वैसे तो मदीना में ईसाई बहुत कम थे, पर मुहम्मद उनसे भी तकरार करता था। मदीना में सभी काफिरों पर शाब्दिक प्रहार हुआ।

वास्तविक तौरात कुरआन में है

मुहम्मद निरंतर यही रट लगाता रहा कि यहूदियों और ईसाइयों ने अपने पवित्र ग्रंथों को दूषित कर दिया है, जिससे कि उनके ग्रंथों में उसके पैगम्बर होने की जो बात कही गयी है, उसे छिपाया जा सके। कुरआन की कहानियां यहूदी ग्रंथों में दी गयी कहानियों से मिलती हैं, पर उन्हें दूसरे ढंग से कहा गया है। कुरआन में यहूदी ग्रंथों की जो कहानियां पायी गयीं, उन्होंने संकेत किया कि जिन संस्कृतियों ने उसके रसूलों की बात नहीं मानी, अल्लाह ने उन्हें नष्ट कर दिया।

I364 पर यहूदियों ने नहीं माना कि मुहम्मद एक रसूल है। परिणामस्वरूप उन्हें गलत मान लिया गया और उन्हें अल्लाह द्वारा कोसा गया। और मुहम्मद की पैगम्बरी को न मानने भर से ही उन पर आरोप लग गया कि उन्होंने मुहम्मद और इस्लाम के विरुद्ध षडयंत्र किया।

2:40 *इजराइल के बच्चो! स्मरण करो उस उपकार का, जो हमने तुम पर किया है और मेरे साथ किये गये समझौते को निभाओ। मैं तुम्हारे साथ किये गये समझौते को पूरा करूंगा। मेरी ताकत से डरो। जो [कुरआन] मैंने उतारी है, उसमें विश्वास करो। तुम्हारे ग्रंथ भी कुरआन की पुष्टि करते हैं। तुम सबसे पहले इस पर अविश्वास करने वालों में से न बनो। तुच्छ मूल्य के लिये मेरी आयतों से अलग मत हो। केवल मुझी से डरो। सत्य को झूठ के साथ न मिलाओ या जानबूझकर सत्य को न छिपाओ [यहूदियों ने उस ग्रंथ को छिपा दिया, जिसने पहले ही बता दिया था कि मुहम्मद अंतिम पैगम्बर होगा] । नियमित नमाज़ पढ़ो, जकात दो और सज्दा करते हैं, उनके आगे सज्दा करो। क्या तुम दूसरों को तो सही पथ पर चलने का निर्देश देते हो, पर अपना ही कर्त्तव्य भूल बैठे हो? जबकि तुम तो ग्रंथों [तौरात] को पढ़ते हो! फिर भी तुम्हें समझ नहीं है? धीरज के साथ पथ ढूंढ़ों और नमाज पढ़ो; यह वास्तव में एक कठिन कर्त्तव्य है, परंतु उनके लिये कोई कठिन नहीं है, जो स्मरण रखते हैं कि उन्हें अपने अल्लाह से मिलना है और उसी के पास लौट जाना है।*

I367 कुरआन बार-बार अल्लाह द्वारा यहूदियों पर किये गये उपकारों का बताती है- कि वे चुने हुए लोग हैं, फिरऔन की दासता से मुक्त कराये गये हैं और उन्हें पवित्र तौरात दिया गया है, पर उन लोगों ने पाप के अतिरिक्त कुछ और न किया। उन्हें अल्लाह द्वारा कई बार क्षमा किया गया, पर अभी भी वे वैसे ही जड़बुद्धि बने हुए हैं तथा मुहम्मद पर विश्वास करने से मना कर रहे हैं। उन्होंने यह समझने के बाद तौरात को दूषित कर दिया।

2:75 *क्या तुम मोमिन लोग तब आशा करते हो कि यहूदी तुम पर विश्वास करेंगे, भले ही उन्होंने अल्लाह का संदेश सुना है और जब उन्होंने इसके अर्थ को समझ लिया, तो जानबूझकर इसे परिवर्तित कर दिया [यहूदियों ने अपने उस ग्रंथ को छिपा दिया, जिसने पहले ही बता दिया था कि मुहम्मद अंतिम पैगम्बर होगा]? और जब वे मोमिनों के बीच होते हैं, तो वे बोलते हैं, ''हम भी विश्वास लाये हैं'', किंतु जब वे एकांत में एक-दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं, ''तुम उन्हें वो बातें क्यों बताते हो, जो अल्लाह ने तुम पर खोली है? इसलिये कि कयामत के दिन तुम्हारे अल्लाह के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनायें? क्या तुम्हारे पर समझ बची है? क्या वे नहीं जानते हैं कि जो वे छिपाते हैं और जो वे बताते हैं, वो सब अल्लाह जानता है?*

यहूदियों के पाप इतने बड़े थे कि अल्लाह ने उन्हें लंगूर बना दिया।

2:63 *और इजराइल के बच्चो, स्मरण रखो, जब हमने यह कहते हुए तुम्हारे साथ समझौता किया और तुम्हारे सामने सिनाई की पहाड़ी को उठाया, ''हमने तुम पर जो आयतें उतारी हैं, उन्हें दृढ़ता से पकड़े रहो और इसमें जो आदेश-निर्देश हैं, उन्हें स्मरण रखो, जिससे कि तुम यातना से बच सको।'' पर तब तुमने मुंह फेर लिया और यदि अल्लाह की कृपा और दया न होती, तो तुम निश्चित रूप से नष्ट हो गये लोगों में से होते। और तुमने अपने बीच उन्हें देखा है, जिन्होंने सब्त का उल्लंघन किया था। हमने उनसे कहा था, ''तुम सब तिरस्कृत लंगूरों में परिवर्तित हो जाओगे।'' इसलिये हमने उसे उनके लोगों और आने वाली पीढ़ियों के लिये एक चेतावनी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये एक सीख बना दिया।*

I370 यहूदियों ने मुहम्मद की सच्चाई को समझ लिया है और इसके बाद यह स्वीकार करने से बचने के लिये अपने ग्रंथों में परिवर्तन कर दिया कि मुहम्मद सही था।

5:59 *उनसे कह दे: अरे ग्रंथ के लोगों [यहूदी और ईसाई], क्या तुम लोग केवल इसलिये ही हमें स्वीकार नहीं कर रहे हो न कि हम अल्लाह में विश्वास लाये हैं, जो पुस्तक अल्लाह ने हम पर उतारी है उस पर विश्वास लाये हैं, जो हमसे पूर्व उतारा गया उस पर विश्वास लाये हैं और इसलिये कि तुममें से अधिकांश उल्लंघनकारी हैं। उनसे कह दे: मैं तुम्हें बता सकता हूं कि अल्लाह जो यातना तुम्हें देने वाला है, वह इससे बहुत बुरा है? यह यातना उनके लिये है, जिन्हें अल्लाह ने धिक्कारा और उन पर उसका प्रकोप हुआ; ये वही (यहूदी) हैं जिन्हें अल्लाह ने लंगूर बना दिया, ये वही (ईसाई) हैं जिन्हें अल्लाह ने सूअर बना दिया; जो तागूत (शैतान) को पूजते हैं। इन्हीं का स्थान सबसे बुरा है और ये ही सही पथ से विचलित हो गये हैं।*

5:61 *जब वे लोग तुम्हारे बीच आये, तो बोले, ''हम विश्वास लाये हैं'', पर जब वे कुफ्र लिये हुए आये और काफिर के रूप में ही लौट गये। अल्लाह भली-भांति जानता है कि क्या छिपा रहे थे। तुम देखोगे कि उनमें से बहुत लोग पाप करने, उल्लंघन करने और हराम का खाना खाने के लिये एक-दूसरे के साथ दौड़ रहे हैं। वो जो कर रहे हैं, वह बुरा है। उनके विद्वान और रब्बी उन्हें पाप की बात बोलने और हराम खाना खाने से नहीं रोकते? निश्चित ही उनके कर्म बुरे हैं।*

2:174 *जो (यहूदी) तुच्छ लाभ के लिये उन ग्रंथों (तौरात) के किसी अंश को छिपाते हैं, जो अल्लाह ने उनको दिया है, तो वे कुछ और नहीं, अपितु अपने पेट में आग डाल रहे हैं। कयामत के दिन अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा और उन्हें पीड़ादायी दंड भुगतना होगा। ये लोग वही हैं, जो सुपथ के मोल पर कुपथ अपनाते हैं और क्षमाशीलता के मोल पर उत्पीड़न अपनाते हैं; कैसे जानबूझकर वे जहन्नुम की आग की ओर बढ़ रहे हैं!*

अनिष्टकारी परिवर्तन

2:142 *मूर्ख लोग कहेंगे, ''उन्हें किस बात ने उस क़िबला [वह दिशा जिस ओर वे इस्लामी नमाज के समय अपना मुंह करते थे] से फेर दिया? उन्हें बता दो: पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। अल्लाह जिसे चाहेगा, उसे सही मार्ग दिखायेगा। हमने तुम लोगों [मुसलमानों] सबसे श्रेष्ठ जाति बनाया है, जिससे कि तुम संसार पर साक्षी बन सको और जिससे कि रसूल (मुहम्मद) तुम्हारे लिये साक्षी बन सके। हमने इससे पहले क़िबला येरूशलम की ओर रखा और अब क़िबला मक्का की ओर कर दिया, जिससे कि हम रसूल के सच्चे अनुयायियों को पहचान सकें और उन्हें भी पहचान सकें, जो उसको पीठ दिखाकर भागते हैं। यह वास्तव में एक कठिन परीक्षा थी, किंतु उनके लिये कठिन नहीं थी, जिन्हें अल्लाह ने पथ दिखाया। अल्लाह का यह उद्देश्य नहीं था कि तुम्हारे विश्वास को व्यर्थ कर दे, क्योंकि अल्लाह मनुष्य जाति के प्रति दया व करुणा से भरा हुआ है। हम देख रहे हैं कि तू [मुहम्मद] अपने मुख को बार-बार आकाश की ओर फेर रहा है और अब हम तुझे ऐसे क़िबला (मक्का) की ओर कर देंगे, जिससे कि तू प्रसन्न होगा। तो अपना मुख उस पवित्र मस्जिद (क़ाबा) की दिशा में कर और जहां कहीं भी मोमिन हैं, वे इसी ओर अपना मुख करेंगे। उस ग्रंथ (तौरात) के लोग (यहूदी) जानते हैं कि यह उनके स्वामी से आया सत्य है और वे जो कर रहे हैं, अल्लाह उससे अनजान नहीं है। भले ही तुम लोग ग्रंथ के लोगों (यहूदियों) को प्रत्येक प्रमाण देते, पर तब भी वे तुम्हारे क़िबला को स्वीकार नहीं करते और न ही तुम उनके क़िबला को स्वीकार करते। कोई भी किसी और के क़िबला को स्वीकार नहीं करेगा। यदि आयतें मिलने के बाद भी तुम लोग उनके पथ पर चलोगे, तो तुम निश्चित ही अवज्ञाकारियों में से ही हो जाओगे।*

62:5 *जिन्हें तौरात [ओल्ड टेस्टामेंट की पहली पांच पुस्तकें] दी गयीं, और उन्होंने इसका अनुसरण नहीं किया, तो वे उस गधे के समान हैं, जिसके ऊपर पुस्तकें तो लदी हैं, पर वह उन्हें समझने में असमर्थ है। जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, वे बुरे हैं। अल्लाह उन्हें पथ नहीं दिखाता, जो उसकी अवज्ञा करते हैं।*

4:44 *क्या तुमने उनकी [यहूदियों] दशा नहीं देखी, जिन्हें पुस्तक का कुछ भाग दिया गया था? वे अपने लिये भी कुपथ खरीदते हैं और तुम्हें भी सुपथ से विचलित करने की मंशा रखते हैं। किंतु अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भांति जानता है। तुम्हारे लिये अल्लाह की संरक्षण पर्याप्त है और तुम्हारे लिये अल्लाह की सहायता पर्याप्त है। यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं, जो उन ग्रंथों की बातों को संदर्भहीन लेते हैं और कहते हैं, ''हमने सुन लिया है और हम नहीं मानेंगे। हमने ऐसे सुना, मानों कि हमने सुना ही नहीं। देखो हमको!'' इस प्रकार बातों को तोड़-मरोड़कर दीन को दूषित कर रहे। किंतु यदि उन्होंने कहा होता, ''हमने सुन लिया है और आज्ञा पालन कर रहे हैं। हमें सुनो और हमारी ओर देखो!'' तो यह उनके लिये अधिक उत्तम और सही होता। किंतु अल्लाह ने उनको कुफ्र के लिये धिक्कारा है; इसलिये उनमें बहुत थोड़े से ही ऐसे हैं, जो विश्वास अर्थात ईमान लायेंगे (अर्थात इस्लाम स्वीकार करेंगे)!*

4:47 *जिन्हें वे ग्रंथ [तौरात, बाइबिल, इंजील] दिये गये हैं, उनमें के लोगो [यहूदियों और ईसाइयों]: इससे पहले कि हम तुम्हारे मुख बिगाड़ दें और तुम्हारी मुंडी मरोड़कर पीछे की ओर कर दें या तुम्हें वैसे ही धिक्कार दें, जैसे उन [यहूदियों] को धिक्कारा था जिन्होंने सब्त का उल्लंघन किया था, तुम लोग उस [कुरआन] पर विश्वास लाओ जिसे हमने उन ग्रंथों की पुष्टि करते हुए उतारा है, जो तुम्हारे पास पहले से ही है। क्योंकि अल्लाह का आदेश तो पूरा होकर रहेगा।*

अध्याय 7

33:21 तुममें से जो भी अल्लाह और कयामत पर आशा रखता है और जो निरंतर अल्लाह का गुणगान करता है, उसके लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।

I404 मदीना में कुछ ईसाइयों ने मुहम्मद से धर्म पर बहस की। वे त्रयी अर्थात तीन ईश्वर के सिद्धांत और ईसामसीह के ईश्वरत्व पर अड़े रहे। मुहम्मद ने बाद में ईसाई सिद्धांत का इस्लामी सिद्धांत दिया। ईसामसीह जो कि अल्लाह का एक और पैगम्बर ही था, उसकी वास्तविक कहानी कुरआन विस्तार से बताती है। कुरआन यह भी बताती है कि ईसाइयों की त्रयी अल्लाह, ईसामसीह और मैरी है।

I406 अल्लाह के माध्यम के अतिरिक्त किसी में ताकत नहीं है। अल्लाह ने पैगम्बर ईसामसीह को मृतकों को जीवित करने, रोगियों को ठीक करने, मिट्टी से पक्षी बनाने और उन्हें उड़ाने की सामर्थ्य दी। अल्लाह ने ईसामसीह को ये सब उसके पैगम्बर होने के प्रमाण के रूप में दिया। किंतु अल्लाह ने राजा बनाने की ताकत नहीं दी, रात को दिन बनाने की ताकत नहीं दी। ताकत का यह अभाव दर्शाता है कि ईसामसीह एक मनुष्य था, न कि त्रयी का भाग। यदि वह अल्लाह का भाग होता, तो उसके आदेश पर सभी प्रकार की ताकतें होतीं। तब उसे राजाओं के अधीन नहीं रहना पड़ता।

I407-8 ईसामसीह पालने में बात करता था और फिर जब बड़ा हुआ, तो मानव जाति से बात करता था। पालने से बात करना उसके पैगम्बर होने का साक्ष्य था। ईसामसीह की पैगम्बरी की पुष्टि मिट्टी के पक्षियों को उड़ाने से हुई। अल्लाह की कृपा से ईसामसीह ने अंधों को दृष्टि प्रदान कर दी, कोढ़ियों को कोढ़ से मुक्ति दिला दी और मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया।

5:109 *एक दिन अल्लाह पैगम्बरों को एकत्र करेगा और कहेगा, ''मानव जाति से तुम्हें क्या प्रतिक्रिया मिली? वे कहेंगे, ''हमें इसका ज्ञान नहीं है। तुम ही सभी रहस्यों को जानने वाले हो।'' तब अल्लाह कहेगा, ''हे, मैरी (मरियम) के पुत्र ईसामसीह, तुम पर और तुम्हारी मां पर मैंने जो उपकार किये हैं, उन्हें स्मरण कर, जब मैंने पवित्र आत्मा (जिबराइल) द्वारा तुझे ताकत दिया, जिससे कि तू बचपन में वैसे ही लोगों से बात कर सके, जैसे कि बड़े होने पर। मैंने तुझे पुस्तक, बुद्धिमत्ता, तौरात और इंजील की शिक्षा दी और तूने मेरी अनुमति से मिट्टी में से पक्षी बनाया और उसमें प्राण डाला। मेरी अनुमति से वह एक पक्षी हो गया। तूने मेरी अनुमति से एक अंधे और कोढ़ी को ठीक कर दिया। मेरी अनुमति से तूने मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया। जब तू स्पष्ट चिह्न लेकर इजराइल के बच्चों के पास गया, तो मैंने उन्हें तुझको हानि पहुंचाने से रोका और तब वे काफिर बोले, ''यह और कुछ नहीं, बस जादू-टोना है।''*

5:111 *जब मैंने तेरे शिष्यों के मन में यह बात डाल दी कि, ''मुझमें और जिसे मैंने भेजा है, उसमें विश्वास करो'', तो उन्होंने कहा, ''हम विश्वास लाये हैं और तेरे समक्ष साक्षी बनते हैं कि हम मुसलमान हैं।''*

I408 ईसा अल्लाह के माध्यम से ही आता है। ईसा के पैगम्बर होने के प्रमाण अल्लाह से ही आते हैं। ईसा अन्य लोगों को अल्लाह की इबादत करने का आदेश देता है, न कि अपना। किंतु लोगों ने उसकी बात सुनने से मना कर दिया, तो उसके शिष्य उसके मिशन को आगे बढ़ाने के लिये आगे आये। वे शिष्य अल्लाह के सेवक थे और ईसा के जैसे ही मुसलमान थे।

I409 ईसा को सूली पर नहीं चढ़ाया गया था। जब यहूदियों ने ईसा के विरुद्ध षडयंत्र किया, तो उन्होंने पाया कि अल्लाह सबसे बड़ा योजनाकार है। अल्लाह ने उसे सीधे अपने पास बुला लिया और उन लोगों की बातों का खंडन किया, जो कहते हैं कि उसे सूली पर चढ़ाया गया था और फिर वह पुनर्जीवित हुआ था। जो ईसा का अनुसरण करते हैं, पर उसके ईश्वर होने पर विश्वास नहीं करते हैं, उन्हें निर्णय वाले उस दिन, कयामत के दिन, पुरस्कार मिलेगा। जो इस पर अड़े हैं कि ईसामसीह अल्लाह का अंश, त्रयी का भाग है और सच्चे मजहब (इस्लाम) को अस्वीकार करते हैं, उन्हें जहन्नुम में दंडित किया जाएगा।

3:54 *तो यहूदियों ने षडयंत्र रचा और अल्लाह ने भी षडयंत्र रचा, पर अल्लाह षडयंत्र रचने वालों में सबसे अच्छा है। और अल्लाह ने कहा, ''ईसा! मैं धरती पर तेरा जीवन समाप्त करने जा रहा हूं और तुझे उठाकर सीधे अपने पास लाने जा रहा हूं। ख्ईसामसीह सूली पर नहीं मरे। वह अल्लाह द्वारा अपने पास सीधे बुला लिये गये थे। वह ईसाई-विरोधियों का अंत करने वापस आयेंगे और इसके बाद स्वाभाविक मृत्यु प्राप्त करेंगे, । मैं काफिरों को तुझसे (ईसा से) दूर कर दूंगा और ईमान लाने वाले तेरे अनुयायियों को कयामत के दिन दूसरों से ऊपर कर दूंगा। तब सब मेरे ही पास लौटकर आयेंगे और मैं उनके कर्मों का निर्णय करूंगा। जहां तक काफिरों की बात है, तो वे इस संसार में भी अति दुखदायी वेदना से दंडित किये जाएंगे और मृत्यु के बाद भी इतना ही भयानक दंड पायेंगे। उनकी सहायता करने वाला कोई न होगा। जहां तक उन मोमिनों की बात है, जो अच्छा करते हैं, उन्हें अल्लाह पूरा पुरस्कार देगा। अल्लाह को गलत करने वाले प्रिय नहीं होते। ये हमारी आयतें और चेतावनियां हैं, जो हम (अल्लाह) तुम्हारे लिये लाये हैं।''*

यद्यपि कुरआन यहूदियों की तुलना में ईसाइयों के बारे में कम बताती है, पर इसमें ईसाइयों का उल्लेख तो है।

4:171 *ग्रंथ के लोगो [ईसाइयो]! अपने धर्म की सीमाओं का अतिक्रमण न करो और केवल वही बोलो, जो अल्लाह के बारे में सत्य है। मसीह, ईसा, मैरी का पुत्र अल्लाह का ही पैगम्बर और संदेश है, जो उसने मैरी के गर्भ में भेजा, वह उसी की ओर से आत्मा थी। इसलिये अल्लाह और उसके रसूल में विश्वास करो और यह न कहो कि (अल्लाह) ''तीन'' हैं। ऐसा कहना बंद कर दो, यही तुम्हारे लिये उत्तम होगा। केवल अल्लाह ही ईश्वर है। वह इससे बहुत ऊपर है कि उसका कोई पुत्र हो! आकाश और धरती पर जो भी है, वह सब उसका है। संरक्षक के रूप में अल्लाह ही पर्याप्त है। मसीहा अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता है और न ही अल्लाह के फरिश्ते इसमें अपमान समझते हैं। जो उसकी सेवा को अपमान समझेगा और अहंकार से भरा होगा, अल्लाह उन्हें अपने सामने एक-साथ एकत्र करेगा।*

61:6 *और स्मरण करो, जब मैरी के पुत्र ईसा ने कहा, ''इजराइल के बच्चो! मैं अल्लाह का पैगम्बर हूं और उस तौरात की पुष्टि करने के लिये भेजा गया हूं, जो तुम पर पहले ही उतारी गयी है और उस रसूल के आने का शुभ समाचार देने आया हूं, जो मेरे बाद आने वाला है और जिसका नाम अहमद होगा।'' [अहमद मुहम्मद का ही एक नाम था। ईसा का यह उद्धरण किसी भी ईसाई ग्रंथ में नहीं मिलता है।] तब भी जब वह [मुहम्मद] स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया, तो उन लोगों ने कहा, ''ये तो केवल जादू-टोना है!'' और उससे बुरा और कौन होगा, जो इस्लाम के आगे झुकने के लिये कहे जाने पर अल्लाह के बारे*

में झूठ बोलता है? अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता है! वे लोग अल्लाह के प्रकाश को अपने झूठ से बुझा देना चाहते हैं, किंतु जितना ही काफिर अल्लाह के प्रकाश से घृणा करेंगे, उतना ही अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण करेगा।

5:112 *स्मरण करो जब शिष्यों ने कहा, ''हे मैरी के पुत्र ईसा, क्या तेरा स्वामी ऐसा कर सकता है कि आकाश से हम पर भोजन की थाल उतार दे? उस (ईसा) ने कहा, ''यदि तुम विश्वास वाले हो, तो अल्लाह से डरो।'' वे लोग बोले, ''हम चाहते हैं कि उसमें से खायें और हमारे मन को संतोश हो जाए तथा हमें विश्वास हो जाए कि तूने हमें जो कुछ बताया है, सच है और हम उसके चमत्कारों के साक्षियों में से हो जाएं।'' मैरी के पुत्र ईसा ने कहा, ''हे अल्लाह, हमारे स्वामी, आकाश से भोजन से भरा थाल उतार दे, जो हमारे और हमारे बाद के लोगों के लिये उत्सव और तेरी ओर से एक प्रमाण बन जाए तथा हमारा पोषण कर, क्योंकि तू ही सर्वोत्तम पोषण करने वाला है। अल्लाह ने कहा, ''मैं तुम पर वह थाल उतारूंगा, किंतु उसके बाद तुममें से जो कोई भी कुफ्र (अविश्वास) करेगा, उसे निश्चित ही मैं दंड दूंगा और ऐसा दंड दूंगा जो कि पहले किसी प्राणी को नहीं दिया है।''*

5:116 *और जब अल्लाह पूछेगा, ''हे मैरी के पुत्र ईसा, क्या तूने मनुष्यों से कहा है कि 'अल्लाह के अतिरिक्त मुझे और मेरी मां को ईश्वर मान लो?'' तो वह कहेगा, ''तू पवित्र है। ये कैसे हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहूं, जिसका मुझे अधिकार नहीं? यदि मैंने ऐसा कभी कहा होता, तो तू अवश्य जान जाता। तू मेरे मन की बात जानता है। मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही वो सबकुछ जानता है, जो छिपा है।'' ''मैंने उनसे बस वही कहा था कि जिसका तूने आदेश दिया था, 'मेरे स्वामी और अपने स्वामी अल्लाह की इबादत करो', और जब तक मैं उनमें था, उनकी दशा जानता था और जब तूने मेरा समय पूरा कर दिया, तो तू ही उन्हें देख रहा था और तू ही सभी बातों का साक्षी है। यदि तू उन्हें दंड दे, तो वे तेरे दास (बंदे) हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली और गुणी है।''*

कुरआन प्रायः ग्रंथ के लोगों शब्द का प्रयोग करती है। मुहम्मद के समय अरबी में कोई ग्रंथ नहीं था। यद्यपि वही ईसाई सच्चे ईसाई माने जाते हैं, जो यह मानते हैं कि ईसा ईश्वर का पुत्र नहीं था, कोई तीन (ईश्वर) नहीं है, ईसा को सूली पर नहीं चढ़ाया गया, ईसा नहीं मरा और न ही पुनर्जीवित हुआ तथा गॉस्पेल झूठ है। केवल वही यहूदी सच्चे यहूदी माने जाते हैं, जो यह सोचते हैं कि मुहम्मद अंतिम रसूल था।

दूसरे शब्दों में, यहूदी और ईसाई वैसे ही काफिर हैं, जैसे कि कोई अन्य काफिर जो यह नहीं मानता कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल है।

अध्याय 8

47:33 मोमिनो! अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञाकारी बनो और अपने कर्मों को व्यर्थ न करो।

मुनाफ़िक़ (ढोंगी) जिसके मुंह पर कुछ और हो और मन में कुछ और

I351 मुहम्मद के आने से पूर्व अरबी अपने धर्म को लेकर संतुष्ट थे और दूसरे धर्मों के लोगों के प्रति सहिष्णु थे। बहुत से अरबी इस्लाम स्वीकार करने के दबाव के कारण मुसलमान बने। किंतु भीतर से वे इस्लाम को नहीं मानने वाले ऐसे लोग थे, जिन्होंने यहूदियों के साथ गठबंधन किया था, क्योंकि इन लोगों का मानना था कि मुहम्मद ठग है।

I365 कुरआन इन मुनाफ़िक़ों का निम्न चित्रण देता है:

2:8 *और कुछ लोग [यहूदी] कहते हैं, ''हम अल्लाह और कयामत के दिन पर विश्वास लाये हैं अर्थात हम अल्लाह और कयामत के दिन पर विश्वास करते हैं'', जबकि वास्तव में वे इन पर विश्वास नहीं करते। वे अल्लाह और उस पर विश्वास लाने वालों से छल करना चाहते हैं, पर वे किसी और को नहीं, अपितु स्वयं को ही बना रहे हैं, यद्यपि वे इसे समझते नहीं हैं। उनके हृदय मलिन हैं अर्थात उनके मन रोगी है और अल्लाह ने उनके कष्ट को बढ़ा दिया है। वे अपने झूठों के कारण दुखदायी यातना सहेंगे।*

2:11 *और जब उन्हें बताया जाता है, ''धरती पर उपद्रव मत करो'', तो वे कहते हैं, ''हम तो शांति लाने का प्रयास कर रहे हैं।'' पर वास्तव में वही लोग गलत करने वाले हैं, भले ही उन्हें इसका बोध नहीं है। जब उनसे कहा जाता है, ''जैसे और लोग विश्वास ले आये हैं, वैसे ही तुम भी विश्वास लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें?'' वही मूर्ख हैं, काश वे यह समझ पाते! और जब वे मोमिनों से मिलते हैं, तो कहते हैं, ''हम भी विश्वास लाये हैं।'' पर जब वे अपने साथ के शैतानों [यहूदियों और ईसाइयों] के बीच एकांत में होते हैं, तो उनसे कहते हैं, ''वास्तव में हम तुम लोगों के साथ हैं। हम तो बस परिहास कर रहे थे।'' अल्लाह उनके परिहास को उन पर ही लौटा देगा और उन्हें अंधेरे में भटकने के लिये छोड़ देगा।*

I355 मदीना का एक व्यक्ति मुसलमान हो गया और बाद में मुहम्मद की सच्चाई पर संदेह करने लगा। वह बोला, ''यदि यह व्यक्ति सही है, तो हम गधों से गये-गुज़रे हैं।'' इस्लाम के प्रति निष्ठा परिवार, राष्ट्र और मित्र से पहले होती है। जब मुहम्मद ने उसकी टिप्पणी और संदेह पर उससे पूछा, तो उसने ऐसा कुछ होने से ही स्पष्ट मना कर दिया। इस पर कुरआन की टिप्पणी:

9:74 *वे अल्लाह की कसम खा रहे हैं कि उन्होंने कुछ गलत नहीं कहा है, जबकि वास्तव में उन्होंने ईशनिंदा, कुफ्र (अविश्वास) की बात कही है और कुछ मुसलमान काफिर हो गये हैं। उन्होंने ऐसी बात [मुहम्मद के विरुद्ध योजना] का निश्चय*

किया, जो वे कर नहीं सके और फिर इस योजना को छोड़ दिया, क्योंकि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने माल से धनी कर दिया [मुहम्मद के प्रति प्रतिरोध कम हो गया, जब मदीना की अर्थव्यवस्था से जंग की लूट का माल आया] । यदि वे प्रायश्चित कर लें, तो उनके लिये उत्तम होगा, किंतु यदि वे अपने पापों में फिर से गिर जाते हैं, तो अल्लाह उनको इस लोक में भी दुखदायी यातना देगा और आ़खिरत (परलोक) में भी। धरती पर उन्हें कोई मित्र या संरक्षक नहीं मिलेगा।

I357 मुहम्मद मुनाफ़िक़ों में से एक के बारे में बात किया करता था कि उसका मुख वैसा ही है, जैसा कि शैतान का। वह व्यक्ति बैठकर मुहम्मद को सुनता रहता था और फिर मुनाफ़िक़ों को जाकर उसकी बातें बताता था। उसने मुहम्मद के बारे में कहा, ''मुहम्मद कान का कच्चा है। कोई भी उसके कान में कुछ फूंक देता है और वह उस पर विश्वास कर लेता है।'' कुरआन उस व्यक्ति और अन्य मुनाफ़िक़ों के बारे में कहती है:

9:61 *उनमें से कुछ हैं, जो रसूल को दुख पहुंचाते हैं और कहते हैं, ''वह तो केवल दूसरों की बात सुनता है।'' उनसे कह दे: वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसा है। वह अल्लाह में विश्वास करता है और वह मोमिनों की बात पर विश्वास करता है। तुममें से जो विश्वास लाये हैं, उनके लिये वह दया है और जो अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं, उनके लिये दुखदायी यातना है। वे तेरे (रसूल) के सामने अल्लाह की कसम खाते हैं, जिससे कि तुझे प्रसन्न करें, पर अल्लाह और उसका रसूल का मोल इससे कहीं अधिक है कि यदि वे मोमिन हैं, तो उन्हें अल्लाह और उसके रसूल को प्रसन्न करना चाहिए।*

9:63 *क्या वे नहीं जानते हैं कि जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करेगा, उसका ठिकाना जहन्नुम की आग होगी और वह सदा वहीं पड़ा रहेगा? ये बहुत बड़ा अपमान है।*

I358 मुनाफ़िक़ों में से एक ने अपनी आलोचना का बचाव यह कहते हुए किया कि वह केवल हंसी में ऐसा बोल रहा था। कोई भी आलोचना ऐसी नहीं होती कि उस पर ध्यान न दिया जाए।

9:*65 यदि तुम उनसे पूछो, तो निश्चित वे कहेंगे, ''हम तो बस यूं ही बतिया रहे थे और हंसी कर रहे थे।'' उनसे कह दो: क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल का उपहास कर रहे हो? बहाने न बनाओ। तुमने इस्लाम स्वीकार करने के बाद इसे छोड़ दिया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें, तो भी एक गिरोह को दंड अवश्य देंगे। क्योंकि वही गलत करने वाले हैं। मुनाफ़िक़ आदमी और औरत दोनों एक जैसे हैं। वे जो गलत है, उसी का आदेश देते हैं और जो सही है उससे मना करते हैं तथा जजिया नहीं देते हैं। वे अल्लाह को भूल चुके हैं और अल्लाह उन्हें भूल गया है। मुनाफ़िक़ गलत करने वाले विद्रोही हैं। अल्लाह ने मुनाफ़िक़ आदमियों व औरतों और काफिरों को जहन्नुम की आग में झोंकने का वचन दिया है और ये लोग सदा वहीं पड़े रहेंगे; इनके लिये यही पर्याप्त है। अल्लाह ने उन्हें श्रापित किया है और अनंतकाल तक यातना ही उनकी नियति है।*

I365 मुनाफ़िक़ अपना रंग बदल लेते हैं और यह इस पर निर्भर करता है कि वे किसके साथ हैं। जब वे मुसलमानों के साथ होते हैं, तो वे मोमिन बन जाते हैं। परंतु जब वे शैतानों (यहूदियों) के साथ होते हैं, तो कहते हैं कि वे यहूदियों के साथ हैं। यहूदी ही हैं, जो उन्हें सत्य को नकारने और मुहम्मद की बातों को काटने का आदेश देते हैं।

4:138 *उन मुनाफ़िक़ों को चेतावनी दो कि यातनाभरा दंड उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। मुनाफ़िक़ मोमिनों की अपेक्षा काफिरों को अपना मित्र बनाते हैं। क्या वे उनके पास मान-सम्मान चाहते हैं? सच तो यह है कि सब मान-सम्मान अल्लाह के लिये ही है।*

अध्याय 9

4:42 उस दिन, काफिर और वो जिन्होंने रसूल की आज्ञा का उल्लंघन किया है, चाहेंगे कि वे धरती में समा गये होते, क्योंकि वे अल्लाह से एक भी बात नहीं छिपा सकते हैं।

मुसलमान दरिद्र थे और मक्का के लोग धनी थे। फिर मक्का से बाहर निकाल दिये जाने का प्रकरण भी था और मुहम्मद प्रतिशोध लेना चाहता था। उसे एक ऐसी बात सूझी, जिससे उसके धन और प्रतिशोध दोनों की पूर्ति हो गयी। वह मक्का के कारवां पर हमला करने लगा।

जिहाद- पहली हत्या

I416-423 मुहम्मद ने मक्का की ओर बढ़ रहे व्यापारिक कारवां की खोज में अपने लड़ाकों को सात हथियारबंद हमले पर भेजा। कोई भी अभियान कारवां नहीं पा सका।

I423-24 तब मुहम्मद ने 8 आदमियों के साथ अब्दुल्ला को भेजा। इस गिरोह के सदस्यों ने हमला करने, हत्या करने और कारवां के पुरुषों को बंदी बनाने एवं कारवां का माल लूटने में सफल होने के लिये तीर्थयात्रियों का वेश बनाया। मक्कावासियों ने मुहम्मद पर ऐसा युद्ध अपराधी होने का आरोप लगाया, जिसे पवित्र मासों में हमला करके अरब की युद्ध संहिता का उल्लंघन किया था।

किंतु कुरआन ने कहा:

2:216 *तुम्हें जंग लड़ने का आदेश दिया गया है, भले ही तुम्हें यह अप्रिय हो। हो सकता है कि किसी बात से तुम्हें किसी बात से घृणा हो और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो तथा कोई वस्तु या बात तुम्हें प्रिय हो और वही तुम्हारे लिये बुरी हो। जब वे पवित्र मास में जंग के बारे में तुझसे पूछ रहे रहे हैं, तो उनसे कह दे: इस समय जंग लड़ना गंभीर अपराध है, लेकिन अल्लाह की दृष्टि में दूसरों को अल्लाह के पथ से रोकना, अल्लाह में विश्वास न करना, मस्जिदे हराम से अल्लाह की इबादत करने वालों को निकालना इससे भी बड़ा अपराध है। मूर्तिपूजा हत्या से भी बड़ा अपराध है। वे तुमसे जंग करना तब नहीं बंद करेंगे, जब तक कि तुम्हें तुम्हारे मजहब से दूर न कर दें। किंतु तुममें से जो भी अपना मजहब छोड़ेगा और काफिर बनकर मरेगा, उसका सारा किया-कराया इस लोक में और फिर परलोक में व्यर्थ चला जाएगा। ये लोग आग में बंद होंगे और सदा वहीं पड़े रहेंगे।*

अल्लाह के उद्देश्य के लिये जंग-बद्र

I428 मुहम्मद भाग्य का धनी था। उसके शत्रु अबू सुफ्यान एक धनी व्यापारी थे और उनका कारवां मदीना के निकट से जा रहा था। जब उन्हें पता चला कि मुहम्मद हमला करने जा रहा है, तो वे मक्का से एक छोटी सी सेना बुलाने में सफल रहे।

फलस्वरूप होने वाली जंग ने विश्व का इतिहास परिवर्तित कर दिया, क्योंकि मुहम्मद ऐसी जंग में गया, जहां दोनों पक्षों की सेना में 3 और 1 का अनुपात था। उस दिन इस्लाम जीता।

I476 बद्र की जंग के बाद कुरआन का पूरा सूरा (अध्याय) आया। मुसलमान अकेले नहीं थे। अल्लाह ने काफिरों की हत्या में सहायता के लिये एक हजार फरिश्ते भेजे।

8:2 *सच्चे मोमिन वही हैं कि जिनका हृदय अल्लाह का वर्णन होने पर भय के मारे कांप उठे और जिनका विश्वास और बढ़ जाए जब उनके समक्ष उसकी आयतें पढ़ी जाएं तथा वे उसमें ही विश्वास रखें। सच्चे मोमिन अपनी नमाज के प्रति समर्पित होते हैं और हमने उन्हें जो कुछ दिया है उसमें से जकात देते हैं। ऐसे ही लोग सच्चे मोमिन हैं। ये लोग ही अपने स्वामी द्वारा पोषित होंगे और क्षमा प्राप्त करेंगे तथा वे ही बड़ा फल पायेंगे।*

8:5 *स्मरण कर, जब तेरे अल्लाह ने सत्य (इस्लाम) के लिये लड़ने को घर छोड़ने का आदेश दिया था, पर कुछ मोमिन इसके विरोध में थे? जब तू (मुहम्मद) ने बता दिया, तो वे सत्य (जंग) पर ऐसे झगड़ रहे थे, जैसे कि वह साक्षात मृत्यु की ओर हांके जा रहे हों और वे उसे देख रहे हों।*

8:7 *और जब अल्लाह ने उन्हें वचन दिया कि तुम लोग शत्रु के दो गुटों में से एक को पराजित करोगे, तो तुम लोग चाहते थे कि हमला करने के लिये वह गुट तुम्हारे हाथ लगे, जो निर्बल हो। [मुहम्मद ने एक बड़े निहत्थे कारवां पर हमला करना प्रारंभ कर दिया था। परंतु मक्का से एक हजार सशस्त्र योद्धाओं की सेना उस कारवां की रक्षा के लिये पहुंच गयी।] परंतु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन से सत्य को सिद्ध कर दे और काफिरों की जड़ें काट दे, जिससे कि सत्य विजयी हो और झूठ को झूठ दिखा दे, भले ही शत्रु को बुरा लगे।*

8:9 *स्मरण कर, जब तूने अपने स्वामी से सहायता की गुहार लगायी और उसने कहा, ''मैं तेरी सहायता के लिये एक हजार फरिश्तों का दल भेज रहा हूं?'' अल्लाह ने यह शुभ सूचना उस विजय की आशा भरने के लिये दी थी, जो केवल अल्लाह से आती है। अल्लाह प्रभुत्वसम्पन्न और बुद्धिमान है।*

8:11 *स्मरण कर, जब अल्लाह अपनी ओर से पुनः आश्वासन के प्रमाण के रूप में तुम लोगों पर ऊंघ डाल रहा था? वह आकाश से वर्षा कर रहा था कि तुम लोगों को स्वच्छ कर दे और शैतान के प्रभाव से मुक्त कर दे, तुम्हारे मन को सुदृढ़ कर दे और तुम्हारे पांव जमा दे। [जंग से पहले हुई वर्षा से भूमि कीचड़ से भर गयी और मक्का के घुड़सवारों के आगे बढ़ने में बाधक हो गयी।]*

8:12 *तब तेरे स्वामी ने अपने फरिश्तों से बात की और बोला, ''मैं तुम लोगों के साथ हूं। मोमिनों को ताकत दो। मैं काफिरों के मन में आतंक उत्पन्न कर दूंगा, उनके सिर काट डालूंगा और उनकी उंगलियां तक छपक दूंगा! ऐसा इसलिये हुआ, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया था। जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, उसे अल्लाह द्वारा कठोर दंड दिया जाएगा। हमने कहा, ''यही है तुम लोगों की करनी का फल! अपनी करनी के फल का स्वाद चखो और जान लो कि काफिर जहन्नुम की आग में यातना पायेंगे।''*

8:15 *मोमिनो! जब जंग के मैदान में काफिरों से तुम्हारा आमना-सामना हो, तो पीछे हटने के लिये पीठ न दिखाओ। जो भी काफिरों को पीठ दिखाकर भागेगा, उस पर अल्लाह का कोप होगा और जहन्नुम उसका ठिकाना होगा, जो वास्तव में बहुत बुरा स्थान है। यह तुम नहीं थे, जिसने उन्हें मारा। यह तो अल्लाह था, जिसने उन्हें मारा। यह तुम नहीं थे, जिसके प्रहार ने उनको नष्ट किया, अपितु यह तो अल्लाह था, जिसने उनको नष्ट किया, जिससे कि वह मोमिनों को अपनी ओर से उपहार दे सके। अल्लाह सबकुछ सुनने वाला है और सबकुछ जानने वाला है। इसलिये अल्लाह निश्चित ही काफिरों की योजनाओं को विफल कर देगा।*

8:19 *मक्का वालो! यदि तुम लोग निर्णय चाहते हो, तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। यदि तुम लोग मोमिनों के पीछे पड़ना बंद कर दो, तो तुम्हारे लिये उत्तम होगा, किंतु यदि तुम लोग ईमान वालों से जंग में लगे रहोगे, तो हम उन्हें सहायता देना निरंतर रखेंगे। तुम लोगों की विशाल सेना भी हमारा सामना नहीं कर पायेगी, क्योंकि अल्लाह मोमिनों के साथ खड़ा है।*

I481 जंग और विजय के बाद जंग में मिला माल है। इसमें से पांचवां भाग अल्लाह के पैगम्बर, रसूल के पास जाना है।

8:41 *जान लो, जंग में लूटे गये माल का पांचवां भाग अल्लाह, उसके रसूल, रसूल के परिवार, अनाथ और आवश्यकता वाले यात्रियों का है। [इससे पहले परंपरा यह थी कि नेता को चौथाई मिलता था] । निष्ठा के साथ अल्लाह पर ईमान लाओ और विजय के उस दिन जब दोनों सेनाएं आमने-सामने थीं, तो अल्लाह ने अपने रसूल के माध्यम से तुमको जो सहायता भेजी थी, उस पर ईमान लाओ। अल्लाह जो चाहे कर सकता है।*

I482 जंग (जिहाद) में हर समय अल्लाह का स्मरण करते रहो और तुम जीतोगे। मुहम्मद की आज्ञा का पालन करो, उससे या एक-दूसरे से वाद-विवाद न करो। साहस न छोड़ो, हतोत्साहित न हो। अल्लाह देखेगा कि तुम जीतो। और जब काफिरों का मार डाला गया, तो स्पष्ट है कि उनकी यातना प्रारंभ हो गयी। अल्लाह काफिरों को सदा यातना देते रहने के लिये अपने फरिश्तों को लगायेगा।

8:45 *मोमिनो! जब उनकी सेना का सामना करो, तो जम जाओ और निरंतर अल्लाह का स्मरण करो, जिससे कि तुम सफल रहो। अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञाकारी रहो और एक-दूसरे के साथ वाद-विवाद न करो, अन्यथा तुम साहस और सामर्थ्य खो दोगे। धैर्य रखो, क्योंकि अल्लाह धीरज रखने वालों के साथ होता है। उन मक्कावासियों के जैसे न बनो, जो घर से डींगें हांकते हुए और अहंकार से भरे हुए निकले थे। उन्होंने दूसरों को अल्लाह के पथ का अनुसरण करने से रोका है, पर अल्लाह सब जानता है कि वे क्या कर रहे हैं।*

8:48 *शैतान ने उनके पापपूर्ण कर्मों को ऐसे बना दिया, मानों वे स्वीकार्य हों और वह बोला, ''आज तुम्हें कोई पराजित नहीं कर सकता और मैं वहां तुम्हारी सहायता के लिये रहूंगा।'' किंतु जब दोनों सेनाएं एक-दूसरे को दिखने लगीं, तो वह यह कहते हुए तेजी से भाग गया, ''मैं तुमसे अलग हो गया हूं, क्योंकि जो मैं देख रहा हूं, वह तुम नहीं देख पा रहे हो [काफिरों की हत्या करने में फरिश्ते (अल्लाह के दूत) सहायता कर रहे थे] । मैं अल्लाह से डरता हूं, क्योंकि अल्लाह का दंड भयानक होता है।''*

8:49 *मुनाफ़िकों [वो मुसलमान जो अपने दीन पर संदेह करते थे, और वो लोग जिनके मन में रोग (दुविधा) था] ने कहा, ''उनके मजहब ने मुसलमानों को भटकाया है।'' किंतु जो अल्लाह पर विश्वास करते हैं, वे पायेंगे कि अल्लाह प्रभुत्वसम्पन्न और बुद्धिमान है। काश, तुम देख पाते कि फरिश्ते काफिरों के प्राण ले रहे हैं! वे यह कहते हुए उनके मुख और पीट पर मार रहे हैं, ''जहन्नुम के आग की यातना का स्वाद चखो!*

8:67 *किसी रसूल के लिये जंग के मैदान में लड़े और रक्तपात किये बिना किसी को बंदी बनाना उचित नहीं है। तुम लोग सांसारिक लाभ चाहते हो, पर अल्लाह वह लाभ चाहता है, जो तुम्हें आने वाले संसार अर्थात परलोक में मिले। अल्लाह प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है। यदि पहले से ही अल्लाह का आदेश न आया होता, तो तुमने जो किया है, उसके लिये कठोरता से दंडित किये जाते। पर अब तुमने जंग में जो माल लूटा है, उसका भोग करो, यह माल तुम्हारे लिये वैध (जायज) और अच्छा है, किंतु अल्लाह से डरो। अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।*

I484 मुहम्मद ने उपदेशक और रसूल के रूप में मक्का छोड़ दिया। उसने अपने 150 नवधर्मांतरित मुसलमानों के साथ मदीना में प्रवेश किया। मदीना में एक वर्ष के बाद लगभग 250-300 मुसलमान हो गये और इनमें से अधिकांश अत्यंत निर्धन थे। बद्र की जंग के बाद एक नया इस्लाम उभरा। मुहम्मद मदीना से एक राजनीतिज्ञ और जनरल के रूप में निकला। इस्लाम मजहबी उद्देश्य जिहाद के साथ एक सशस्त्र बल बन गया।

कुरआन जिहाद के लिये ''अल्लाह के उद्देश्य के लिये जंग'' शब्दावली का प्रयोग करती है।

2:190 *और अल्लाह के उद्देश्य (जिहाद) के लिये उनसे लड़ो, जो तुमसे लड़ो, परंतु पहले आक्रमण करने वाले न बनो। अल्लाह को सीमाएं लांघने वाले प्रिय नहीं हैं।*

2:191 *उन्हें (काफिरों को) जहां पाओ, वहीं काट डालो और उन्हें वहां से निकाल भगाओ, जहां से उन्होंने तुम्हें भगाया था [मक्का वालों ने मुहम्मद को निकाला], क्योंकि फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से भी बुरा है। पर उनसे पवित्र मस्जिद में जंग न करो, जब तक कि वे तुम पर वहां आक्रमण न करें; यदि वे करते हैं, तो उनकी हत्या कर दो। काफिरों के साथ यही होना चाहिए, किंतु यदि काफिर अपना रंग-ढंग बदल दें, तो अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।*

2:193 *जब तक फ़ित्ना समाप्त न हो जाए और केवल अल्लाह का ही मजहब न रह जाए, उनसे लड़ते रहो, किंतु यदि वे हथियार डाल दें, तो केवल अवज्ञा करने वालों से लड़ो। पवित्र मासों व पवित्र वस्तुओं को दूषित करने के अपराध पर जंग के कानून लागू होते हैं। यदि कोई तुम पर आक्रमण करता है, तो तुम भी वैसे ही हमला करो। अल्लाह से डरो और जान लो कि वह उसी के साथ है, जो विश्वास (ईमान) लाते हैं।*

2:195 *अल्लाह के उद्देश्य (जिहाद) के लिये अपना धन उदारतापूर्वक व्यय करो और अपना ही हाथ अपने विनाश में प्रयोग न करो। अच्छा करो, क्योंकि निश्चित ही अल्लाह को वही प्रिय होते हैं, जो अच्छा करते हैं।*

अध्याय 10

61:11 अल्लाह और उसके रसूल में विश्वास करो तथा अल्लाह के उद्देश्य (जिहाद) के लिये अपने धन और प्राण दोनों से बहादुरीपूर्वक लड़ो। यदि तुम जानो, तो यही तुम्हारे लिये उत्तम होगा।

क़ैनुक़ा के यहूदियों का प्रकरण

I545 मदीना में यहूदियों की तीन जनजातियां थीं। बनू क़ैनुक़ा स्वर्णकार थे और अपने क्षेत्रों में गढ़ियों में रहते थे। मुहम्मद द्वारा यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने वह संधि तोड़ी है, जो तब किया गया था जब मुहम्मद मदीना आया था। यद्यपि यह अस्पष्ट है कि संधि कैसे तोड़ा।

I545 मुहम्मद ने यहूदियों को हाट में एकत्रित किया और बोलाः यहूदियों, ध्यान रखना, कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तुम पर भी वैसा ही प्रकोप करे, जैसा उसने कुरैशों पर किया था। तुम लोग जान लो कि मैं वो रसूल हूं, जिसे तुम्हारे पास भेजा गया है। तुम अपने ग्रंथों में भी मेरे बारे में पाओगे।''

I545 उन लोगों ने उत्तर दिया: ''अरे मुहम्मद, तुम्हें लगता है कि हम तुम्हारे लोग हैं। अपने को मूर्ख न बनाओ। तुमने कुरैशों के कुछ व्यापारियों की हत्या भले ही कर दी होगी, उनको मारा-पीटा होगा, परंतु हमें भी उनकी भांति समझने की भूल न करना, क्योंकि हम लोग योद्धा हैं और वास्तवित पुरुष हैं।

I545 इस पर कुरआन की प्रतिक्रियाः

> 3:12 *उन काफिरों से कह दो, ''शीघ्र ही तुम लोग पराजित होगे और जहन्नुम में फेंक दिये जाओगे, जो बहुत भयानक स्थान है!'' वास्तव में, तुम्हारे लिए वे दोनों सेनाएं एक-दूसरे के सामने आ गयीं, तुम्हारे लिये एक चिह्न था [बद्र की जंग में 300 मुसलमानों ने 1000 मक्कावासियों को हराया] । एक फौज अल्लाह के उद्देश्य के लिये लड़ी और दूसरी सेना काफिरों का समूह था तथा काफिरों ने अपनी आंखों से देखा कि उनके शत्रु अपने वास्तविक आकाकर के दुगने हैं। अल्लाह जिससे प्रसन्न होता है, उसे अपनी सहायता देता है। जो समझते हैं, उनके लिये इसमें निश्चित ही सीखने के लिये शिक्षा है।*

I546 कुछ समय मुहम्मद ने यहूदियों की घेराबंदी उनके गढ़ियों में ही कर दी। अन्य दो यहूदी जनजातियां उनकी सहायता के लिये नहीं आयीं। अंततः यहूदियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और बंदी बनाये जाने के बाद उन्हें अपने सामूहिक नरसंहार का भय सताने लगा।

I546 किंतु ग्राहक के संबंध से जुड़ा उन यहूदियों का एक अरब सहयोगी मुहम्मद के पास पहुंचा और बोला, ''हे मुहम्मद, मेरे ग्राहकों से उदारता का व्यवहार करो।'' मुहम्मद ने उनके निवेदन को अनसुना कर दिया। उस सहयोगी पुनः निवेदन किया और तब भी मुहम्मद ने अनसुना कर दिया। उस सहयोगी ने मुहम्मद के लबादे को पकड़कर खींच लिया। क्रोध में लाल मुहम्मद ने उनसे

कहा, ''मुझे जाने दो!'' उस सहयोगी ने कहा, ''नहीं, तुम्हें मेरे ग्राहक के साथ उदारता का व्यवहार करना ही होगा। उन लोगों ने मुझे संरक्षण दिया और अब तुम उन सबको मार डालोगे? मुझे इसका भय है।'' इस पर कुरआन की टिप्पणीः

> 5:51 *हे मोमिनो, यहूदियों, या ईसाइयों को मित्र न बनाओ। वे एक-दूसरे के मित्र हैं। यदि तुममें से कोई उन्हें अपना मित्र बनाता है, तो वह भी उन्हीं में से एक हो जाएगा। अल्लाह ऐसे लोगों को मार्ग नहीं दिखायेगा।*
>
> 5:52 *तू (रसूल) देखेगा कि जिनके मन में (दुविधा का) रोग है, वे उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं और कहते हैं कि हम डरते हैं कि किसी आपदा के कुचक्र में न आ जाएं।'' संभवतः अल्लाह कुछ विजय प्रदान करेगा अथवा कुछ करेगा। तब उन्हें इस बात बहुत पछतावा होगा कि उन्होंने अपने मन में दुविधा (संदेह) छिपा रखी थी।*
>
> 5:53 *तब मोमिन कहेंगे, ''क्या ये वही हैं, जो अल्लाह की गंभीर शपथ लेकर कहा करते थे कि वे निश्चित ही तेरे (रसूल) साथ हैं? इनके कर्म व्यर्थ हो गये और अंततः वे अपने विनाश की ओर चले गये। हे, मोमिनो, यदि तुममें से कोई भी अपना मजहब छोड़ेगा, तो अल्लाह तुम्हारे स्थान पर उन लोगों को ले आएगा, जो उसे प्रिय हैं और जिन्हें अल्लाह प्रिय है। वे मोमिनों के कोमल और काफिरों के लिये कठोर होंगे। वे अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे और किसी की निंदा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की कृपा है। वह जिसे चाहता है, उसे प्रदान करता है। अल्लाह अति विशाल हृदय वाला और सबकुछ जानने वाला है।*

मुहम्मद ने यहूदियों को वहां से भगा दिया और उनकी धन-संपत्ति हड़प ली।

अल क़रज़ा पर हमला

I547 बद्र में मुहम्मद की विजय और चल रहे जिहाद के कारण कुरैश सीरिया जाने के लिये दूसरा मार्ग पकड़ने के लिये विवश हो गये। मुसलमानों ने अचानक उस मार्ग पर भी हमला कर दिया, यद्यपि कुरैश किसी प्रकार बचने में सफल रहे, किंतु मुसलमान कारवां में लदी चांदी सहित अन्य मूल्यवान वस्तुओं को लूट लिया। मदीना ले जाकर लूटी गयी वस्तुएं मुहम्मद को दी गयीं।

तुम्हारे हाथ जो भी यहूदी आये, उसे मार डालो

I554 अल्लाह के रसूल ने कहा, 'तुम्हारे हाथ जो भी यहूदी आये, उसकी हत्या कर दो।'' यह सुनते ही मुहैय्यिश एक यहूदी व्यापारी पर झपट पड़ा और उसे मार डाला। वह यहूदी व्यापारी मुहैय्यिश का व्यापारिक सहयोगी था। मुहैय्यिश का भाई मुसलमान नहीं था। उसने मुहैय्यिश से कहा कि वह उस व्यक्ति की हत्या कैसे कर सकता है, जो उसका मित्र भी था और अनेक व्यापारिक सौदों में साझेदार भी। मुहैय्यिश बोला कि यदि मुहम्मद उसे उसकी हत्या को कहे, तो वह उसे भी तुरंत मार देता। उसके भाई ने कहा, ''यदि मुहम्मद ने तुम्हें मेरा सिर काट लेने को कहे, तो तुम काट लोगे?'' उसने उत्तर दिया, ''हां।'' मुहैय्यिश के उस बड़े भाई ने तब कहा, ''अल्लाह, ऐसा भी मजहब, जो तुमसे यह करा ले, वह तो अद्भुत है।'' और उसने तब वहीं मुसलमान बनने का निर्णय कर लिया।

अध्याय 11

4:14 किंतु जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करते हैं और अल्लाह की सीमाओं से दूर जाते हैं, वे सदा के लिये जहन्नुम की आग की ओर जाएंगे, और यह एक अपमानजनक यातना होगी!

उहुद की जंग

I555 जो बद्र की जंग हार गये थे, वे मक्का आकर दूसरों से बोले, ''कुरैश लोगों, मुहम्मद ने तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति की हत्या कर दी है। हमें धन दो, जिससे कि हम प्रतिशोध ले सकें।'' धन एकत्र किया गया और योद्धाओं की भर्ती की गयी। सेना एकत्रकर तैयार की गयी।

I558 इस प्रकार मक्का के लोगों ने मदीना के निकट पड़ाव डाला, वे युद्ध के लिये तैयार थे। उहुद की पहाड़ियों पर मक्कावालों का सामना करने के लिये मुहम्मद 1000 आदमियों के साथ निकला।

यह युद्ध मुहम्मद के प्रतिकूल रहा, क्योंकि मुसलमान तीरंदाजों ने उसके आदेशों की अवज्ञा की और जब मक्का की सेना पीछे हट रही थी, तो उनकी वस्तुएं लूटने के लिये दौड़ पड़े। मक्का की सेना पुनः संगठित हुई और विजय प्राप्त की।

कुरआन और उहुद की जंग

> चूंकि पिछले बद्र की जंग में अल्लाह ने फरिश्ते भेजा था और कम संख्या में होने के बाद भी मुसलमानों को विजय मिली थी, तो वे उहुद में विफल कैसे हो गये?

I593 मुसलमानों के दो कुनबों को इस जंग के विषय में संदेह था। किंतु अल्लाह उनका मित्र था, वे इस्लाम पर संदेह नहीं करते थे और अल्लाह व मुहम्मद में अपने विश्वास के कारण जंग में गये।

> 3:121 *स्मरण कर, जब तूने [मुहम्मद] जंग के मैदान [उहुद की जंग] में मोमिनों का नेतृत्व करने के लिये उस दिन भोर में घर छोड़ा था? अल्लाह ने सुना और सब जानता था। जब तेरे दो गिरोहों ने कायरता दिखायी, तो अल्लाह ने उन दोनों गिरोहों की रक्षा की। मोमिनों को अल्लाह में अपना विश्वास रखने दे। जब बद्र की जंग में तेरी फौज दुर्बल थी, तो अल्लाह ने तुझे विजय दिलायी। अतः अल्लाह से डर और उसके प्रति कृतज्ञ बन। तब तूने मोमिनों से कहा था, ''क्या तुम लोगों के लिये यह पर्याप्त नहीं है कि तुम्हारे स्वामी ने तीन हजार फरिश्ते भेजकर तुम लोगों की सहायता की?'' और यदि तुम दृढ़ रहोगे और अल्लाह से डरोगे, यदि तुम्हारा शत्रु अचानक तुम पर आक्रमण कर दे, तो अल्लाह उनको तहस-नहस करने के लिये पांच हजार फरिश्ते भेजेगा।*

3:126 *अल्लाह तुम लोगों को यह शुभ सूचना इसलिये देना चाहता था कि तुम्हारे मन को शांति मिले। विजय अल्लाह से ही आती है, वह ऐसा प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है कि वह काफिरों के किसी भी भाग को नष्ट कर सकता है, उनको अपमानित कर सकता है तथा उन्हें अपने उद्देश्य से दूर सकता है। यह तुम्हारे सोचने का विषय नहीं है कि वह उन्हें क्षमा कर देगा या दंड देगा, क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं। आकाश और धरती पर जो कुछ भी है, वह अल्लाह का है। जिसे वह चाहेगा, क्षमा करेगा, जिसे चाहेगा दंड देगा। अल्लाह की क्षमाशील और दयावान है।*

I595 मुसलमानों की पराजय का कारण यह था कि उनके तीरंदाज अपने स्थान पर टिके नहीं रहे और जब उन्होंने देखा कि मक्का की सेना अपने शिविर से पृथक हो गयी है, तो वे जंग के माल को लूटने दौड़ पड़े। लालच के कारण उन्होंने मुहम्मद के आदेश को नहीं माना। इसलिये उन्हें सदा मुहम्मद की आज्ञा का पालन करना चाहिए, क्योंकि वह सभी के स्वामी के लिये बोलता है। जिन्होंने उसके आदेश का पालन नहीं किया, उन्हें क्षमा मांगनी चाहिए। यदि वे देखेंगे कि यह उनकी भूल थी और प्रायश्चित करेंगे, तो अभी भी वे जन्नत का पुरस्कार पा सकते हैं।

I597 अल्लाह ने मक्का की सेना को जीतने दिया, इसका कारण यह था कि वह मुसलमानों की परीक्षा लेना चाहता था। अब वे अपनी सही दशा जानेंगे। क्या वे मुहम्मद के केवल सुख के साथी हैं या फिर वे अपनी भूल देख रहे हैं? यदि वे मुहम्मद की आज्ञा का पालन करेंगे, तो वे सच्चे मुसलमान बन सकते हैं। सच्चा मुसलमान कभी हतोत्साहित नहीं होता और न ही कभी निराशा के भंवर में फंसता है।

I596 यदि तुम जंग में घायल हुए या जंग हार गये हो, तो न भूलो कि काफिरों को भी क्षति हुई है।

3:140 जंग में तुमको घाव लगा है [मुसलमान उहुद की जंग हार गये], तो ऐसा ही घाव तुम्हारे शत्रु को पहले ही लग चुका है। हम मानवजाति पर बारी-बारी से विपत्ति लाते हैं, जिससे कि अल्लाह निश्चित कर सके कि कौन सच्चा मोमिन है और हम तुममें से शहीद चुन सकें। अल्लाह को वे प्रिय नहीं हैं, जो अवज्ञा करते हैं। मोमिनों की परीक्षा और काफिरों को नष्ट करने के लिये यह अल्लाह का उद्देश्य भी है।

I596 मुसलमानों को यह अवश्य समझना चाहिए कि अल्लाह उन्हें वैसी ही परीक्षाओं के माध्यम से शुद्ध करेगा, जैसे कि उनकी अभी यह परीक्षा हुई है। सच्चे ईमान वाले इससे हतोत्साहित नहीं होंगे।

3:142 *तुम लोग क्या सोचते हो कि अल्लाह द्वारा इस बात की परीक्षा लिये बिना कि कौन उसके उद्देश्य (जिहाद) में लड़ा और अंत तक टिका रहा, जन्नत में प्रवेश की अनुमति पा जाओगे। जब तक मृत्यु सामने नहीं थी, तुम मृत्यु की कामना किया करते थे, किंतु अब जब तुमने इसे अपनी आंखों से देख लिया है, तो तुम पीठ दिखा रहे हो, इससे भाग रहे हो। मुहम्मद केवल एक रसूल है, उससे पहले भी बहुत से रसूल आ चुके हैं। यदि वह मर जाता या मार दिया जाता, तो क्या तुम दीन से मुंह फेरकर भाग जाते? किंतु जो पीठ दिखायेंगे, वो वास्तव में अल्लाह को तनिक भी हानि नहीं पहुंचा पायेंगे। और जो कृतज्ञ भाव से अल्लाह की सेवा करेंगे, उन्हें वह निश्चित ही अच्छा प्रतिफल देगा।*

3:145 *जब तक अल्लाह की इच्छा न हो, कोई प्राणी नहीं मर सकता। उन ग्रंथों के अनुसार जीवन का समय पूर्वनिर्धारित है। जो इस संसार में अपना प्रतिफल चाहते हैं, उन्हें मिलगा और जो मृत्यु के बाद परलोक में अपना प्रतिफल चाहते हैं, उन्हें भी मिलेगा। और हम निस्संदेह उन्हें पुरस्कार देंगे, जो कृतज्ञ भाव से हमारी सेवा करते हैं।*

I599 ऐसा कभी मत सोचो कि जिहाद समाप्त हो चुका है। शीघ्र ही इस्लाम काफिरों के मन में आतंक उत्पन्न करेगा।

3:149 मोमिनो! *यदि काफिरों की बात मानोगे, तो वे तुम्हें उस ओर ले जाएंगे कि तुम अपना दीन छोड़ दो और इससे अनंत काल तक तुम्हारा ठिकाना जहन्नुम बन जाएगा। किंतु अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है और वही सबसे अच्छा सहायक है। हम काफिरों के हृदय में आतंक उत्पन्न कर देंगे, क्योंकि वे अल्लाह को छोड़कर दूसरों की पूजा करते हैं, जबकि अल्लाह ने इसकी अनुमति नहीं दी है।*

I599 तुम्हारे हाथों काफिरों का नरसंहार ठीक चल रहा था और अल्लाह की कृपा से तुम लोग धरती पर से काफिरों को मिटा देने के निकट थे। किंतु तभी तुमने मुहम्मद की आज्ञा का उल्लंघन किया। उनका ठिकाना जहन्नुम की आग होगा, जो कि अवज्ञाकारियों के लिये एक भयानक ठिकाना है।

3:152 *अल्लाह ने तेरे साथ [मुहम्मद] किया समझौता पूरा किया, जब उसने [बद्र की जंग में] तुझे शत्रुओं को नष्ट करने अनुमति दी। और फिर बाद में जब तुम लोगों [उहुद में मुसलमानों] ने साहस छोड़ दिया, तुम लोगों में कहासुनी प्रारंभ हो गयी [मुसलमानों ने आदेशों का उल्लंघन किया] और मक्का की सेना का माल लूटने के लिये व्यवस्था तोड़कर दौड़ पड़े, और जब तुम उसके निकट आ गये जो [जंग की लूट का माल] तुम चाहते थे, तो तुमने पाप किया। तुममें से कुछ इस संसार में लाभ की इच्छा करते हैं और कुछ परलोक की। इसलिये उसने तुम्हें पराजित करवा दिया कि तुम्हारी परीक्षा हो सके। अब उसने तुम्हें क्षमा कर दिया है, क्योंकि अल्लाह मोमिनों पर कृपा दिखाता है।*

3:153 *स्मरण करो, जब तुम लोग कायरता में उस पहाड़ी पर भाग चले [उहुद में मुसलमान टूट गये और भाग खड़े हुए] और तुम्हारे पीछे रसूल तुम्हें जंग में वापस आने के लिये पुकार रहे थे, किंतु तुम लोगों ने पुकार पर ध्यान नहीं दिया? अल्लाह ने तुम लोगों को कष्ट के बदले कष्ट दे दिया, जिससे कि जो लूट का माल तुमसे खो गया या तुम्हारे साथ जो हुआ, उसे लेकर तुम्हें क्षोभ न हो। तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह सब जानता है।*

I601 इस जंग के बाद कुछ तो सहज थे, किंतु दूसरे दुख और चिंता की स्थिति में थे, क्योंकि उन्होंने अल्लाह पर विश्वास नहीं किया था। मुनाफ़िक़ों ने इस निर्णय से पल्ला झाड़ लिया और विफलता के लिये दूसरों को उत्तरदायी ठहराया। यदि उन्होंने अपना-अपना उपाय किया होता, तो सभी लोग सुरक्षित रहे होते।

3:154 *तब, अल्लाह ने तुम पर जो कष्ट भेजे थे उसके बाद, उसने ऊर्जा वापस लाने के लिये तुम पर शांति (ऊंघ) उतार दी। कुछ पर निद्रा छा गयी और कुछ को अपनी पड़ी रही, तो वे अज्ञानी के रूप में अल्लाह के बारे में गलत सोचते हुए जगे*

रहे। और वे पूछ रहे थे, ''इस प्रकरण से हमें क्या लाभ हुआ? (हे रसूल) उनसे कह दे: वास्तव में यह प्रकरण पूर्णत: अल्लाह के हाथ में है अर्थात सब लाभ (अधिकार) अल्लाह को है। वे अपने मन में जो छिपा रहे थे, बता नहीं रहे थे। वे कह रहे थे कि यदि इस प्रकरण हमारी कोई बात सुनी गयी होती, तो हममें से कोई यहां न मारा जाता।'' उनसे कह दे: यदि तुम लोग घर पर रुके होते, तो तुममें से जिनकी नियति मरना होती, वो कैसे भी मर ही जाता। यह इसलिये हुआ कि अल्लाह तुम्हारे विश्वास की परीक्षा ले सके और देख सके कि तुम्हारे मन में क्या चल रहा है। अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति के मन की गुप्त बात जानता है। उस दिन जंग के मैदान में जब दोनों सेनाएं आमने-सामने थीं, तो तुममें से जो भी कायरता दिखाते हुए भाग खड़ा हुआ, उसने कुछ गलत काम किये थे, जिससे वो शैतान के बहकावे में आ गया था। पर अब अल्लाह ने तुम लोगों को क्षमा कर दिया है, क्योंकि अल्लाह क्षमाशील और सहनशील है।

जो जिहाद में मारा जाएगा, वह अल्लाह द्वारा पुरस्कृत होगा

3:156 *मोमिनो! उन काफिरों के समान न बनो, जो विदेशी भूमि या जंग में मारे गये अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, ''यदि वे घर पर रहे होते, तो न मरते अथवा न मारे गये होते!'' उन्होंने जो कहा है, उसके लिये अल्लाह उनसे प्रायश्चित करवायेगा। अल्लाह जीवन और मृत्यु दोनों देने वाला है; तुम जो भी कर रहे हो, अल्लाह सब देख रहा है।*

3:157 *जो अल्लाह के मार्ग में मरते हैं या मारे जाते हैं, उनको अल्लाह से जो क्षमा व दया मिलेगी, वह उन सबसे अच्छा है, जो वे जीवित रहकर कमाते। यदि तुम मर जाते हो या मारे जाते हो, तो तुम निश्चित ही अल्लाह के सामने एकत्र किये जाओगे।*

I603 मुसलमानों की क्षति एक परीक्षा थी, जो उनके निर्णयों द्वारा लायी गयी थी।

3:165 *और जब तुम पर विपत्ति [उहुद की जंग में] आ पड़ी, यद्यपि काफिरों पर यह विपत्ति दोगुनी पड़ी, परंतु तुमने कहा, ''हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?'' उनसे कह दे, ''यह तेरे पास से आया है, क्योंकि अल्लाह सबकुछ नियंत्रित करता है। उस दिन जब दोनों सेनाएं आमने-सामने थीं, तो तुम पर जो विपत्ति आयी, वह अल्लाह की इच्छा थी, जिससे वह पहचान सके कि कौन सच्चा मोमिन है और कौन मुनाफ़िक़ है।'' जब उनसे कहा गया, ''आओ और अल्लाह के उद्देश्य [जिहाद] में लड़ो और अपने शत्रुओं पीछे खदेड़ो'', तो उन्होंने उत्तर दिया, ''यदि हम लड़ना जानते, तो हम तेरा साथ अवश्य देते।''*

3:168 *उस दिन उनमें से बहुत से ईमान की अपेक्षा कुफ्र के अधिक निकट थे। उन्होंने अपने मुख से जो कहा, वह वो नहीं था जो उनके मन में था, पर अल्लाह जानता था कि वे अपने मन में क्या छिपा रहे हैं। अपने घर में बैठकर उन्होंने अपने भाइयों के बारे में जो कहा था, वह यह था, ''यदि उन्होंने हमारी बात सुनी होती, तो वे मारे न गये होते।'' उनसे कह दे: यदि तुम लोग जो कह रहे हो, वह सत्य है तो अपनी मृत्यु टाल लो!*

3:169 *ऐसा कभी न मानों कि अल्लाह के उद्देश्य [जिहाद] में लड़ते हुए जो मारे गये, वो मर गये हैं। नहीं, वे अपने स्वामी के साथ जीवित हैं और अच्छी व्यवस्था पा रहे हैं। अल्लाह ने उन्हें जो माल दिया है, उसका आनंद उठा रहे हैं और उनके*

लिये प्रसन्न हो रहे हैं, जो अभी उनमें मिले नहीं, उनके पीछे रह गये हैं कि उन्हें कोई भय या पश्चाताप नहीं होगा। वे अल्लाह की कृपा और दया पाकर आनंद से भरे हुए हैं। अल्लाह मोमिनों को पुरस्कार देने में चूकता नहीं है।

3:172 *जहां तक उनकी बात है, जिन्होंने [उहुद की जंग में] पराजित होने के बाद भी अल्लाह और उसके रसूल की पुकार सुनी, जो अच्छे कर्म करते हैं और अल्लाह से डरते हैं, वे बड़ा और सुंदर प्रतिफल पायेंगे। वे वही हैं, जिनका यह कहे जाने पर दीन में विश्वास और बढ़ गया कि ''तुम्हारा शत्रु बड़ी सेना के साथ एकत्र हो रहा है, इसलिये उससे डरो'', और इन्होंने कहा, ''हमारे लिये अल्लाह की सहायता ही पर्याप्त है। वही सबसे बड़ा रक्षक है।'' इस प्रकार उन्होंने अल्लाह की कृपा प्राप्त की और उनको कोई क्षति नहीं पहुंची। और उन्होंने अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये काम किया, क्योंकि अल्लाह असीम कृपा से भरा हुआ है।*

I606 काफिर जिस सफलता का अनुभव कर रहे हैं, वह अस्थाई है। वे और बुराई करेंगे और वे दंडित किये जाएंगे। अल्लाह मोमिनों को इस दशा में नहीं छोड़ेगा। किंतु परीक्षा दुर्बलों को सबलों से पृथक कर देगी। जिनके पास धन है, उन्हें अल्लाह के उद्देश्य पर व्यय करना चाहिए।

3:175 *शैतान ही है, जो तुम्हें उन [मक्कावासियों के नेताओं] के अनुयायियों से डराता है। उनसे मत भयभीत हो; यदि तुम सच्चे मोमिन हो, तो मुझसे डरो। उनके लिये दुखी मत हो, जो दीन से मुंह फेर रहे हैं, क्योंकि अल्लाह उनसे आहत नहीं है। अल्लाह उन्हें संसार के किसी भाग में नहीं आने देगा। कठोर यातना उनकी प्रतीक्षा में है। जो ईमान के बदले कुफ्र खरीदते हैं, वे अल्लाह को हानि नहीं पहुंचा पायेंगे और वे दुखदायी दंड पायेंगे।*

3:178 *काफिर यह न सोचें कि हमने उनकी भलाई के लिये उनके दिन लंबे कर दिये हैं। हमने उनको केवल इस आशा में समय दिया है कि वे और बड़ा गुनाह करेंगे। वे अपमानजनक दंड पायेंगे।*

जिहाद के रूप में हत्या

उहुद के बाद बहुत सी अरबी जनजातियों ने सुफ्यान इब्न खालिद के नेतृत्व में गठबंधन कर दिया। मुहम्मद ने सुफ्यान की हत्या के लिये एक गिरोह भेजा, क्योंकि उनके नेतृत्व के बिना यह गठबंधन ढह जाता। तो हत्यारों ने सुफ्यान की हत्या कर दी, उनका सिर धड़ से पृथक कर दिया और उसे लेकर मदीना वापस चले गये।

अब्दुल्ला ने मुहम्मद को उसके शत्रु का सिर भेंट किया। मुहम्मद अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसे अपनी छड़ी दी। उसने कहा, ''कयामत के दिन यह छड़ी तुम्हारे और मेरे बीच एक प्रतीक होगी। उस दिन बहुत कम लोगों के पास आश्रय लेने के लिये ऐसी छड़ी होगी।'' अब्दुल्लाह ने इसे अपने तलवार की म्यान से लगा लिया।

अध्याय 12

58:20 जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वही अपमानित होंगे। अल्लाह ने घोषणा की है, ''निश्चित ही मैं अपने रसूलों के साथ विजेता रहूंगा।'' वास्तव में अल्लाह ताकतवर और प्रभुत्वसम्पन्न है।

नृजातीय नरसंहार

I653 मुहम्मद ने मदीना की तीन यहूदी जनजातियों में से दूसरी जनजाति पर हमला किया। उसने अपनी फौज को तैयार किया और उनके गढ़ियों की घेराबंदी करने निकल पड़ा। ये यहूदी अरब का सबसे अच्छा खजूर उगाते थे। तो मुहम्मद ने उनके खजूर के पेड़ों को काट डाला और जला दिया। यहूदी अपने खजूर के बागों को जलते हुए देखते रहे। मुहम्मद पर अरब के युद्ध के नियमों को तोड़ने का आरोप लगा।

I653 अब दूसरी यहूदी जनजातियों ने आश्वासन दिया कि वे उन यहूदियों की सहायता करने आयेंगे। किंतु इस्लाम के विरुद्ध कोई यहूदी दूसरे यहूदी के साथ खड़ा नहीं हुआ। अपने बंधुओं से कोई सहायता न पाकर, घिरे हुए यहूदियों ने अल्लाह के रसूल से एक सौदा किया। उन्हें अपने साथ अपनी कुछ वस्तुएं रखने की अनुमति तो मिली, पर मदीना छोड़कर जाना पड़ा।

I654 कुछ नये प्रकार की समस्याएं उठ खड़ी हुईं, जैसे कि खजूर के पेड़ों को जलाना। कुरआन के पास इसका उत्तर था।

> 59:2 *वही है, जिसने ग्रंथ के लोगों [यहूदियों] को घरों से निकाल बाहर किया था और पहले निर्वासन में भेज दिया था। उन्होंने नहीं सोचा था कि उन्हें छोड़कर जाना पड़ेगा। उन्हें तो लगता था कि उनके गढ़ अल्लाह से उनकी रक्षा करेंगी। पर अल्लाह का कोप उन पर वहां से पहुंचा, जहां से उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी और उनके मन में ऐसा भय उत्पन्न हो गया कि उन्होंने अपने ही हाथों और मोमिनों के हाथों से भी अपने घरों को नष्ट कर दिया। हे देखने वालो, जो इसे देख सको, तो इस उदाहरण को चेतावनी के रूप में लो!*
>
> 59:3 *और यदि अल्लाह ने उनके निर्वासन का निर्णय न दिया होता, तो निश्चित ही उसने इस संसार में उन्हें दंडित किया होता। और परलोक में भी वे जहन्नुम की आग का दंड पायेंगे, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा की है। जो भी अल्लाह की आज्ञा नहीं मानता है, वह जानता है कि अल्लाह वास्तव में दंड देने में कठोर है।*
>
> 59:5 *अल्लाह ने तुम्हें कुछ खजूर के पेड़ों को काट डालने की अनुमति दी थी और कुछ को न काटने की अनुमति दी थी, जिससे कि दुष्ट [यहूदी] अपमानित हो सकें। अल्लाह द्वारा लूट का माल अपने रसूल को देने के बाद, तुम उनको बंदी बनाने के लिये घोड़ों या ऊंटों के साथ आगे नहीं बढ़े, पर अल्लाह अपने रसूलों को अधिकार देता है कि वो जो चाहे चुन लें। अल्लाह जो चाहे कर सकता है।*

खंदक की जंग

I669 मक्कावासियों ने एक सेना एकत्र की और मुहम्मद पर आक्रमण करने निकल पड़े। चूंकि मक्का में मुहम्मद के कई गुप्तचर थे, तो तत्काल आसन्न युद्ध की सूचना मिल गयी और उसने रक्षा के लिये एक खंदक खोदा।

I677-683 खंदक के बचाव से मक्कावासियों में निराषा हुई। मौसम बुरा था और सहयोगी एक-दूसरे के प्रति अविश्वास से भरे हुए थे। इक्कीस दिन से अधिक समय तक की गयी घेराबंदी में जब वास्तविक संघर्ष की बात आई, तो मुट्ठीभर लोग ही मारे गये। मक्कावासियों ने शिविर उखाड़ दिये और वापस मक्का लौट गये। यह मुहम्मद की जीत थी।

> 33:9 *मोमिनो! अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे शत्रुओं ने तुम पर आक्रमण किया था [खंदक की जंग], और हमने उन पर एक बड़ा अंधड़ और लड़ाके भेज दिये, जो उन्हें नहीं दिखे, पर अल्लाह स्पष्ट देख रहा था कि तुम क्या कर रहे हो। [मक्कावासी और उनके सहयोगियों वाले महासंघ ने मदीना की घेराबंदी कर दी थी, पर महासंघ की कमजोर योजना, कमजोर नेतृत्व और बुरे मौसम ने इन्हें विफल कर दिया।]*
>
> 33:10 *जब उन्होंने तुम पर ऊपर-नीचे सब ओर से आक्रमण किया, तो तुम्हारी आंखें पथरा गयीं, तुम्हारे प्राण सूख गये और तुमने अल्लाह की ताकत पर संदेह किया। यहीं मोमिनों की परीक्षा ली गयी और वे बुरी प्रकार झंकझोड़ दिये गये। मुनाफ़िक़ों और दुविधाग्रस्त मन वालों ने कहा, ''अल्लाह और उसके रसूल ने हमें वचन तो दिया था, किंतु केवल धोखा देने का।'' उनमें से एक समूह ने कहा, ''मदीना के लोगो! तुम यहां सुरक्षित नहीं हो। इसलिये अपने नगर वापस चले जाओ।'' फिर एक और समूह ने कहा, ''हमारे घरों को असुरक्षित छोड़ दिया गया है'', यद्यपि कि उनके घर असुरक्षित नहीं थे, वे तो बस वहां से बहाना बनाकर भागना चाहते थे।*
>
> 33:14 *यदि शत्रु समूचे नगर में पहुंच जाते, तो जो वहां थे उनमें विद्रोह भड़काया जाता और वे निश्चित ही विद्रोह कर देते। यदि वे स्वयं पर नियंत्रण भी करते, तो बहुत अल्प समय तक ही विद्रोह करने से स्वयं को रोक पाते। इससे पहले उन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि वे कभी पीठ दिखाकर नहीं भागेंगे। अल्लाह से की गयी प्रतिज्ञा अवश्य पूरी की जानी चाहिए। उनसे कह दे: भागना उनके किसी काम न आएगा। यदि तुम मृत्यु या मार दिये जाने से बचना चाहते हो, तो भले ही तुम बच भी जाओ, पर तुम इस संसार में आनंद भोगने के लिये बहुत थोड़े समय ही रह पाओगे। उनसे कह दे: तुम्हें अल्लाह से कौन बचा पायेगा, यदि उसकी इच्छा तुम्हें दंड देने की है या तुम दया दिखाने की है? केवल अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक और सहायक है।*

यहूदियों के लिये समाधान

I684 इस जंग के बाद मुहम्मद पच्चीस दिनों तक यहूदियों की घेराबंदी किये रखा। अंततः यहूदियों ने अपने भाग्य का निपटारा एक मुसलमान साद को सौंप दिया। ये यहूदी अतीत में साद के सहयोगी रहे थे। उसका निर्णय सीधा था। सभी यहूदी पुरुषों की हत्या कर दो। उनकी संपत्ति ले लो और उनकी स्त्रियों व बच्चों को बंदी बना लो। मुहम्मद ने कहा, ''तुमने अल्लाह का निर्णय सुनाया है।''

I690 बंदी बनाये गये यहूदी मदीना ले जाए गये। मदीना के हाट में उन्होंने खंदक ख्बड़ा सा गड्ढा, खोदा। उस पूरे दिन 800 यहूदियों की हत्या कर दी गयी। मुहम्मद और उसकी बारह वर्षीय बीवी दिनभर और रात तक बैठकर यहूदियों का नरसंहार देखते रहे। अल्लाह के रसूल ने प्रत्येक यहूदी पुरुष की हत्या करवा दी।

I693 मुहम्मद ने उन यहूदियों की संपत्ति, स्त्रियां और बच्चे ले लिये और मुसलमानों में बांट दिया। मुहम्मद ने दास [गुलाम] बनाये गये लोगों में पांचवां भाग ले लिया और एक मुसलमान को उन महिला यहूदी दासों को निकट के नगर में बेचने के लिये भेजा, जहां उन यहूदी स्त्रियों को बेचा गया। इन यहूदी स्त्रियों की बिक्री से मिले धन से मुहम्मद ने घोड़े और हथियार खरीदे।

I693 लूट के इस माल में मुहम्मद के लिये एक अंतिम भाग बचा था। वह था उसके भोग के लिये सबसे सुंदर यहूदी स्त्री।

I696-7 खंदक की जंग में अल्लाह ही था, जो उस दिन जीता था। अल्लाह ही है, जो मुसलमानों को ताकत और इच्छा प्रदान करता है। काफिर चाहे जो कर लें, पर अल्लाह ही जीतेगा।

> 33:25 *और अल्लाह ने काफिरों को उनके क्रोध के साथ फेर दिया और इससे उनको कुछ नहीं मिला। अल्लाह ने जंग में मोमिनों की सहायता की, क्योंकि अल्लाह प्रभुत्वशाली व ताकतवर है। उसने महासंघ की सहायता करने वाले ग्रंथ के उन लोगों को उनके गढ़ से उतार दिया और उनके मन में भय भर दिया। उनमें से कुछ को तुमने मार डाला और कुछ को बंदी बना लिया। उसने तुम्हें उनकी भूमि, भवन और धन-संपत्ति दे दी और तुम्हें ऐसी भूमि दी, जिस पर तुमने कभी पैर तक नहीं रखा था। अल्लाह सब कुछ कर सकता है। [800 यहूदी पुरुषों की हत्या की गयी, उनकी संपत्ति हड़प ली गयी और उनकी स्त्रियों व बच्चों को गुलाम बना लिया गया।]*

यहूदियों के विषय में कुरआन के अंतिम शब्द

> 5:12 *अल्लाह ने बनू इजराइल के बच्चों से भी वचन लिया था और उनमें बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे। अल्लाह ने कहा था कि यदि तुम नमाज की स्थापना करते रहे, ज़कात देते रहे, मेरे रसूलों पर ईमान रखे रहे, उनकी सहायता करते रहे और अल्लाह को अच्छा उपहार देते रहे, तो मैं तुम्हारे साथ हूं। यदि ऐसा हुआ, तो मैं अवश्य तुम्हारे अपराध धो दूंगा और तुम्हें ऐसी जन्नत में प्रवेश दूंगा, जहां नदियां बहती होंगी। जो भी इन सबमें विश्वास नहीं करता है अर्थात कुफ्र करता है, वह सही मार्ग से भटक चुका है।''*
>
> 5:13 *चूंकि उन [यहूदियों] ने अपना वचन तोड़ा था, तो हमने उन्हें धिक्कार दी और उनके हृदय को कठोर कर दिया। उन्होंने अपने स्थानों से ग्रंथ के शब्दों को परिवर्तित कर दिया [इस्लाम दावा करता है कि यहूदियों ने अपने धर्मग्रंथों से वह संदर्भ हटा दिया, जिसमें मुहम्मद के आने की बात कही गयी थी, और उन्हें जो बताया गया था, उसका एक भाग भुला दिया] । उनमें से थोड़े से को छोड़कर अन्य सभी में छल पाओगे, पर उन्हें क्षमा कर दो और कुकृत्यों को अनदेखा करो। अल्लाह उनसे ही प्रेम करता है, जो उदारतापूर्वक व्यवहार करते हैं।*

अध्याय 13

48:13 जो अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास नहीं लाये हैं, उन काफिरों के लिये हमने एक दहकती आग तैयार कर रखी है।

मुहम्मद की कई बीवियां थीं। कुरआन उसके प्रेमप्रसंगों के बारे में विस्तार से बताती है।

वह झूठ

जब मुहम्मद उन लोगों पर हमला करने के मिशन पर निकला, जिन्होंने इस्लाम का विरोध किया, तो अल्लाह के उद्देश्य अर्थात जिहाद लड़ने के लिये मुस्तलिक़ जनजाति पर हमला करने की बारी वह आयशा को अपने साथ ले गया था।

I731 जब शिविर उखाड़ लिये गये और प्रभारी व्यक्ति ने ऊंट पर हौदा लाद लिया, तो वह आयशा को वहां न पाकर उसके बिना ही वहां से निकल पड़ा। जब आयशा लौटकर आयी, पूरा दल निकल चुका था। वह एक ऊंट पर आयी, जिसे एक युवक हांक रहा था। यह युवक मुख्य दल से पीछे छूट गया था और यही आयशा को मदीना को वापस लेकर आया।

I732 इसके बाद कानाफूसी होने लगी, विभिन्न प्रकार की बातें होने लगीं और चर्चाएं फैलने लगीं। आयशा निर्दोष है या व्यभिचारी कानून (अपराधी), इसका निर्णय अंत में कुरआन की एक आयत उतरने से हुआ। यह आयत आज तक व्यभिचार के बारे में शरिया कानून (इस्लामी कानून) है।

24:1 *एक सूरा (अध्याय) जिसे हमने उतारा है और अनिवार्य किया है तथा जिसमें हमने तुम्हें स्पष्ट आयतें दी है कि तुम शिक्षा लो। जो आदमी और औरत व्यभिचार करते हैं, उनमें से प्रत्येक को 100 कोड़े मारो और उन पर तरस न खाओ, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि यह तुम्हें अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से रोक दे। यदि तुम अल्लाह और कयामत में विश्वास रखते हो, तो मोमिनों के सामने उनको दंड दो। एक व्यभिचारी केवल किसी व्यभिचारी औरत या काफिर से ही शादी कर सकता है और कोई व्यभिचारी औरत किसी व्यभिचारी या काफिर के अतिरिक्त किसी और से शादी नहीं कर सकती है। मोमिनों के लिये इस प्रकार की शादी वर्जित अर्थात हराम है।*

24:4 *जो कोई निर्दोष औरत पर आरोप लगाये और अपने आरोपों के पक्ष में चार गवाह न ला पाये, उसे अस्सी कोड़े मारो। इसके बाद केवल उन्हें छोड़कर जो प्रायश्चित करें और दीन के अनुसार जियें, ऐसे लोगों की गवाही कभी न मानो, क्योंकि ये लोग भयानक अवज्ञाकारी हैं। अल्लाह वास्तव में क्षमाशील और दयावान है।*

24:6 *यदि शौहर बीवी पर व्यभिचार का आरोप लगाये, पर उसके पास स्वयं के अतिरिक्त कोई और गवाह न हों, तो यदि वह चार बार अल्लाह की सौगंध खाते हुए चार बार कहे कि वह सच बोल रहा है और यदि उसकी बात झूठ निकले तो उस*

पर अल्लाह का कोप हो, तो उसकी गवाही स्वीकार कर लो। यदि उसकी बीवी अल्लाह की सौगंध खाकर चार बार कहे कि वह निर्दोष है और यदि उसकी बात झूठी हो तो उस पर अल्लाह का कोप हो, तो उसे दंड नहीं दिया जाना चाहिए।

24:10 *यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती और अल्लाह तत्वज्ञ न होता, तो यह आयत तुम्हारे पास नहीं लायी जाती।*

24:11 *वास्तव में तुम्हारे बीच एक समूह ऐसा है, जो वह झूठ फैला रहा है [एक सशस्त्र हमले के समय मुहम्मद की प्रिय बीवी आयशा ने एक दिन एक युवा अजनबी के साथ अकेले में व्यतीत किया था। मुहम्मद ने आयशा से तब शादी की थी, जब वह मात्र छह वर्ष की थी। उस दिन आयशा और उस युवा व्यक्ति के बीच में क्या हुआ होगा, इस पर लोगों में कई प्रकार की बातें हो रही थीं], पर तुम लोग इसे बुरा न समझो, क्योंकि यह भी तुम लोगों के लिये लाभकारी ही सिद्ध हुआ है। उनमें से प्रत्येक को उनकी करनी का दंड मिलेगा। जिन्होंने यह झूठ फैलाया है, उन्हें भयानक दंड मिलेगा।*

24:12 *क्यों जब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने इसे सुना, तो अपने लोगों के बारे में अच्छा नहीं सोचा और कहने लगे, ''यह तो साफ-साफ झूठ है?'' क्यों वे चार गवाह नहीं लाये? और चूंकि वे कोई गवाह नहीं ला सके, तो निश्चित ही वे अल्लाह की दृष्टि में झूठे हैं।*

24:12 *यदि यह तुम पर इस लोक और परलोक में अल्लाह की ओर से भलाई और दया न होती, तो वह झूठ फैलाने के लिये तुम लोगों को कठोर दंड मिलता। तुम लोग [मुसलमान] उन बातों पर कानाफूसी करने लगते हो, जिसके बारे में तुम्हें कुछ नहीं पता होता है। तुम्हें लगता होगा कि यह बहुत छोटी बात है, पर अल्लाह की दृष्टि में यह बहुत गंभीर है। और क्यों जब तुमने ये बातें सुनी, तो यह नहीं कहा, ''हम लोगों के लिये इस पर बात करना ठीक नहीं है। हे अल्लाह! यह गंभीर अपराध है।'' अल्लाह तुम लोगों को चेतावनी दे रहा है कि यदि तुम लोग सच्चे मोमिन हो, तो दोबारा ऐसा मत करना। अल्लाह ने अपनी आयतें तुम पर स्पष्ट कर दी हैं, क्योंकि अल्लाह सब जानता है। जो किसी मोमिन के बारे में अफवाह फैलाने में आनंद का अनुभव करता है, वह इस लोग और परलोक दोनों में कठोर दंड पायेगा। और अल्लाह जानता है, जो तुम नहीं जानते हो।*

चूंकि चार गवाह सामने नहीं आये, इसलिये इसे व्यभिचार नहीं माना गया और आरोप लगाने वाले को अस्सी कोड़े मारे गये।

33:50 *रसूल! यदि तू शादी करना चाहे, तो हमने तेरे लिये तेरी बीवियों को, जिन्हें तूने महर (शादी का उपहार) चुका दिया हो तथा गुलाम बनायी गयी वो स्त्रियां, जिसे अल्लाह ने तुझे जंग की लूट के माल के रूप में दिया है, और तेरे चाचा की बेटियों, फूफी की बेटियों, मामा की बेटियों और मौसी की उन बेटियों को, जो तेरे साथ मदीना भाग गयी थीं तथा किसी भी ईमान वाली ऐसी औरत को, जिसने स्वयं को तुझे सौंप दिया हो, शादी के लिये हलाल (वैध) कर दिया है। केवल तेरे पास यह विशेषाधिकार है, न कि किसी और मोमिन के पास। हम जानते हैं कि हमने बीवियों और गुलाम-लड़कियों के बारे में मोमिनों को क्या आदेश दिये हैं। हम तुझे यह विशेषाधिकार दे रहे हैं कि तू कलंक से मुक्त हो जाए। अल्लाह क्षमाशील और दयावान है!*

33:51 *जब तू चाहे, तो उनमें से किसी से दूर हो जा और जब तू चाहे, तो उनमें से किसी को अपने बिस्तर पर ले आ तथा तुझ पर कोई दोष नहीं आएगा कि तूने जिसे पहले किसी समय अलग कर दिया था, उसे बिस्तर पर लाना चाहता है। इस*

प्रकार, तेरे लिये उनको सुख देना सरल होगा और इससे उनके दुख दूर होंगे तथा वे उसी में संतुष्ट रहेंगी, जो कुछ तूने उनमें से प्रत्येक को दिया है। अल्लाह जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है और अल्लाह सबकुछ जानता है और सहनशील है।

33:52 *इसके बाद तुम्हारे पास जो सेक्स-स्लेव लायी जाती हैं, उनको छोड़कर अन्य किसी औरत से शादी करना अथवा दूसरी बीवी पाने के लिये अपनी बीवियों को बदलना हराम होगा, भले ही तुम किसी और औरत की सुंदरता तुम्हें भा जाए। [मुहम्मद के पास नौ बीवियां और बहुत सेक्स-स्लेव थीं] । और अल्लाह सब पर दृष्टि रखता है।*

मारिया, भोग के लिये कोप्टिक गुलाम

मुहम्मद को दो कोप्टिक (ईसाई) लड़कियां गुलाम के रूप में दी गयीं। इनमें से एक को उसने एक दूसरे मुसलमान को दे दिया, जबकि घुंघराले केशों वाली गोरी-चिट्टी मारिया को अपने लिये रख लिया। उसने मारिया को अपने हरम में नहीं डाला, अपितु उसके लिये मदीना के एक अन्य भाग में एक ठिकाना बनवाया। मारिया ने उसे सेक्स में ऐसा कुछ दिया, जो उसकी कोई बीवी नहीं दे सकी थी। वह था एक नर संतान इब्राहीम। मुहम्मद उसी का दीवाना हो गया।

पूरा हरम इससे जल-भुन रहा था। उसकी बीवियां एकसाथ मारिया के विरुद्ध हो गयीं और उसके परिवार में क्लेश बढ़ गया। मुहम्मद ने हाथ खींच लिया और और अपनी प्राण छुड़ाने के लिये कसम खा ली कि वह एक मास तक अपनी बीवियों से दूर रहेगा। किंतु वह मारिया के साथ रहा।

कुरआनः

66:1 *रसूल! तू उसे क्यों हराम करता है, जिसे हमें तेरे लिये हलाल किया है? तू अपनी बीवियों की प्रसन्नता के लिये ऐसा कर रहा है? [मुहम्मद मारिया नामक एक कोप्टिक (इजिप्ट की ईसाई) स्लेव-गर्ल (गुलाम) का दीवाना था। मुहम्मद की बीवी हफ्सा ने अपने कक्ष में मुहम्मद को मरिया के साथ रंगे हाथ पकड़ लिया, जो कि हफ्सा के अधिकार क्षेत्र का हनन था। मुहम्मद ने हफ्सा से कहा कि वह मारिया से सारे संबंध समाप्त कर लेगा, पर उसने ऐसा नहीं किया। पर हफ्सा को इस प्रकरण को दबा देने को कहा।] अल्लाह उदार व दयावान है। अल्लाह ने तुझे अपने कसम से मुक्त कर दिया है और अल्लाह ही तेरा स्वामी है। वह सर्वज्ञानी व तत्वज्ञ है।*

66:3 *जब रसूल ने अपनी एक बीवी से एक राज छिपाने को कहा, तो उसने इसे दूसरों को बता दिया, [हफ्सा ने मारिया के बारे में आयशा (मुहम्मद की प्रिय बीवी) को बता दिया और फिर उसके हरम में ईर्ष्या फैल गयी] । अल्लाह ने मुहम्मद को इसके विषय में बताया, तो उसने अल्लाह की इस सूचना की कुछ बात उसे (हफ्सा) बतायी और कुछ बात छिपा गया। जब मुहम्मद ने उससे यह कहा, तो उसने कहा, ''तुम्हें किसने बताया?'' उसने कहा, ''उसी ने बताया, जो सबकुछ जानने वाला और तत्वदर्शी है।''*

66:4 *यदि तुम दोनों [हफ्सा और आयशा] अल्लाह के सामने प्रायश्चित कर लो, तुम्हारे मन में पहले से यह बात है, किंतु यदि तुम लोग रसूल के विरुद्ध षडयंत्र करोगी, तो जान लो कि अल्लाह उसका रक्षक है और इसके अतिरिक्त जिबराइल, मोमिनों में प्रत्येक अच्छा व्यक्ति और फरिश्ते उसके सहायक हैं। कहीं ऐसा न हो कि वह [मुहम्मद] तुम लोगों को तलाक दे*

दे, यदि ऐसा हुआ तो अल्लाह उसे तुमसे अच्छी इबादत वाली, ईमान वाली, विनम्र, निष्ठावान, प्रायश्चित करने वाली, आज्ञाकारी, रोजा रखने वाली, विधवा और कुंवारी बीवियां दे देगा।''

इब्राहीम मुहम्मद का अत्यंत प्रिय था। किंतु जब वह पंद्रह महीने का हुआ, तो अस्वस्थ हो गया। मारिया और उसकी गुलाम बहन ने गंभीर रूप से अस्वस्थ इब्राहीम की देखभाल की। किंतु वह नहीं बचा और उसकी मृत्यु के समय मुहम्मद वहां था। वह बहुत रोया। मुहम्मद पर यह कलंक लगना था कि उत्तराधिकार के लिये कोई उसका कोई बेटा जीवित नहीं है। अरब में बेटे के रूप् में उत्तराधिकारी न होना अपमान माना जाता था।

अपनी पुत्र-वधू से शादी

मुहम्मद का एक दत्तक पुत्र ज़ैद था। मुहम्मद की दृष्टि ज़ैद की पत्नी ज़ैनब पर थी। ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। तब के अरब की परंपरा में किसी व्यक्ति का अपनी पुत्रवधू से शादी करना पाप माना जाता था और ऐसा करना वर्जित था। पर जब मुहम्मद आयशा के साथ सो रहा था, तो उस पर एक आयत उतरी और वह बोला, ''कौन ज़ैनब के पास जाकर उसे बधाई देगा और उसे बतायेगा कि अल्लाह ने हमारी शादी स्वीकार की है?'' नौकरानी तत्काल यह सूचना ज़ैनब को देने दौड़ पड़ी। इस प्रकार मुहम्मद ने अपने हरम में एक और बीवी लाया।

33:4 *अल्लाह ने किसी मनुष्य को एक तन में दो-दो हृदय नहीं दिये हैं, और न ही जिन बीवियों को तुम तलाक देते हो उनमें से तुम्हारी अम्मियां बनायीं, न ही उसने दत्तक बेटों को तुम्हारा वास्तविक बेटा बनाया है। [इस आयत के आने से पहले अरबों में दत्तक पुत्र को अपने रक्त से जन्मे पुत्र जैसा ही माना जाता था। यह आयत नीचे आयत 27 से जुड़ती है] । तुम लोग मुंह से जो निकालते हो, वो केवल शब्द हैं, किंतु अल्लाह सत्य बोलता है और सही पथ दिखाता है। अपने दत्तक पुत्रों को उनके वास्तविक पिताओं का नाम दो; अल्लाह की दृष्टि में यही उचित है।*

33:36 *और जब अल्लाह और उसके रसूल किसी बात का निर्णय कर दें, तो किसी मोमिन आदमी या औरत के लिये उचित नहीं है कि वह उस प्रकरण में अपना पक्ष चुने। जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करते हैं, वे निश्चित ही गलत मार्ग पर हैं। और रसूल तू स्मरण कर, जब तूने अल्लाह की कृपा पाये हुए [अर्थात इस्लाम स्वीकार किये हुये] अपने दत्तक पुत्र [ज़ैद] से कहा, ''अपनी बीवी अपने पास रख और अल्लाह से डर'' और जिस बात को अल्लाह उजागर करने वाला था, उसे तूने अपने मन में छिपा लिया। तू डर रहा था [कि यदि तूने अपनी पुत्र वधू से ही शादी कर ली] तो लोग क्या कहेंगे,, जब यह सही होता कि तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए। और जब ज़ैद ने अपनी बीवी को तलाक किया, तो हमने तुझे उसे बीवी के रूप में दे दिया, तो इसलिये जब दत्तक पुत्र अपनी बीवियों को तलाक दे दें, तो मोमिनों के लिये उनकी बीवियों से शादी करना पाप नहीं होगा। और अल्लाह की इच्छा तो पूरी होकर रहेगी।*

चूंकि ज़ैद दत्तक पुत्र था, तो वह वास्तविक पुत्र नहीं था, इसलिये उसकी बीवी से शादी करना पाप नहीं था।

यही वो समय था, जब मुस्लिम औरतों पर पर्दा अनिवार्य किया गया। ये बीवियां मोमिन-उल-उमीन अर्थात मोमिनों की अम्मी कही जाने लगीं और मुहम्मद की मृत्यु के बाद इन्होंने किसी और से शादी नहीं की।

33:55 *यदि रसूल की बीवियां बिना पर्दे के अपने पिताओं, बेटों, भाई के बेटों, बहनों के बेटों, उनकी औरतों अथवा उनकी गुलाम-लड़कियों से बात करें, तो उनको कोई दोष नहीं लगता है। औरतों! अल्लाह से डरो, क्योंकि अल्लाह सबका साक्षी है।*

अध्याय 14

3:53 ''हमारे स्वामी! जो कुछ तूने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये हैं और हम रसूल का अनुसरण करते हैं; तो हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।''

खैबर

I756 अल-हुदैबिया की संधि के बाद, मुहम्मद लगभग दो माह तक मदीना में रहा। फिर उसने अपनी फौज एकत्रित की और खैबर के गढ़ की ओर बढ़ा। खैबर मदीना से 100 मील दूर समृद्ध यहूदी किसानों का गढ़ था और यहां यहूदी अपनी-अपनी गढ़ के एक गांव में रहते थे।

I758 मुहम्मद ने एक ही बार में उनके गढ़ों पर कब्जा कर लिया। वहां से बंदी बनाये गये यहूदियों में साफिया नामक एक सुंदर यहूदी महिला थी। मुहम्मद उसे अपने यौनसुख के लिये ले लिया। पहले साफिया मुहम्मद के एक आदमी को दी गयी थी। किंतु मुहम्मद की दृष्टि में आते ही उस पर उसकी दृष्टि गड़ गयी। मुहम्मद ने उसे साफिया की दो बहनों को देकर उनके बदले उसे ले लिया।

I759 खैबर के अवसर पर मुहम्मद ने बंदी बनायी गयी स्त्रियों के साथ यौन सम्बंध बनाने को लेकर नये आदेश दिये।

I764 मुहम्मद जानता था कि खैबर में कहीं बड़ी मात्रा में धन छिपाकर रखा गया है, तो उसे जिस यहूदी पर उस धन की जानकारी होने का संदेह था, उसे उठवाकर अपने पास मंगाया और उसे भयानक यातना देने के बाद उसका सिर धड़ से पृथक करवा दिया।

I764 खैबर में मुहम्मद ने सबसे पहला ज़िम्मी दर्जा दिया। इस्लाम में ज़िम्मी उसे कहा जाता है, जिसके पास कोई नागरिक अधिकार नहीं होता है और उसे शरिया कानून के अंतर्गत रहना होता है। यहूदियों की अच्छी वस्तुएं हड़पने के बाद मुहम्मद ने उन्हें वहां भूमि पर काम करने के लिये छोड़ दिया। उन्हें मुहम्मद को अपनी उपज का आधा भाग जजिया, ज़िम्मी कर के रूप में देना था।

तीर्थयात्रा

I789 खैबर से लौटने के बाद मुहम्मद ने बहुत से हमलावर दल और अभियानों पर गिरोह भेजे। मदीना जाने के सात वर्ष पश्चात और हुदैबिया की संधि के एक वर्ष पश्चात मुहम्मद मुसलमानों का नेतृत्व करता हुए मक्का में काबा की ओर निकला। वहां उसने काबा की मूर्तियों में से एक को चूमा और काबा के चारों ओर चक्कर लगाये। जब वह कोने में काले पत्थर तक पहुंचा, तो वह उसके समीप गया और उसे चूमा। उसने वहां काबा के तीन चक्कर लगाये।

I790 मक्का में तीन दिन रुकने के पश्चात संधि के अनुसार कुरैशों ने उससे जाने को कहा। मुहम्मद ने कहा कि उसे वहां एक शादी के भोज में जाने के लिये रुकना है और वह उसमें कुरैशों को भी आमंत्रित करेगा। कुरैशों ने कहा, नहीं, कृपया यहां से चले जाओ। वह चला गया।

मुता पर हमला

I791-3 मक्का से लौटने के बाद ही शीघ्र उसने 3000 जिहादियों की एक फौज मूता भेजी। आज मूता सीरिया के निकट मदीना का उत्तरी भाग है। जब मुस्लिम फौज वहां पहुंची, तो बैजेंटाइन साम्राज्य की बहुत बड़ी सेना वहां देखी। मुसलमान डर गये। बैजेंटाइन सैनिक पेशेवरर योद्धा थे और संख्या में बहुत अधिक थे।

मक्का की जीत

I803 हुदैबिया की संधि में मक्कावासियों अर्थात कुरैशों और मुहम्मद के बीच इस पर सहमति बनी थी कि वे जिस जनजाति से चाहें, गठबंधन कर सकते हैं।

I811 मक्कावासियों के एक सहयोगी जनजाति और मुहम्मद की एक सहयोगी जनजाति के बीच हुई झड़प का बहाना बनाकर मुहम्मद दस हजार जिहादियों को लेकर मक्कावासियों को दंड देने निकल पड़ा।

I819 मुहम्मद ने अपने कमांडरों से केवल उनकी हत्या करने को कहा था, जिन्होंने उसके विरुद्ध बोला था। ऐसे लोगों की सूची में जो भी था, उसकी हत्या की जानी थीः

- मुहम्मद के एक सहयोगी, जिससे वह बोल-बोलकर कुरआन लिखवाता था, ने कहा था कि जब वह कुरआन की आयतों को लिखता था, तो कभी-कभी मुहम्मद उसमें अपनी बात जोड़वा देता था। यह देखकर वह समझ गया कि ये आयतें किसी अल्लाह से नहीं आयी हैं और इस्लाम झूठा है, इसलिये उसने इस्लाम छोड़ दिया।
- दो गायिका बालिकाएं, जिन्होंने मुहम्मद पर व्यंग्यात्मक गीत गाये थे।
- जजिया उगाहने वाला एक मुसलमान, जिसने इस्लाम छोड़ दिया था।
- एक व्यक्ति, जिसने मुहम्मद का अपमान किया था।

हुनैन की जंग

I840 जब मुहम्मद ने मक्का जीत लिया, तो आसपास की अरबी जनजातियों को लगा कि यदि उसे रोका न गया, तो अरब का सुल्तान बन जाएगा। हवाज़िन जनजाति के अरबियों ने मलिक के नेतृत्व में उसे रोकने का निर्णय किया।

I842 मुहम्मद ने मक्का के एक समृद्ध व्यक्ति से साजोसामान और हथियार उधार लिये और फिर 12000 जिहादियों के साथ आगे बढ़ा।

I845 मुसलमान लगभग हार गये थे।

9:25 *अल्लाह ने जंग के मैदान में कई बार तुम्हारी सहायता की है और हुनैन के दिन जब तुम बड़ी भारी संख्या में थे [मुसलमानों की फौज में 12000 मुसलमान और 4000 काफिर थे], पर यह तुम्हारे किसी काम न आया [मुसलमान भयभीत हो गये और मैदान छोड़कर भाग गये], और यह धरती तुम्हारे भागने के लिये छोटी पड़ गयी, तुम पीठ दिखाकर भाग गये।*

9:26 *तब अल्लाह ने अपने रसूल और मुसलमानों पर ऊंघ (शांति) उतार दी और उसने एक अदृश्य फौज भेजी तथा काफिरों को दंडित किया। जो ईमान नहीं लाये हैं अर्थात अल्लाह में विश्वास नहीं करते हैं, उनका यही फल है। इसके बाद अल्लाह जिसकी ओर चाहे उसकी ओर हो जाए, क्योंकि अल्लाह अतिक्षमाशील और दयावान है।*

तबूक पर हमला

I894 मुहम्मद ने बैजेंटाइन साम्राज्य पर हमला करने का निर्णय लिया। उसके जिहादी जंग की तैयारी तो करने लगे, किंतु प्रचंड गर्मी के कारण उनमें कोई उत्साह नहीं था। दूसरे उपज काटने का समय भी आने वाला था। उन्हें यह भी भय सता रहा था कि बैजेंटाइनों के साथ पिछले संघर्ष में वे बुरी प्रकार पराजित हुए थे।

इस पर कुरआन की टिप्पणी थीः

9:45 *जो तुमसे इस जंग में नहीं जाने की छूट मांगेंगे, वे अल्लाह और कयामत में विश्वास नहीं करते। ये वही होंगे जिनके मन में संशय भरा होगा और जिनके मस्तिष्क में उधेड़बुन चल रही होगी। यदि उनकी जंग में जाने की मंशा होती, तो वे जंग के लिये तैयार होते। किंतु अल्लाह ऐसे लोगों के आगे बढ़ने के विरोध में था और इन्हें पीछे कर दिया। यह कहा गया, ''जो घर में बैठे हैं, उन्हीं के साथ घर बैठो।'' यदि ऐसे लोग तुम्हारे साथ मैदान में गये होते, तो ये तुम्हारी ताकत नहीं बनते, अपितु तुम्हारे बीच आपाधापी उत्पन्न कर देते और असंतोष उत्पन्न कर देते। तुममें से कुछ लोग उनकी बात को मानते भी। अल्लाह अवज्ञाकारियों को जानता है। उन्होंने पहले भी असंतोष का षडयंत्र रचा था और अब पुनः वे षडयंत्र तुम्हारे विरुद्ध षडयंत्र कर रहे हैं। यहां तक कि सत्य आ गया है, तब भी। तब भी अल्लाह का आदेश सर्वोपरि है, उन्हें यही बात अप्रिय है।*

I902 जब वे तबूक पहुंचे, तो ईसाइयों ने उन्हें जजिया कर देना प्रारंभ कर दिया। प्रति व्यक्ति लिया जाने वाला जजिया कर इसलिये था कि मुसलमानों द्वारा उन पर हमला नहीं किया जाएगा, उनकी हत्या नहीं की जाएगी या उनके साथ लूटपाट नहीं की जाएगी। जो जजिया कर देते थे, वे इस्लाम के संरक्षण में थे।

अनंतकाल तक जिहाद

I845 सभी जीतों के बाद कुछ मुसलमानों ने कहा कि जंग अर्थात जिहाद के दिन समाप्त हो चुके हैं और वे अपने हथियार भी बेचने लगे। यद्यपि जिहाद को सामान्य रूप से करते रहने वाले कर्तव्य के रूप में मान्यता दी गयी। वास्तव में कुरआन ही जिहाद अर्थात जंग की पद्धति तैयार करता हैः

9:122 *मोमिनों को एक साथ जंग अर्थात जिहाद करने नहीं निकलना चाहिए। यदि प्रत्येक गिरोह एक भाग रुका रहे, तो वे रुके हुए लोग अपने दीन का बोध करें और जब उनके लोग जिहाद करके वापस आयें, तो उन्हें आगाह करें और दीन से विचलित करने वाली बुराइयों से रक्षा करें।*

9:123 *मोमिनो! अपने आसपास के काफिरों से लड़ो और देखो कि वे तुममें कठोरता और निर्दयता पायें। जान लो कि अल्लाह उनके साथ जो दीन से फेरने वाली बुराइयों से रक्षा करते हैं।*

कुरआन का अंतिम अध्याय सूरा 9 में यह कुख्यात तलवार आयत हैः

9:5 *जब पवित्र मास बीत जाएं, काफिरों को जहां पाओ वहीं उनकी हत्या करो। उन्हें बंदी बनाओ, उनकी घेराबंदी करो और उनकी प्रतीक्षा में हर प्रकार से घात लगाकर बैठो। यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लें, नमाज पढ़ने लगें और जकात दें, तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह महान और दयावान है।*

I924 इसके बाद कुरआन तबूक में बैजेंटाइनों पर हमले के विषय पर आता है। मुसलमानों को जिहाद की पुकार पर जाना ही चाहिए। यह अनिवार्य है। यदि बैजेंटाइन पर हमला छोटा होता और इसमें सरलता से लूट का माल मिल जाता, तो मुसलमान सहज ही इसमें जाने को तैयार हो जाते। किंतु इसकी अपेक्षा, उन्होंने इसमें न जाने के लिये बहाने बनाये। एक मुसलमान का कर्त्तव्य है कि वह अपने प्राण और धन से जंग अर्थात जिहाद करने से भागे नहीं।

9:38 *हे मोमिनो, तुम्हें क्या हो गया कि जब तुमसे कहा गया, ''अल्लाह के उद्देश्य [जिहाद] में आगे बढ़ो'', तो तुम धरती के बोझ बन गये? क्या तुम्हें परलोक से अधिक यह संसार प्यारा है? इस संसार के जीवन का सुख परलोक में मिलने वाले सुख से बहुत कम है। यदि तुम जिहाद लड़ने नहीं जाओगे, तो वह ख्अल्लाह, तुम्हें पीड़ादायी दंड देगा और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को लायेगा। तुम उसे कुछ भी हानि न पहुंचा पाओगे, क्योंकि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।*

9:40 *यदि तुम अपने रसूल की सहायता नहीं करोगे, तो कोई बात नहीं, क्योंकि अल्लाह ने तब उसकी सहायता की थी, जब काफिरों ने उसे निकाल भगाया था, वह [मुहम्मद] उन व्यक्तियों में से एक था। जब वे दोनों [मुहम्मद और अबू बक्र] खोह में थे, तो रसूल ने अपने साथी से कहा, ''चिंता न करो, क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है।'' अल्लाह ने अपनी शांति उस पर भेज दी और उसे ऐसी फौज से सहायता दी, जिसे तुमने नहीं देखा। उस [अल्लाह] ने उनकी बात नीची कर दी, जो काफिर थे और अल्लाह की बात ऊंची कर दी, क्योंकि अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वज्ञ है। हथियारों से हल्के हो या मजबूत, जैसे भी हो अपने प्राण और धन से अल्लाह के उद्देश्य [जिहाद] में निकल पड़ो। यदि तुम समझ पाओ, तो यही तुम्हारे लिये उत्तम है।*

I926 जो जिहाद से भागते हैं, वे मुनाफ़िक़ अर्थात ढोंगी हैं। रसूल को ऐसे लोगों से संघर्ष करना चाहिए। ऐसे लोग निश्चित ही जहन्नुम जाएंगे।

9:73 *अरे रसूल, काफिरों और मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध जिहाद करो और उन पर कठोरता दिखाओ। उनका ठिकाना जहन्नुम होगाः जो कि एक घृणित यात्रा है।*

मुहम्मद की सशस्त्र घटनाओं का सारांश

प्973 नौ वर्ष की अवधि में मुहम्मद ने व्यक्तिगत रूप से 27 हमलों में भाग लिया। इसके अतिरिक्त 38 और जंग व हमले के अभियान थे। ऐसी 65 सशस्त्र घटनाएं हैं, जिसमें हत्याओं और मृत्युदंड को सम्मिलित नहीं किया गया है। कुल मिलाकर प्रत्येक छठे सप्ताह एक हिंसक घटना। जब वह मरा, तो उसके सामने कोई शत्रु खड़ा होने योग्य नहीं था।

अध्याय 15

24:51 किंतु जब अल्लाह और उसका रसूल ईमान वालों को अपने बीच निर्णय के लिये पुकारता है, तो उनकी प्रतिक्रिया होती है, ''हमने सुन लिया है और हम आज्ञा का पालन करेंगे।''

ईसाइयों और यहूदियों की अंतिम दशा

जब मुहम्मद ने पहली बार मक्का में उपदेश देना प्रारंभ किया, तो उसका धर्म अरबी था। तब अल्लाह की पहचान यहूदी ईश्वर जेहोवा (याहया) से हुई और उसने अपने धर्म में यहूदी तत्व डाले। जब मुहम्मद मदीना चला गया, तो वहां उसने यहूदियों से तर्क-वितर्क किया, पर उन लोगों ने यहूदी आधार पर पैगम्बर होने के उसके दावे को अस्वीकार कर दिया। तब वह यहूदियों को मिटाने लगा और इसके बाद उसने इस्लाम और यहूदी धर्म में कोई और संबंध नहीं जोड़ा। अपने अंतिम कथन में उसने यहूदियों और ईसाइयों को द्वितीय श्रेणी का राजनीतिक नागरिक बना ज़िम्मी (धिम्मी) बना दिया अर्थात उन्हें ज़िम्मी कर और जजिया कर देना था और पराजित अवस्था में रहना था। केवल उन्हीं ईसाइयों और यहूदियों की रक्षा की गयी, जिन्होंने इस्लाम स्वीकारा। यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के बारे में इस्लाम ने अपनी परिभाषा दी। इस्लाम की परिभाषा में वास्तविक ईसाई वो माने गये, जो तीन ईश्वर की अवधारणा को नकारते हैं और मुहम्मद को अंतिम पैगम्बर के रूप में स्वीकार करते हैं। वास्तविक यहूदी वो माने गये, जो अपने ईश्वर जेहोवा के अंतिम पैगम्बर के रूप में मुहम्मद को स्वीकार करते हैं। ईसाइयों और यहूदियों दोनों को अवश्य स्वीकार करना होगा कि कुरआन सच्चा ग्रंथ है और यह मानना होगा कि ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट (तौरात, बाइबिल) दूषित और त्रुटिपूर्ण हैं। कुरआन एवं ओल्ड व न्यू टेस्टामेंट में विरोधाभास काफिरों के भ्रश्टाचार का प्रमाण है।

जो यहूदी या ईसाई अपने धर्मग्रंथों को दूषित नहीं मानते, वे सभी झूठे धर्म को मानते हैं और काफिर हैं।

9:29 *उनसे जंग करो, जिन्हें ग्रंथ मिले हैं [यहूदी और ईसाई], पर अल्लाह और कयामत के दिन में विश्वास नहीं करते हैं। वे अल्लाह और उसके रसूल द्वारा हराम की गयी बातों व कार्यों को हराम नहीं मानते हैं। ईसाई और यहूदी तब तक अपने धर्म का पालन न करने पायें, जब तक कि वे पराजित न हो जाएं और जजिया कर न देने लगें और अपमानित न अनुभव करें।*

ईसाई ने उन संदेशों को छिपा दिया है, जिसमें बताया गया है कि मुहम्मद ईसा के काम को पूरा करने के लिये आएगा। ईसा को ईश्वर मानने का अर्थ है इस्लाम के अधीन आने से अस्वीकार करना। वो ईसाई काफिर और अशुद्ध हैं। यहूदियों के जैसे ही केवल वे ईसाई ही वास्तविक ईसाई हैं, जो इस्लाम के अधीन आते हैं और ज़िम्मी बनकर शरिया कानून (इस्लामी) कानून से शासित होते हैं। इस्लाम सभी धर्मों को परिभाषित करता है। इस्लाम के अतिरिक्त कोई धर्म स्वयं को परिभाषित नहीं करता है।

5:14 *हमने उनके साथ एक समझौता किया, जो कहते हैं, ''हम ईसाई हैं'', किंतु उन लोगों को जो शिक्षा दी गयी, वे उसका एक भाग भूल गये हैं [इस्लाम दावा करता है कि ईसाइयों ने ईसा के उस संदेश को दबा दिया कि मुहम्मद अंतिम*

पैगम्बर होगा], इसलिये हमने [अल्लाह] उनमें वैर और घृणा उत्पन्न कर दिया और यह वैर व घृणा कयामत के दिन तक चलता रहेगा। अंत में अल्लाह उन्हें बतायेगा कि उन्होंने क्या किया है।

5:15 *हे ग्रंथों के लोगो, हमारा रसूल तुम्हारे पास वह स्पष्ट करने आया है, जो तुमने उन ग्रंथों में से छिपा दिया है और बहुत सी ऐसी बातें बताने आया है, जो अब आवश्यक हैं। अब तुम लोगों के पास अल्लाह की ओर से नया प्रकाश और एक स्पष्ट पुस्तक है। वह इस पुस्तक का प्रयोग उन सभी को मार्ग दिखाने में करेगा, जो शांति के पथ की ओर अल्लाह की कृपा पाना चाहते हैं। वह तुम लोगों को अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर लायेगा और अल्लाह के आदेश से तुम लोगों को सीधे पथ पर ले जाएगा।*

5:17 *निश्चित वे लोग काफिर हैं, जो कहते हैं, ''मैरी का पुत्र वही मसीहा ही अल्लाह है।'' रसूल उनसे कह दे: यदि अल्लाह मैरी के पुत्र उस मसीहा, उसकी मां और धरती पर जो कुछ है उसे नष्ट करना चाहे, तो कौन है जिसमें उसे रोकने की सामर्थ्य है? आकाश और धरती और इनके बीच जो भी कुछ है, उन सबमें अल्लाह का ही प्रभुत्व है। वह जो चाहता है, रचता है और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।*

5:72 *काफिर कहते हैं, ''मैरी का पुत्र ईसा मसीहा है'', जबकि उस मसीहा ने कहा था, ''हे बनू इजराइल के बच्चों, मेरे स्वामी और अपने स्वामी अल्लाह की इबादत करो।'' जो कोई भी अन्य ईश्वरों को अल्लाह के बराबर लायेगा, उसे अल्लाह जन्नत में प्रवेश करने से रोक देगा और उसका ठिकाना जहन्नुम की आग होगा। अवज्ञाकारियों को कहीं से सहायता नहीं मिलेगी। वे निश्चित ही अल्लाह की निंदा कर रहे होते हैं, जो कहते हैं, ''अल्लाह तीन ईश्वरों [त्रयी] में तीसरा है'', चूंकि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है और इसलिये यदि वे ऐसा कहने से स्वयं को नहीं रोकेंगे, तो उन काफिरों पर दुखदायी दंड आ गिरेगा। ऐसे लोग अल्लाह की ओर क्यों नहीं जाते, उससे क्षमा याचना क्यों नहीं करते? क्योंकि अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।*

5:75 *मैरी का पुत्र वह मसीहा केवल एक पैगम्बर है। उससे पहले अन्य पैगम्बर आये और चले गये और उसकी मां एक पवित्र स्त्री थी; दोनों भोजन करते थे। देखो अल्लाह ने कैसे अपना चिह्न उन पर स्पष्ट कर दिया है; तब भी देखो वे सत्य से मुंह मोड़ रहे हैं। रसूल उनसे कह दे: क्या तुम अल्लाह को छोड़कर किसी ऐसे की पूजा करोगे, जो न तो लाभ कर सकता है और न ही हानि? अल्लाह सब सुन रहा है और सब जान रहा है।*

अध्याय 16

4:170 लोगो! तुम्हारे स्वामी की ओर से सत्य लेकर रसूल तुम्हारे पास आया है। यदि तुम विश्वास करोगे, तो तुम्हारे लिये अच्छा होगा।

शरिया इस्लाम का कानून है और यह कुरआन, हदीस और सीरा पर आधारित है। इस्लाम का राजनीतिक लक्ष्य सभी विधिक संहिताओं व संविधानों के स्थान पर शरिया लागू करना है। इस्लाम का कहना है कि अन्य सभी संहिताएं और संविधान मानवनिर्मित हैं, जबकि शरिया सीधे अल्लाह से आया है। शरिया का अधिकांश भाग मुहम्मद की सुन्नत (मुहम्मद के जीवन के उदाहरणों) पर आधारित है। पर यहां कुछ ऐसी आयतें दी जा रही हैं, जो दर्षाती हैं कि शरिया का निर्माण कैसे हुआ।

शादी/तलाक/संभोग

मुहम्मद ने मक्का में अपने अंतिम भाषण में स्त्रियों के बारे में इस आयत के बिंदुओं को बार-बार दोहराया।

4:34 *अल्लाह ने पुरुषों को स्त्रियों से श्रेष्ठ बनाया है, क्योंकि पुरुष उनका साथ देने के लिये अपना धन व्यय करता है। इसलिये सदाचारी स्त्रियां पुरुषों के प्रति आज्ञाकारी होती हैं और अपने गुप्त अंगों को बचाकर रखती हैं, क्योंकि अल्लाह ने उन अंगों को बचाकर रखा है। जहां तक उन औरतों की बात है, जिन्हें तुम समझते हो कि विद्रोह करेंगी, तो उन्हें पहले धिक्कारो और फिर उन्हें अपने बिस्तर से दूर कर दो और इसके बाद उनकी पिटाई करो। किंतु यदि इसके बाद वे तुम्हारी आज्ञा मानने लगती हैं, तो आगे कुछ न करो; निश्चित ही अल्लाह उच्च और महान है!*

4:35 *यदि तुम्हें भय है कि तुम्हारे और बीवी के बीच अनबन हो गयी है, तो एक मध्यस्थ शौहर के परिवार से और एक मध्यस्थ बीवी के परिवार से नियुक्त करो। यदि वे दोनों मेलमिलाप करना चाहेंगे, तो अल्लाह उन दोनों के बीच मेलमिलाप करा देगा। वास्तव में, अल्लाह सब जानने वाला और बुद्धिमान है!*

24:30 *मोमिन आदमियों से कहा कि वे उन सब की ओर न देखें, जो उन्हें लुभाता हो और अपनी कामातुर इच्छाओं को नियंत्रण में रखें। इस प्रकार वे और अधिक शुद्ध होंगे। अल्लाह सब जानता है कि वे क्या कर रहे हैं। और मोमिन औरतों से कहो कि उन्हें अपनी दृष्टि नीची रखनी चाहिए और अपने गुप्तांगों की रक्षा करनी चाहिए तथा उन्हें सामान्य रूप से दिखने वाले रूप के अतिरिक्त अपनी सुंदरता और श्रृंगार का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। उन्हें अपने नकाब से अपने स्तनों को ढंककर रखना चाहिए और उनका श्रृंगार केवल उनके शौहर, ससुर, बेटों, दत्तक पुत्रों, भाइयों, भतीजों अथवा उनकी नौकरानियों, हिजड़ा गुलामों और उन बच्चों को ही दिखना चाहिए, जो अबोध हों और औरत की नग्नता उनके मन में न आती हो। और उन्हें अपने पैर ऐसे न पटकने दो कि उनके छिपे गहने ख्यायल आदि, का पता चले। मोमिनो, तुम सभी अल्लाह की ओर बढ़ो और प्रायश्चित करो कि तुम्हारा भला हो।*

24:32 *और अपने में से अविवाहित आदमियों और औरतों या अच्छे पुरुष या महिला सेवक से शादी करो। और यदि वे निर्धन हैं, तो अल्लाह अपने माल में उनको माल देगा। अल्लाह माल से भरा हुआ है और सब जानता है। जिनमें शादी करने की सामर्थ्य नहीं है, उन्हें तब तक कुंवारा रहने दो, जब तक कि अल्लाह अपने माल में से उनकी आवश्यकताएं न पूरी कर दे। जहां तक तुम्हारे गुलामों की बात है, तो उनमें से जो स्वतंत्र होना चाहें, तो यदि तुम उनमें अच्छाई देखो तो उन्हें स्वतंत्र कर दो और अल्लाह ने जो धन तुम्हें दिया है उसमें से कुछ उन्हें दो। यदि तुम्हारी महिला गुलाम शुद्ध रहना चाहें, तो इस संसार में धन कमाने के लिये उन्हें वेश्यावृत्ति में मत डालो। फिर भी यदि वे ऐसा करने को बाध्य की जाती हैं, तो वास्तव में अल्लाह ही उन पर दया दिखायेगा।*

2:221 *तुम तक किसी मूर्तिपूजक महिला से शादी नहीं करोगे, जब तक कि वह इस्लाम स्वीकार न कर ले। एक मूर्तिपूजक से श्रेष्ठ वह यौन-दासी अर्थात सेक्स-स्लेव है, जो मुसलमान है, यद्यपि वह मूर्तिपूजक तुम्हें अधिक आनंद दे सकती है। काफिरों से अपनी बेटी की शादी तब तक न करो, जब तक कि वे इस्लाम स्वीकार न कर लें, क्योंकि एक दास जो मुसलमान है, वह मूर्तिपूजक से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, यद्यपि वह काफिर आदमी तुम्हें अधिक आनंद दे सकता है। ये बातें तुम्हें जहन्नुम की आग की ओर आकर्षित करती हैं, पर अल्लाह अपनी इच्छा से तुम्हें क्षमाशीलता तुम्हें जन्नत की ओर बुला रहा है। उसने अपनी आयतों को मानवजाति के समक्ष स्पष्ट कर दिया है, जिससे कि वे स्मरण रख सकें।*

अगली आयत किसी व्यक्ति और उसकी बीवी के बीच शारीरिक संबंधों का आधार है।

2:223 *तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं: जैसे चाहो अपने खेतों में जाओ, जोतो, किंतु उससे पहले कुछ अच्छे काम करो और अल्लाह से डरो। ध्यान में रखे कि तुम उसी के पास लौटकर जाओगे। मोमिनों को यह शुभ समाचार दे दो।*

4:15 *यदि तुम्हारी किसी औरत पर व्यभिचार अथवा विवाहेत्तर संबंध का आरोप लगे, तो अपने में से उसके विरुद्ध चार गवाह लाओ। यदि वे अपना अपराध स्वीकार कर लें, तो उन्हें तक कक्ष में बंद करके रखो, जब तक कि वे मर न जाएं या अल्लाह उनके लिये कोई मार्ग न बना दे। यदि दो मर्द आपस में संबंध स्थापित करें अर्थात समलैंगिक मैथुन करें, तो दोनों को दंडित करो। यदि वे क्षमा याचना करें और अपने प्रवृत्ति ठीक कर लें, तो उन्हें अकेला छोड़ दो, क्योंकि अल्लाह क्षमाशील और दयावान है!*

4:17 *अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा, जो अनजाने में पाप कर देते हैं और फिर गलती का भान होने पर शीघ्र ही पश्चाताप करते हैं; अल्लाह ऐसे लोगों पर दया दिखाता है, क्योंकि अल्लाह सब जानता है और तत्वज्ञ है! किंतु जो बुराई करते जाते हैं और जब मरने का समय आता है, तो कहते हैं, ''अब मैं वास्तव में अल्लाह की ओर हूं!'' अथवा जो काफिर हैं, उन्हें कभी क्षमा नहीं किया जाएगा और ऐसे लोगों के लिये एक पीड़ादायी दंड रखा हुआ है।*

4:19 *मोमिनो! तुम्हें इसकी अनुमति नहीं है कि तुम अपने परिवार के किसी मृत सदस्य की बीवियों की इच्छा के विरुद्ध उनके उत्तराधिकारी बन जाओ अथवा उनको दूसरी शादी करने से इसलिये न रोको कि उनको जो दिया है, उसमें से कुछ मार लो, जब तक कि वे निंदनीय अशिष्टता न करें। उनके साथ उदारतापूर्वक व्यवहार करो, क्योंकि यदि तुम उनसे घृणा करोगे, तो यह भी हो सकता है कि तुम उससे घृणा कर रहे हो, जिसमें अल्लाह बहुत सी भलाई रखी है।*

4:20 *यदि तुम किसी बीवी के स्थान पर दूसरी बीवी लाना चाहते हो, तो तुमने उसे जो मेहर दी है, उसमें से कुछ भी न छीनो। क्या तुम चाहते हो कि उस बीवी पर आरोप लगाकर और खुला पाप करके वह धन लो? तुम उस मेहर को उससे छीन भी कैसे सकते हो, जबकि तुम उसके साथ शारीरिक संबंध बना चुके हो और शादी के समय उससे एक समझौता कर चुके हो?*

विधिक

5:38 *जहां तक चोरों का प्रश्न है, तो यह चाहे औरत हो या आदमी, उनके अपराध के बदले उनके हाथ काट दो। यह स्वयं अल्लाह की ओर से चेतावनी देने के लिये दंड है। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वज्ञ है। किंतु जो अपनी दुष्टता पर पश्चाताप करे और अपने में सुधार करे, तो अल्लाह उनकी क्षमा याचना स्वीकार कर लेगा, क्योंकि अल्लाह क्षमाशील व दयावान है। क्या तुम्हें नहीं पता कि आकाशों और धरती पर अल्लाह का ही प्रभुत्व है? वह जिसे चाहता है, दंडित करता है और जिसे चाहता है उसे क्षमा कर देता है। अल्लाह सबकुछ कर सकता है।*

2:178 *मोमिनो! हत्या के प्रकरण में बदला निर्धारित है: मुक्त आदमी का बदला मुक्त आदमी से, गुलाम (दास) का बदला गुलाम से, स्त्री का बदला स्त्री से। यदि मारे गये व्यक्ति का भाई आरोपी को क्षमादान दे देता है, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण करना चाहिए। मारे गये व्यक्ति के भाई को क्षतिपूर्ति ख्ल्ड मनी, के रूप में उससे धन दिलाना चाहिए। ये तुम्हारे स्वामी की ओर से दयापूर्ण सुविधा है। जो क्षमा किये जाने के बाद भी अपराध करेगा, उसका अंत भयानक होगा। और हे समझ वालो, इस बदला के कानून में तुम्हारे लिये जीवन है, जिससे कि तुम अपने को अपराध से बचा सको।*

2:180 *यह आदेश दिया जाता है कि जब तुम मृत्यु के निकट हो, तो अपनी धन-संपत्ति अपने माता-पिता और निकट संबंधियों में समान रूप से बांट दो। अल्लाह से डरने वाले का यह कर्त्तव्य है। वसीयत सुनने के बाद जो इसे बदल देता है, वह अपराधी होगा, क्योंकि अल्लाह सब सुन रहा है और सब जान रहा है। किंतु यदि किसी को वसीयत करने वाले से गलती करने या पक्षपात करने का भय है, तो उसने बीच में उसमें सुधार करवा दिया है, तो वह दोशी नहीं माना जाएगा। अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।*

4:92 *मोमिन को किसी मुसलमान की हत्या नहीं करनी चाहिए, हां किसी दुर्घटनावश ऐसा हो जाए, तो बात अलग है। फिर भी कोई यदि दुर्घटनावश अर्थात चूक से किसी मुसलमान की हत्या कर दे, तो उसे एक ईमान वाले अर्थात मुसलमान गुलाम मुक्त करना होगा और मारे गये मुसलमान के परिवार वालों को ब्लड-मनी देनी होगी, यदि वह परिवार ब्लड-मनी को जकात मानकर छोड़ दे, तो बात दूसरी है। यदि मारा गया व्यक्ति ऐसी जाति से आता है, जिससे तुम्हारी जंग चलती हो, तो उसके बदले एक ईमान वाले गुलाम को मुक्त कर देना भर पर्याप्त होगा। किंतु यदि मारा गया मुसलमान ऐसे परिवार से आता हो, जिसके साथ तुम्हारा गठबंधन है, तो उसके परिवार को ब्लड-मनी चुकायी जानी चाहिए और साथ ही साथ एक ईमान वाले गुलाम को मुक्त किया जाना चाहिए। जो यह कर पाने में सक्षम न हों, उन्हें सीधे दो माह तक रोजा रखना होगा। यह दंड अल्लाह द्वारा निर्धारित किया गया है। अल्लाह सब जानता है और तत्वज्ञ है!*

4:93 *जो जानबूझकर किसी मुसलमान की हत्या करते हैं, उनका दंड जहन्नुम होगा, जहां वे अनंत काल तक पड़े रहेंगे। उन पर अल्लाह का कोप होगा, अल्लाह उन्हें धिक्कारेगा और वे भयानक यातना पायेंगे।*